चेतना विकास मूल्य शिक्षा

विनिमय

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद वांग्मय से एक संकलन

Version 1

३० अप्रैल २०२०

श्रद्धेय श्री ए. नागराज जी द्वारा प्रणेत मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) में से शब्दों के संदर्भों के खोजने के क्रम में यह “विनिमय” शब्द के संदर्भों का संकलन है। यदि यहाँ लिखे हुए और मध्यस्थ दर्शन के मूल वाङ्ग्मय में कोई अंतर मिले तो मूल वाङ्ग्मय को ही सही माना जाए। यहाँ लिखे हुए में त्रुटियों के सुधार और इसको और उपयोगी बनाने हेतु भागीदारी करने के लिए रोशनी साहू (sahuroshani@gmail.com) से संपर्क करें।

Version 0.1	Draft version created	Roshani Sahu, 30/04/2020

विनिमय की परिभाषा

- **विनिमय –** लाभ हानि मुक्त विधि से उपयोगिता मूल्य के आधार पर श्रम मूल्य का आदान– प्रदान।
  – श्रम मूल्य के आधार पर वस्तुओं का आदान– प्रदान।
- **विनिमय कोष –** परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था के अंगभूत कार्यरत विनिमय कोष जिसमें लाभ हानिमुक्त श्रम मूल्य के आधार पर विनिमय करने की व्यवस्था।
- **विनिमय विधि –** श्रम नियोजन श्रम मूल्यों को उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकित वस्तु का हस्तांतरण वस्तु विनिमय। **(पृष्ठ नंबर: 172)**

(परिभाषा संहिता, संस्करण : तृतीय 2012, मुद्रण: 14 जनवरी 2016)

अनुक्रमणिका

स्वास्थ्य और इससे संबन्धित शब्द को लेकर मध्यस्थ दर्शन वांग्मय में आये सन्दर्भों को निम्न क्रम से संकलित किया गया है.

1.	मानव व्यवहार दर्शन	४
2.	मानव कर्म दर्शन	६
3.	मानव अभ्यास दर्शन	७
4.	मानव अनुभव दर्शन	१४
5.	समाधानात्मक भौतिकवाद	१५
6.	व्यवहारात्मक जनवाद	२३
7.	अनुभवात्मक अध्यात्मवाद	३१
8.	व्यवहारवादी समाजशास्त्र	३७
9.	आवर्तनशील अर्थशास्त्र	५१
10.	मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान	७७
11.	मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या	८४
12.	जीवन विद्या – एक परिचय	१०७
13.	विकल्प एवं अध्ययन बिन्दु	१०८
14.	मानवीय आचरण सूत्र	११०
15.	संवाद – भाग १	१११
16.	संवाद – भाग २	११२
17.	10 सोपानीय व्यवस्था के अंतर्गत उत्पादन कार्य व्यवस्था	११७

मानव व्यवहार दर्शन

(संस्करण: 2011, मुद्रण: 2015)

- जागृत मानव परंपरा में राज्य का स्वरूप अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र अध्ययन से और आचरण से व्याख्या होने के आधार पर विधि को पहचानने के मुख्य रूप से पाँच मुद्दे पाए गए हैं। (१) मानवीय शिक्षा संस्कार, (२) न्याय–सुरक्षा, (३) उत्पादन कार्य, (४) **विनिमय** कोष, (५) स्वास्थ्य–संयम के रूप में गण्य हैं।

  राज्य प्रक्रिया में उक्त पाँचों व्यवस्थाएं सार्वभौमिकता के अर्थ में ही सार्थक होना पाया जाता है। मानवीय शिक्षा–संस्कार की सफलता अर्थ–बोध होने के रूप में है। न्याय–सुरक्षा की सफलता संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन पूर्वक उभय–तृप्ति के रूप में सार्थक होना पाया जाता है। उत्पादन–कार्य हर परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन के रूप में, समृद्धि के अर्थ में सार्थक होना पाया जाता है। **विनिमय–कोष** श्रम–मूल्य के पहचान सहित, श्रम **विनिमय** पद्धति से सार्थक होता है। और स्वास्थ्य–संयम मानव–परंपरा में जीवन जागृति को प्रमाणित करने योग्य शरीर की स्थिति–गति के रूप में सार्थक होता है।

  यह सब मानव सहज जागृति के अक्षुण्णता का द्योतक है अथवा सार्वभौम व्यवस्था, अखंड समाज और उसकी अक्षुण्णता का द्योतक है। यही राज्य वैभव का स्वरूप है। इस विधि से हर परिवार समाधान–समृद्धि पूर्वक जीना होता है। **(अध्याय:16, पृष्ठ नंबर: 130–131)**

- राष्ट्रीय स्तर पर राज्य–नीति निम्न छः दृष्टिकोण से निर्धारित की जानी चाहिए तथा उसका लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। इन बिंदुओं के आधार पर मानव के सह–अस्तित्व, जागृति तथा समृद्धि की दृष्टि से व्यवस्था तथा स्वानुशासन का सामान्यीकरण महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है।

  1. राष्ट्रीय सुरक्षा, सह–अस्तित्व सिद्धांत से।
  2. आर्थिक सुरक्षा, परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन सिद्धांत आवर्तनशील विधि से।
  3. उत्पादन सुरक्षा, प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के सिद्धांत से।
  4. **विनिमय सुरक्षा**, श्रम नियोजन व **विनिमय** सिद्धांत से।
  5. विद्या–अध्ययन संस्कार सुरक्षा, सह–अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान विधि से।
  6. नैतिक सुरक्षा – तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा से। **(अध्याय: 16, पृष्ठ नंबर: 133–134)**

- **विनिमय सुरक्षा**: – उत्पादित वस्तुओं को श्रम मूल्य मूल्यांकन सहित दूसरों से प्राप्त कराने वाले कार्य की **विनिमय** संज्ञा है।

  विनिमय सुरक्षा के लिए निम्न आधार पर नीति निर्धारण होना चाहिए।

  1) लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** हेतु सह–अस्तित्ववादी दृष्टि व **विनिमय** पद्धति को प्रोत्साहित करने वाली नीति का निर्धारण करना।

  2) श्रम मूल्य और श्रम **विनिमय** आधारित **विनिमय** पद्धति को विकसित करना।

  अंतर्राष्ट्रीय **विनिमय** लाभ–हानि रहित होना आवश्यक है, जो वस्तु व श्रम मूल्य के रूप में ही सफल है। **(अध्याय:16, पृष्ठ नंबर:136)**

मानव कर्म दर्शन

(संस्करण: 2010, मुद्रण:2017)

- मानवीयता पूर्ण आचरण व न्याय पूर्वक व्यवहार के बिना परस्परता में न्याय सम्मत **विनिमय** व न्याय सम्मत हित होना संभव नहीं है।

  न्याय सम्मत **विनिमय** और हित ही समृद्धि है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 11)**
- कर्माधार पर निर्धारित विधि–विधान सम्पन्न व्यवस्था–प्रक्रिया में स्व–पर लाभालाभ मुक्त **विनिमय** होता है। यह वर्ग भावना से मुक्त नहीं है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर: 16)**
- समझदारी के साथ मानव का स्वास्थ्य संयम विधा में भागीदारी करना एक स्वभाविक प्रक्रिया है। इसके साथ ही शिक्षा संस्कार, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य, **विनिमय कार्यों** में भागीदारी करना सभी समझदार मानव का कर्त्तव्य एवं दायित्व हो पाता है। समझदारी के साथ कर्त्तव्य और दायित्व स्वीकृति सहज रूप में प्रमाणित हो जाता है। समझदारी के अनन्तर अर्थात् सहअस्तित्ववादी ज्ञान, विज्ञान, विवेक संपन्नता के उपरान्त दायित्व और कर्त्तव्य को स्वीकारने में देरी होती ही नहीं, यह स्वयं स्फूर्त विधि से प्रमाणित होती, प्रगट होती है। इन सबको भली प्रकार से परीक्षण, निरीक्षण कर निश्चित किया गया है। हर नर–नारी इसको परीक्षण पूर्वक सत्यापित कर सकते हैं, यह मानव परम्परा के लिए महत्वपूर्ण प्रेरणा रही है। **(अध्याय:18, पृष्ठ नंबर: 149)**

मानव अभ्यास दर्शन

(संस्करण: द्वितीय, मुद्रण: 2018)

- संबंध सीमा ही परिवार समाज एवं व्यवस्था है। जन्म, जीवन, व्यवहार विशिष्ट, शिष्ट, नीति एवं उत्पादन **विनिमय** वैभव से संबंध प्रसिद्ध हैं।

  1) शरीर संबंध = माता–पिता एवं भाई–बहन, पति–पत्नि, पुत्र–पुत्री
  2) जीवन–जीवन संबंध = गुरु–शिष्य, जागृत सभी संबंध
  3) शिष्ट–शिष्ट संबंध = मित्र, साथी–सहयोगी
  4) नीति–नीति संबंध = विधि, व्यवस्था, संस्कृति एवं सभ्यता
  5) उत्पादन–उत्पादन संबंध = क्षमता, अवसर, साधन एवं वितरण

  संबंधों में निहित मूल्यवत्तावश ही उसकी अक्षुण्णता पाई जाती है। यही अखंड समाज की अक्षुण्णता भी है।

  (अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 22–23)

- श्रम नियोजन, श्रम **विनिमय**–पद्धति से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सेवा व वस्तु को दूसरी सेवा व वस्तु में परिवर्तित करने की सुगमता होती है, जिसमें शोषण, वंचना, प्रवंचना एवं स्तेय की संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं जो अपराध परम्परा का वृहद् भाग है। ये संभावनाएं जागृति पूर्वक मानवकृत वातावरण, प्रधानत: व्यवस्था पद्धति एवं शिक्षा से ही निर्मित होती है। **(अध्याय:11, पृष्ठ नंबर: 56)**
- **लाभ उत्पादन नहीं है।**
  कम प्रदाय के बदले में अधिक वस्तु व सेवा को पाना लाभ है यही शोषण का प्रत्यक्ष रूप है। जबकि श्रम नियोजन का परिणाम ही उत्पादन है जिसमें उपयोगिता एवं सुन्दरता मूल्य सिद्ध होता है। श्रम नियोजन से ही समृद्धि होती है न कि लाभ से क्योंकि मुद्रा शोषण पर आधारित वाणिज्य में लाभ–हानि की संभावनाएं होती है। यह दोनों स्थिति उत्पादन या उत्पादन के लिये सहायक नहीं है। वाणिज्य कर्म शुद्धत: **विनिमय** के अर्थ में उत्पादन या उत्पादन के लिए सहायक सिद्ध होता है न कि लाभ के अर्थ में। उत्पादन प्रयास आवश्यकता पर आधारित होती है, जबकि लाभाकांक्षित वाणिज्य कर्म मांग पर आधारित होता है। लाभाकांक्षी वाणिज्य पद्धति में कृत्रिम अभाव की स्थिति का निर्माण किया जाता है। अभाव की कृत्रिमता के लिए वाणिज्य साधनों व वस्तुओं का शेखरीकरण (संग्रह पूर्वक वस्तुओं को अदृश्य करना) कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया का मूल उद्देश्य उपभोक्ताओं में वस्तु सुलभता के संदर्भ में संदिग्धता बनाए रखना होता है जिससे अधिक लाभ अर्जित किया जा सके। वस्तुओं की अदृशयीकरण प्रक्रिया पूंजीवाद व्यवस्था पर आधारित होती है जो स्पष्ट है। इसका निराकरण केवल श्रम नियोजन एवं श्रम नियोजन एवं श्रम **विनिमय** पद्धति का अनुसरण है। "लाभ संग्रह होता है न कि उत्पादन।" लाभ निर्मित पूंजी ही वस्तु विनियम

में असंतुलन का प्रधान कारण है। पूंजी अधिक लाभ से निर्मित होती है जो प्रत्यक्षत: शोषण है और यही अधिक लाभ के लिये नियोजित होती है। वस्तुओं की कृत्रिम अदृश्यता केवल पूंजीवादी व्यवस्था में ही होती है। पूंजीवादी वाणिज्य भी वर्गीयता का सहायक है न कि समाज का व सामाजिकता का। सामाजिक वाणिज्य प्रक्रिया के लिए **विनिमय** पद्धति ही शरण्य है। साम्यवादी विधि से भी अतिरिक्त मूल्य सिद्धान्तवश लाभ मुक्ति की कामना को सर्वाधिक प्रकट करता हुआ साम्यवादी देशगत व्यक्तियों का शोषण न होने के लिए बहुत कुछ सूझबूझ प्रस्तुत कराते हुए देशगत लाभ या राष्ट्रगत लाभ के लिए प्रतिबद्ध निष्ठान्वित होना ही पड़ा। इसी के साथ सामान्य जनता क्षमता के अनुसार कार्य करें व आवश्यकतानुसार भोग करें। इस आश्वासन के आधार पर व्यवस्था संभव नहीं हुई, इसलिए साम्यवादी व्यवस्था परभावित हुआ।

उत्पादन का सीधा संबंध **विनिमय** कार्य व स्वास्थ्य संयम कार्य, शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य संरक्षण से हैं। इन पाँचों की एकसूत्रता उत्पादन के लिये अनिवार्य है। यही व्यवस्था का आद्यान्त कार्यक्रम है। मूल्य–विहीन संबंध नहीं है। संबंध विहीन व्यवस्था एवं व्यवहार नहीं है। उत्पादन के संबंध–निर्वाह में जो न्यूनताएं हैं वही लाभोत्पादक वाणिज्य के जन्म का कारण है। यह उस समय तक रहेगा जब तक उत्पादन संबंध का निर्वाह एकसूत्रतापूर्वक पूर्ण न हो जाय।

विनिमय के अर्थ में वाणिज्य चरितार्थ होता है न कि सुविधा–संग्रह के अर्थ में। **विनिमय** उत्पादन की सहायक प्रक्रिया है। संग्रहवादी वाणिज्य उत्पादन में सहायक सिद्ध नहीं हुआ है अपितु उत्पादन में अनेकानेक विघ्नों का निर्माण किया है। यही पद्धति उत्पादन में असंतुलन का कारण सिद्ध हुई है। इसका साक्ष्य उत्पादन में विमनता, उदासीनता है। साथ ही, संग्रह सुविधा प्रवृत्ति में विवशता भी है।

उत्पादन का सुगमतापूर्वक वांछित वस्तु व सेवा में परिवर्तित होना ही **विनिमय** की चरितार्थता है। लाभ मूलक वाणिज्य प्रक्रिया उसके विपरीत स्थिति का निर्माण करती है। यही सत्यता मानव को श्रम–**विनिमय**–पद्धति को सर्वसुलभ बनाने के लिये प्रेरित है।

उत्पादन की भागीदारी के लिये श्रम नियोजन आवश्यक है। श्रम नियोजन पूर्वक ही मानव समृद्ध होता है। मानव में श्रम निपुणता, कुशलता एवं पांडित्य के रूप में समझदारी होना ज्ञातव्य है जो चैतन्य क्रिया का अधिकार है। इसी अधिकारवश जड़–प्रकृति की यंत्रिकता में वह परिमार्जन और परिणाम प्रदान करता है फलत: उपयोगिता एवं सुन्दरता प्रत्यक्ष होती है। चैतन्य क्रिया की यही क्षमता परिवारगत आवश्यकता से अधिक उत्पादन एवं समृद्धि को प्रकट करती है। चैतन्य जीवन ही अमर है। शरीर का जन्म और मृत्यु घटना है। इस तथ्य को जानने वाला भी चैतन्य इकाई ही है। मानव में श्रम का मूल रूप भी चैतन्य–क्रिया ही है। इस चैतन्य–क्रिया में जो संवेदनशील एवं संज्ञानशील क्षमता है, वही स्थापित मूल्यों का वहन, शिष्ट मूल्यों का प्रकटन और उत्पादित वस्तु मूल्यों का मूल्यांकन करता है और प्रमाणित होना पाया जाता है। सामाजिक जीवन में उत्पादन, उपयोग, सदुपयोग एवं

विनिमय अविभाज्य अंग है। यही तथ्य जीवन में एकसूत्रता, तारतम्यता, अनन्यता और एकात्मकता को स्थापित करने के लिये प्रेरित करता है। यही स्थापना शुद्धतः व्यवस्था है। **(अध्याय:15, पृष्ठ नंबर: 63–65)**

- **विनिमय क्रिया जागृत मानव परम्परा में अनिवार्य प्रक्रिया है**
  उत्पादन को दूसरी वस्तु व सेवा में बदलने के लिये अपनाई गई सुगम पद्धति ही **विनिमय** है, जिसकी सफलता के लिये प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक आवश्यकीय वस्तु का सहज–सुलभ होने के लिये केन्द्रों का होना आवश्यक है। उत्पादन–कार्य जितना महत्वपूर्ण है उतना ही उसके सहायक तत्व संरक्षण भी महत्वपूर्ण हैं। संरक्षण के अभाव में सशंकतावश, साधनों के अभाव में उत्पादन सामग्रियों की असंपूर्णतावश, शिक्षा के अभाव में अक्षमतावश, **विनिमय** के अभाव में दूसरी वस्तु व सेवा में परिवर्तित करने के विध्नवश उत्पादन में क्षति होती है। व्यवस्था का प्रत्यक्ष रूप में से उत्पादन एवं उसके सहायक तत्वों को सर्वसुलभ बनाना है। विधि का शुद्ध रूप ही सामाजिक मूल्यों यथा जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य व शिष्ट मूल्य का संरक्षण एवं संवर्धन है। ऐसी शुद्ध व्यवस्था के अंगभूत श्रम नियोजन एवं श्रम–**विनिमय**–पद्धति द्वारा सफल होने की पूर्ण संभावना है क्योंकि प्रत्येक मानव शोषण के विरुद्ध है। प्रत्येक मानव न्याय का याचक है। प्रत्येक मानव सही करना चाहता है। प्रत्येक मानव भौतिक समृद्धि एवं बौद्धिक समाधान से संपन्न होना चाहता है। साथ ही प्रत्येक वस्तु में निश्चित श्रम नियोजन होता है। प्रत्येक वस्तु का किसी एक वस्तु की अपेक्षा में श्रम मूल्य निर्धारण उपयोगिता मूल्य के आधार पर होता है। प्रत्येक वस्तु को प्रत्येक स्थान पर सर्वसुलभ बना देना सहज है। **(अध्याय:16, पृष्ठ नंबर: 65)**
- सामाजिकता औपचारिक तथ्य नहीं है अपितु जागृति पूर्वक जीने की शैली है। वह केवल वास्तविकता पर आधारित क्रियाकलाप है। वास्तविकताएं ही नियति–क्रम, नियति क्रम ही विकास, विकास ही अभ्युदय, अभ्युदय ही व्यवहारिकता एवं व्यवहारिकता ही सामाजिकता है। व्यवहार संस्कृति, सभ्यता और विधि–व्यवस्था का योगफल है। मानव जीवन का आद्यान्त कार्यक्रम इसी चतुर्दिशा में वैभव है। विधि अनुभव को, संस्कृति विचार को, सभ्यता व्यवहार को, व्यवस्था उत्पादन **विनिमय** सहित पाँचों आयामों को स्पष्ट करती है। यह प्रमाण सिद्ध है। यही "मूल्य–त्रय" को प्रकट करता है। **(अध्याय:17, पृष्ठ नंबर: 67)**
- शिक्षा ही मानव जीवन एवं जीवन के कार्यक्रम को विश्लेषण व व्याख्यापूर्वक बोधगम्य कराने के लिये एकमात्र सूत्र है। प्रधानतः मानव को शिष्टता विशिष्टता से पूर्णतः प्रबोधन करा देना ही शिक्षा है। साथ ही उत्पादन–**विनिमय** कुशलता एवं निपुणता–योग्य योग्यता का निर्माण करना ही शिक्षण की चरितार्थता है। **(अध्याय:18, पृष्ठ नंबर: 69)**
- "चारों आयामों की परितृप्ति ही सुख, शांति, संतोष एवं आनंद है।" यही मानव की चिरआकाँक्षा है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन अर्थात् समृद्धि में उत्पादन–**विनिमय** आयाम की परितृप्ति; शिष्टता सहित आचरण से व्यवहारिक आयाम परितृप्ति; निपुणता, कुशलता एवं पांडित्यपूर्ण समाधान से वैचारिक आयाम की तृप्ति; पूर्ण मूल्य एवं स्थिति सत्य में निरंतरता ही अनुभवात्मक आयाम की तृप्ति है। **(अध्याय:22, पृष्ठ नंबर:81)**

- “जागृति सहज अनुमान क्षमता मानव की विशालता को और अनुभव ही पूर्णता को स्पष्ट करता है।” सतर्कता एवं सजगता मानव–जीवन में प्रकट होने वाली क्रिया पूर्णताएं है। चैतन्य क्रिया अग्रिम रूप में क्रिया पूर्णता एवं आचरण पूर्णता के लिये तृषित एवं जिज्ञासापूर्वक अपनी विशालता को अनुमान के रूप में प्रकट करती है। ज्ञानावस्था की इकाई का मूल लक्ष्य ही पूर्णता है। पूर्णता के बिना ज्ञानावस्था की इकाईयाँ आश्वस्त एवं विश्वस्त नहीं है। उत्पादन एवं व्यवहार में ही क्रमश: समाधान एवं अनुभव चरितार्थ हुआ है। प्रयोग एवं उत्पादन में ही समस्या एवं समाधान है। व्यवहार एवं आचरण में ही सामाजिक मूल्यों का अनुभव होने का परिचय सिद्ध होता है। आशा, विचार, इच्छा समाधान के लिए ही प्रयोग व उत्पादन–**विनिमय**शील है। इच्छा एवं संकल्प अनुमानपूर्वक अनुभव के लिए प्रवर्तनशील है। आचरण के मूल में मूल्यों का होना पाया जाता है। स्वभाव ही आचरण में अभिव्यक्त होता है। मानवीय स्वभाव धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा ही है। अनुभव आत्मा में अनुभवमूलक व्यवहार एवं आचरण आत्मानुशासित होता है, आत्मानुभूति ही प्रमाण और वर्तमान है। आत्मानुभूति मूलक व्यवहार समाधान सम्पन्न होता है। तभी परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन में संतुलन सिद्ध होता है। अनुभूति आत्मानुषंगी एवं अपरिवर्तनीय है। यही पूर्णता सहज व्यवहार आत्मानुषंगी एवं अपरिवर्तनीय है यही पूर्णता है। यही पूर्ण सजगता है, पूर्ण सजगता ही सहजता है। समाधान एवं अनुभूति की निरंतरता ही सामाजिक अखण्डता एवं अक्षुण्णता है। अनुभव एवं समाधान के बिना जीवन चरितार्थ नहीं है। चरित्रपूर्वक अर्थ निस्सरण ही चरितार्थता है। आचरण ही स्वभाव के रूप में प्रकट होता है। यही स्वभाव “तात्रय” में स्पष्ट है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन के रूप में प्रयोग पूर्वक किया गया उत्पादन–**विनिमय** में सफल हुआ है। व्यवहार एवं उत्पादन का योगफल ही सह–अस्तित्व है। उनमें निर्विषमता ही जागृति है। उसकी निरंतरता ही सामाजिकता की अक्षुण्णता है, जिसके दायित्व का निर्वहन, शिक्षा एवं व्यवस्था करती है। **(अध्याय:24, पृष्ठ नंबर:83–84)**
- ....मानव में पायी जाने वाली स्वतंत्रता की तृषा का तृप्त हो जाना ही मानव–जीवन में दृष्टा पद प्रतिष्ठा एवं जागृति है। मानव जीवन में ही जागृति का क्रम है। स्वतंत्रता का प्रत्यक्ष रूप ही सतर्कता एवं सजगता है जो मानवीयतापूर्ण समाज, सामाजिकता, आचरण, संस्कृति, विधि, व्यवस्था एवं शिक्षा है। ये सभी परस्पर पूरक तथ्य हैं। इन सभी पूरक तथ्यों का एक ही सुदृढ़ आधार है मानवीयता। मानवीयतापूर्ण जीवन में ही मानव के विचार, व्यवहार एवं अनुभूति में एकात्मकता सिद्ध होता है। अनुभूति के विपरीत विचार, व्यवहार एवं उत्पादन होना ही अनेकता है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन पूर्वक वस्तु **विनिमय** एवं व्यवस्था, मूल्यों का निर्वाह पूर्वक व्यवहार एवं विधि, कुशलता, निपुणता एवं पांडित्य–पूर्ण विचार तथा मूल्यत्रय के अनुभव की निरंतरता से जीवन चरितार्थ होता है। यही जीवन में समाधान है। यही मानवीयता पूर्ण जीवन जागृति सहज प्रमाण है। समस्या मानव का अभीष्ट नहीं है या उपलब्धि नहीं है। समाधान ही मानव का आद्यान्त इष्ट, अभीष्ट एवं उपलब्धि है। यह केवल चारों आयामों, दश सोपानीय परिवार सभा व्यवस्था एकसूत्रता है, जिसके लिए अनवरत अभ्यास है। **(अध्याय:25, पृष्ठ नंबर:85)**

- "जागृत संचेतना ही प्रतिभा, प्रतिभा ही सतर्कता एवं सजगता, सतर्कता एवं सजगता ही जीवन, जीवन ही जागृति, जागृति ही व्यक्तित्व, व्यक्तित्व ही आचरण, आचरण ही संचेतना है।" जागृत जीवन और शरीर के तन्त्र में स्पन्दन ही कम्पनात्मक गति, कम्पनात्मक गति ही संचेतना, संचेतना ही कम्पनात्मक गति है। यही चैतन्य क्रिया की महिमा, गरिमा एवं विशेषता है। मानव–जीवन में अभिव्यक्त होने वाले संपूर्ण आचरण "तात्रय" की सीमा में दृष्टव्य है। प्रतिभा ही उत्पादन–**विनिमय** एवं व्यवहार में प्रकट होती है। यही उत्पादन की सीमा में उपयोगिता एवं कला मूल्य का मूल्याँकन एवं प्रस्थापन तथा व्यवहार में स्थापित मूल्य एवं शिष्ट मूल्य का निर्वाह है। यही विचार में समाधान, अस्तित्व में अनुभूति है। **(अध्याय:26, पृष्ठ नंबर: 87)**
- "दर्शन–क्षमता ही प्रतिभा, प्रतिभा ही उत्पादन–**विनिमय** एवं व्यवहार के लिए प्रवृत्ति है।" आचरण ही मानव की अभिव्यक्ति है। अभिव्यक्ति ही प्रकटन, प्रकटन ही जागृति पूर्वक अस्तित्वशीलता, विकास एवं जागृति अस्तित्वशीलता ही प्रकृति, प्रकृति ही जड़–चैतन्य क्रिया, जड़–चैतन्य क्रिया ही समग्र, समग्र ही अध्ययन, अध्ययन ही जागृति–क्षमता एवं जागृति –क्षमता ही दर्शन–क्षमता है। **(अध्याय:26, पृष्ठ नंबर: 87)**
- ...अर्थ की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक क्षमता ही गुणात्मक परिवर्तन का लक्षण है अन्यथा में ह्रास अवश्यम्भावी है। मानव के विकास का देय सामाजिकता है न कि केवल विशाल उत्पादन–**विनिमय**। सामाजिकता के बिना मानव आश्वस्त एवं विश्वस्त नहीं है। आश्वासन एवं विश्वसन प्रदान करना ही कार्यक्रम–त्रय का उद्देश्य है। इसकी पराभवता संस्कृति एवं सभ्यता को स्थापन–प्रस्थापन एवं संरक्षण–संवर्धन करने में असमर्थता के रूप में स्पष्ट होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि मानव का सर्वोच्च आयाम जो अनुभव है प्रधानत: उसी से प्रमाणित "कार्यक्रम–त्रय" को सर्वसुलभ बनाने पर ही मानव जन जाति को अनुभव के लिए अनुगमन कराने में समर्थ होता है।... **(अध्याय:40, पृष्ठ नंबर: 130–131)**
- ...प्रमाण सिद्ध कार्यक्रम ही मानव को प्रमाणित बनाने में समर्थ होता है। प्रमाण अनुभव, व्यवहार एवं प्रयोग से अधिक नहीं है। आर्थिक कार्यक्रम को प्रयोग, प्रमाण, सुरक्षात्मक कार्यक्रम को व्यवहार प्रमाण तथा सदुपयोगात्मक कार्यक्रम को अनुभव प्रमाण प्रधानत: सिद्ध करता है जबकि मूलत: ये तीनों कार्यक्रम मूल्यों पर ही आधारित है। आर्थिक कार्यक्रम शुद्धत: उत्पादन पर आधारित है। उत्पादन का प्रयोग सिद्ध होना अनिवार्य है। प्रयोग सिद्ध पद्धति के बिना उत्पादन–**विनिमय** सफल नहीं होता जो प्रसिद्ध है।... **(अध्याय:39, पृष्ठ नंबर: 131)**
- "मूल्य–त्रय" की एकसूत्रता अखण्ड सामाजिकता के लिए अनिवार्य है। व्यवहार एवं उत्पादन के मध्य में रिक्तता नहीं है। इन दोनों की संयुक्त स्थिति मानव जीवन में दृष्टव्य है। व्यवहार, उत्पादन के लिए प्रेरणा है। व्यवसाय उत्पादन के लिए साधन है। व्यवहार एवं उत्पादन में आश्वस्त एवं विश्वस्त होना तथा उसकी अक्षुण्णता या परम्परा का सुद्दढ़ होना ही समाज एवं सामाजिकता की उपलब्धि है। व्यवहार एवं उत्पादन की सफलता क्रम से अनुभूति एवं समाधान का प्रकटन है। मानव में प्रत्येक असफलता को सफलता में परिणत करने की कामना पायी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति में, से, के लिए सामाजिक संरचना में भागीदारी करने का अवसर समान है। उसके योग्य क्षमता में

वैविध्यता ही शिक्षा एवं व्यवस्था से परिमार्जित एवं नियंत्रित होने के लिए प्रस्तुत होता है। समाज संरचना का प्रत्यक्ष रूप व्यवहार एवं उत्पादन ही है। उत्पादन **विनिमय** अभीप्सा, व्यावहारिक अभीष्ट मानव मात्र में समान है। अवसर एवं साधन की विषमता ही उनमें वैविध्यता है। उनमें जो वैविध्यता है, वही प्रकटन में वैविध्यता है। यही परस्परता में वैविध्यता है। मानव में मूलत: अभीप्सा एवं अभीष्ट साम्य होने के कारण समाज संरचना के आधार में स्थिरता पाया जाता है। यही सत्यता आशा, आकाँक्षा एवं संकल्प को उद्गमित कराती है, जिससे समुचित एवं संतुलित समाज संरचना सिद्ध हो सके। यही चिंतन परम्परा का आधार एवं स्रोत है।... **(अध्याय:41, पृष्ठ नंबर: 134)**

- ...संतुलित समाज संरचना का प्रत्यक्ष रूप व्यवहार एवं उत्पादन की अविभाज्यता है। उत्पादन शिक्षा एवं उसका संरक्षण जितना महत्वपूर्ण है उससे अत्यधिक व्यवहार शिक्षा एवं उसका संरक्षण महत्वपूर्ण है। "व्यवहार, उत्पादन के लिए प्रेरणा है। उत्पादन, व्यवहार के लिए साधन हैं।" यही वास्तविकता है। व्यवहार शिक्षा में अपूर्णता ही उत्पादन–**विनिमय** उपलब्धियों की अपव्ययता है।... **(अध्याय:41, पृष्ठ नंबर: 134)**
- ...उत्पादन–**विनिमय** व्यवस्था से अधिक उत्पादन व व्यवहारिक विश्वास से समृद्धि भाव सिद्ध होता है। यही समृद्ध परम्परा एवं प्रमाण है। समृद्ध परम्परा उत्तरोत्तर समृद्धि एवं समृद्धि में विपुलता को प्रमाणित करता है। यही लोक वाँछा है। **(अध्याय:41, पृष्ठ नंबर: 135)**
- ...उत्पादन **विनिमय** आश्वासन, उसके योग्य समुचित शिक्षण, साधन एवं **विनिमय** सुलभता का योगफल है।... **(अध्याय:41, पृष्ठ नंबर:136)**
- "आयोजनात्मक, प्रयोजनात्मक एवं योजनात्मक कार्यक्रम प्रसिद्ध हैं।" आत्मीयतापूर्ण अर्थात् न्याय सम्मत पद्धति से किया गया सम्मेलनात्मक योजना ही आयोजन है। पूर्णता की अपेक्षा में या पूर्णतया परस्पर मिलन ही सम्मेलन है। आयोजनात्मक कार्यक्रम ही सामाजिक कार्यक्रम है। सामाजिक कार्यक्रम प्रधानत: संवेदनशीलता व संज्ञानीयता की अभिव्यक्ति है, यही प्रयोजन है। संज्ञानीयता ही आयोजन का प्रधान कारण है। संज्ञानीयता के अभाव में आयोजनात्मक कार्यक्रम सफल नहीं है। आयोजनात्मक कार्यक्रम ही सामाजिकता को स्पष्ट करता है। आयोजन मानव के चारों आयामों एवं पाँचों स्थितियों के अर्थ में चरितार्थ होती है। यही प्रमाण मूलक दश सोपानीय परिवार सभा व्यवस्था होने से परंपरा है। प्रमाण मूलक न होने से वर्ग भावना की अभिव्यक्ति है। परम्परा में प्रमाण मूलक चिन्तन का होना अनिवार्य है। यही सफलता का द्योतक है। इसके अभाव में आयोजन नहीं है। आयोजन में व्यवहारिकता का निर्धारण होना ही प्रधान तत्व है। व्यवहारिकता अनुभवमूलक होने से ही सफल होता है। फलत: समाज संरचना स्पष्ट होता है अर्थात् संबंध एवं संपर्क के प्रति दायित्व एवं कर्तव्य निर्वाह होता है। फलत: समाज की अखण्डता एवं अक्षुण्णता सिद्ध होता है। आयोजन की चरितार्थता अखण्डता में ही है न कि विघटन में। संपूर्ण आयोजन मानव धर्मीयता को प्रसारित करने के लिए बाध्य है। मानव धर्मीयता सार्वभौमिक है। मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था के रूप में ही मानव धर्मीयता प्रसारित होता है।

योजनाएं उत्पादन–**विनिमय** के संबंध में होती हैं जो साधन नियोजन सहित परियोजना में परिवर्तित होता हैं। व्यवसाय में उत्पादन ही प्रमुख उद्देश्य है। आयोजन में विनियोग संबंधी, योजना में नियोजन संबंधी निश्चय, निर्णय, संभावना, व्यवहारिकता एवं प्रमाण सम्मत होना आवश्यक है। प्रमाण परम्परा पूर्वक ही आयोजनात्मक एवं योजनात्मक कार्यक्रम सफल होता है। आयोजनात्मक कार्यक्रम अर्थ के सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक तथ्य को स्पष्ट करता है। यही आयोजन का मूल तत्व एवं मूल लक्ष्य है। इसे सफल बनाने के लिए ही ऐतिहासिक प्रेरणा भी सहायक होता है। इन ऐतिहासिक स्मरण परम्पराओं में सामाजिकता ही उत्प्रेरक तत्व है। वर्गीयता के आवेश से मानव का ऐतिहासिक सिद्ध होना संभव नहीं है। प्रत्येक आयोजन मानवीयता पूर्ण अथवा अतिमानवीयता पूर्ण संचेतना से ही सफल होता है अन्यथा असफल होता है। **(अध्याय:50, पृष्ठ नंबर: 162–163)**

मानव अनुभव दर्शन

(संस्करण: 2011, मुद्रण: 2016)

- ज्ञानावस्था में सभी मानव का आद्यान्त इष्ट ब्रह्मानुभूति ही है। अतएव मानव द्वारा मात्र उसी के अनुकूल उत्पादन, व्यवहार, विचार, विधि–व्यवस्था, अध्ययन, शिक्षा–प्रणाली, **विनिमय** और उपयोग प्रणाली का प्रणयन एवं उन्नयन तथा पालन अनुसरण ही सर्व मंगलमय कार्यक्रम है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 37)**

समाधानात्मक भौतिकवाद

(संस्करण: 2009)

- प्रामाणिक होने के लिए सह–अस्तित्व रूपी सत्य में अनुभव करना मानव के लिए संभव है। यह सभी को तभी संभव हैं, जब शिक्षा का मानवीयकरण हो जावे। इन तीनों स्थितियों में मानव के वैभवित होने के लिए जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन (अनुभव) ज्ञान और मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान ही प्रधान तत्व है। इस सत्य सहज जागृति को मानव प्रमाणित करें यह एक आवश्यकता है क्योंकि:–

1) जागृति पूर्वक ही मानव परपंरा सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक व्यक्त होता है।
2) जागृतिपूर्ण मानव परंपरा में ही जागृति पूर्ण शिक्षा–संस्कार सर्व सुलभ होता है।
3) जागृति पूर्वक ही मानव परंपरा में न्याय और सुरक्षा सर्व सुलभ होता है।
4) जागृति सहज मानव परम्परा में उत्पादन सुलभता प्रमाणित होता है।
5) जागृतिपूर्ण मानव पंरपरा में ही आवर्तनशील अर्थ प्रणाली श्रम नियोजन, श्रम **विनिमय** पद्धति से **विनिमय** सुलभता होता है।
6) जागृति पूर्ण मानव परंपरा में ही परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था दस सोपानीय विधि से सर्वसुलभ हो पाता है। ये सभी मानवों को लिए आशित (अपेक्षित), आकांक्षित और आवश्यकीय उपलब्धियाँ हैं। इसके सफल होने के मूल में मानव परंपरा है। अर्थात् मानवीयतापूर्ण शिक्षा, संस्कार, संविधान और व्यवस्था है। यह मानवीयतापूर्ण अथवा जागृतिपूर्ण पद्धति, प्रणाली और नीति से प्रमाणित होता ही है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 119–120)**

- न्याय पूर्वक सुख और शांति, व्यवस्था पूर्वक शांति और संतोष, तथा अनुभव पूर्वक संतोष और आनंद जीवन में प्रमाणित होता है। प्रत्येक मानव इसे अनुभव कर सकता है। ऐसे अखण्ड समाज– परिवार मूलक व्यवस्था, विश्व परिवार में व्यवहार रूप दे सकता है। व्यवस्था कम से कम 100 से 200 परिवारों के बीच में, अर्थात् 1000 से 2000 जनसंख्या के बीच स्वायत्त विधि से सफल हो सकती है। स्वराज्य की परिभाषा ही हैं–स्वयं का वैभव, स्वयं का स्वरूप मानव, मानव के समान वस्तु जीवन है। जीवन का संबोधन "स्वयं" अथवा "स्व" है। इस प्रकार जीवन का वैभव ही राज्य है। अस्तु, जीवन का वैभव– स्वराज्य। जीवन वैभव जागृति की अभिव्यक्ति हैं। जागृति का अर्थ सर्वतोमुखी समाधान एवं प्रामाणिकता है। इसका व्यवहार रूप परिवार परंपरा में समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व है। यही एक परिवार से विश्व परिवार तक प्रमाणित होने की वस्तुएँ हैं। इसके क्रियान्वयन क्रम में सर्वमानव के लिए न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, **विनिमय** सुलभता लक्ष्य है। इसकी अक्षुण्णता के लिए शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम सहज सुलभ रहेगा। इसको ही ग्राम स्वराज्य व्यवस्था का रूप देने के क्रम में दस सदस्यीय परिवार स्वयं अपने एक परिवार के प्रतिनिधि को, पहचानने की व्यवस्था रहेगी। हर दस (10) परिवार से एक एक सदस्य "परिवार समूह सभा" के लिए निर्वाचन पूर्वक पहचान करेगा। ऐसे दस परिवार समूह सभा अपने में से एक

एक व्यक्ति को ग्राम परिवार सभा के लिए निर्वाचन पूर्वक पहचान करेगा। ग्राम सभा में समाहित दस (10) व्यक्तियों में से सभा प्रधान को पहचाने रहेंगे। ग्राम सभा, "स्वराज्य कार्य संचालन" समितियों को, मनोनीत करेगी। ऐसी समितियाँ पाँच होगी–

1. शिक्षा–संस्कार समिति
2. न्याय सुरक्षा समिति
3. स्वास्थ्य संयम समिति
4. उत्पादन कार्य समिति
5. **विनिमय** कोष समिति

इन सबके अपने–अपने कार्य परिभाषित, व्याख्यायित रहेंगे। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर: 181–182)**

- मौलिकता की पहचान ही निर्वाह का आधार

मौलिकता स्वयं मूल्य है। सभी वस्तुओं की मौलिकता का अपनी ही स्थिति, गति, पद और अवस्था के आधार पर प्रकाशित, संप्रेषित और अभिव्यक्ति होना पाया जाता है। अस्तित्व धर्म नित्य वर्तमान हैं, अस्तित्व सहज स्वरूप और स्वभाव सह–अस्तित्व हैं। इस प्रकार अस्तित्व सहज मौलिकता समझ में आती है। अस्तित्व में चारों अवस्थाएँ, सत्ता में संपृक्त वर्तमान है। चारों अवस्थाएँ सत्ता में अविभाज्य हैं। इसीलिए अस्तित्व ही संपूर्ण वस्तु का मूल धर्म है। पदार्थावस्था का धर्म ही अस्तित्व, स्वभाव संगठन–विघटन क्रिया हैं। प्राणावस्था में अस्तित्व सहित पुष्टि धर्म; सारक–मारक स्वभाव है। जीवावस्था में अस्तित्व, पुष्टि सहित आशा धर्म है। अस्तित्व, पुष्टि शरीर में देखा जाता है। आशा धर्म को जीवन में ही देखा जाता है। इस प्रकार जीवावस्था में जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में प्रकाशित होना स्पष्ट है। जीवावस्था में स्वभाव क्रूर और अक्रूर रूप में हैं। ज्ञानावस्था में अस्तित्व, पुष्टि, आशा सहित सुख धर्म होना पाया जाता है। अस्तित्व, पुष्टि मानव शरीर में दिखता है, सार्थक होता है। जीवन में संस्कार और सुख सार्थक होना आवश्यक है। स्वभाव जागृति क्रम में अमानवीय, जागृति पूर्वक मानवीय और जागृति पूर्णता के रूप में अतिमानवीय होना पाया जाता है। यह अमानवीयता की स्थिति में दीनता, हीनता, क्रूरता के रूप में दिखता है और जागृति स्थिति में धीरता, वीरता, उदारता के रूप में दिखता है। जागृति पूर्ण स्थिति में दया, कृपा, करुणा के रूप में स्वभाव दिखता है। अमानवीय स्वभाव ही दुखी होना; मानवीय स्वभाव ही सुखी होना और अतिमानवीयता का स्वभाव ही आनंद होना स्पष्ट है। इस प्रकार अस्तित्व में संपूर्ण वस्तुओं का मौलिक तत्व सहज रूप में जान पहचान सकते हैं, फलतः निर्वाह कर सकते हैं। संपूर्ण पहचान मौलिकता और मूल्यांकन ही है। ऐसे मूल्य और मूल्यांकन, चाहे व्यवहार में हो, व्यवसाय में हो, **विनिमय** में हो, चाहे नैसर्गिकता में हो– इस क्रम को अस्तित्व सहज रूप में देखने पर पता चलता है कि पदार्थावस्था में स्वभाव संगठन–विघटन के रूप में कार्यरत है। हर इकाई का विघटित होने के उपरान्त संगठन की संभावनाओं को इस प्रकार देखा जा सकता हैं कि

हर परमाणु–अणुएँ संगठन में भागीदारी निर्वाह करने के प्रयास में ही रहते हैं। फलत: परमाणु के रूप में सभी अंश प्रतिष्ठा पाते हैं। हर अंश अपने को संगठन प्रतिष्ठा में पाकर ही व्यवस्था में भागीदार होना प्रमाणित कर पाता है। इस प्रकार पदार्थावस्था में हर वस्तु को संगठन के आधार पर ही अथवा एक परमाणु में निहित अंशों की संख्या के आधार पर ही उस परमाणु की प्रजाति, मात्रा और कार्य को पहचान पा रहे हैं और वह स्वयं व्यक्त होता हुआ दिखाई पड़ता है। अस्तु, पदार्थावस्था में गठन के आधार पर, वह भी संगठन के आधार पर मौलिकताएँ प्रमाणित है। **(अध्याय:9–1, पृष्ठ नंबर: 185–186)**

- ....मानव सहज मौलिकता की पहचान मानव परंपरा में होना एक अनिवार्य स्थिति हैं।
  1) जागृतिपूर्ण मानव परंपरा का तात्पर्य मानवीय शिक्षा, अनुभव मूलक विधि से व्यवहार, व्यवस्थावादी व कारी शिक्षा, मानवीय संस्कार, मानवीय व्यवस्था अर्थात् परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था और मानवीयता पूर्ण आचार संहिता संविधान है। यह अविभाज्य रूप में वर्तमान मानवीयतापूर्ण परंपरा है।
  2) मानवीय सभ्यता, संस्कृति, विधि, व्यवस्था में सामरस्यता मानवीयतापूर्ण परंपरा है।
  3) जागृतिपूर्ण मानव परंपरा में समाधान, समृद्धि, अभय, सह– अस्तित्व सर्वसुलभता वर्तमान रहता हैं।
  4) प्रत्येक परिवार के लिए, में, से न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, **विनिमय सुलभता** वर्तमान होता है। **(अध्याय:9(1), पृष्ठ नंबर: 198–200)**
- मानवीयता पूर्ण व्यवहार, व्यवस्था, संविधान, शिक्षा–संस्कार के साथ–साथ आहार, विहार, व्यवहार, व्यक्तित्व और प्रतिभा में संतुलन को प्रमाणित करने के लिए अति आवश्यक है। व्यवहार, मानवीय आचरण के रूप में, व्यवस्था में भागीदार होने के रूप में स्पष्ट व नियंत्रित, संतुलित हो जाता है। व्यवस्था में भागीदारी, व्यवहार में संबंधों व मूल्यों को निर्वाह करना, व्यवस्था के लिए पूरक होता है। व्यवस्था में भागीदारी प्रधानत: न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य और **विनिमय–कोष** कार्यों में भागीदारी हैं। इसके अतिरिक्त भी प्रत्येक मानव आहार–विहार करता ही है। **(अध्याय:9(1), पृष्ठ नंबर: 200)**
- इन सबके प्रभावशील रहते अव्यवस्था और समस्याओं का बढन्ा ही देखने को मिला। सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज की रूपरेखा आज तक विचार रूप में भी नहीं आ पाई। मानव पंरपरा में आज तक परंपरा में जो कुछ भी साकार है, वह सब पहले विचार रूप में आया फिर साकार हुआ। अभी तक जो विचार हैं, वह समस्याकारक ही देखने को मिला। इसीलिए एक विचारणीय बिंदु के रूप में मांसाहार मानसिकता भी समस्यामूलक, समस्या कारक क्यों न हुआ हो? इस प्रकार एक प्रश्न किया जाना संभव हैं क्योंकि मानव की संपूर्ण समस्याएँ समाधान सहज अपेक्षा के साथ होना पाया जाता है। समाधान का आधार कार्य, उत्पादन, **विनिमय**, विचार, व्यवहार, अनुभव न्याय – समाधान के आधार पर ही प्रमाणित होता है। इसलिए मानव के व्यवहार में, मूल रूप से आहार–विहार का प्रासंगिक संबंध है। इसलिए भी मांसाहार शाकाहार की समस्या और समाधान पक्षों में परिशीलन करना एक आवश्यक कार्य हैं। (1) मांसाहार (2) शाकाहार–इसके स्वरूप को समझें। ये दोनों एक हैं या अलग अलग

मानसिकता और वस्तुएँ हैं? दोनों वस्तुओं का एक ही प्रयोजन है या अलग प्रयोजन हैं। इसका निर्णय होना आवश्यक समझा गया। **(अध्याय:9(3), पृष्ठ नंबर: 209–210)**

- कुछ लोग ऐसा भी तर्क प्रस्तुत करते हैं मरने के बाद स्वाभाविक रूप से शरीर की गति तो धरती में, मिट्टी में मिलना ही हैं। उसको खाने में क्या तकलीफ है, ऐसा आराम से पूछते हैं। इसका उत्तर अस्तित्व सहज रूप में इस प्रकार से देखा जाता हैं कि मानव कायिक, वाचिक, मानसिक रूप में कर्म करता है। इन सबको पुन: तीन–तीन प्रकार से क्रियान्वयन करता हैं या क्रियान्वयन करने के लिए संभावना बनी रहती हैं। यह इस प्रकार है कि –
  - किया हुआ, कराया हुआ, करने के लिए सहमति दिया हुआ हो।
  - सोचा गया, सोचवाया गया और सोचने के लिए सहमति दिया गया।
  - बोला गया, बोलवाया गया, और बोलने के लिए सहमति दिया गया।

  इस प्रकार इन नौ (9) प्रकारों से क्रिया–क्रम करते हुए मनुष्य का परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण किया जा सकता है। इस विधि से जीवों के मांसाहार के लिए जो हत्या या वध करते हैं, वे अलग दिखते हैं। वे अपनी आजीविका के लिए यह कर्म करते हुए अपने को पाते हैं। यह क्रम से मांस विक्रय और क्रय विधि से भक्षण करने वालों तक पहुँचता है। भक्षण करने वाला भी अपनी सहमति को, वध करने की क्रिया के पक्ष में देता है। उस वध की भी सहमति और उसके प्रमाण रूप में ही मांस को खरीद पाता है। इस प्रकार से प्रत्येक मांसाहारी मानव जीवों के वध और हत्या कार्य के साथ सहमति रखता ही है। इस प्रकार यह बात स्पष्ट हो जाती है कि चाहे वह मांसाहार करें, चाहे शाकाहार, उनका संपादन, उत्पादन और **विनिमय कार्यों** में प्रत्येक व्यक्ति उन–उन अर्थात् मांसाहार या शाकाहार के साथ सहमत रहता ही हैं। अस्तु, मांसाहार दुर्बल को सबल द्वारा बलपूर्वक भक्षण करने की प्रक्रिया है। दुर्बलता सबलता की परीक्षण करने के लिए (1) शरीर और जीवन की सम्मिलित उपस्थिति का रहना एक अनिवार्य स्थिति हैं। इसको प्रत्येक परिस्थिति में परीक्षण किया जा सकता है। जैसे– मानव और बाघ, मानव और बिल्ली, मानव और कुत्ता। इस प्रकार जीवों के साथ मानव को तौला जा सकता हैं। दूसरी विधि से– बाघ और सूअर, बाघ और भालू, बाघ और बकरी, बाघ और गाय संयोग प्रणालियों से अध्ययन होता हैं। इन सबमें यही निकलता है कि दुर्बल को सबल द्वारा, बल पूर्वक भक्षण कर लेना ही हिंसा हैं। (2) इसी क्रम में मानव और घास, मानव और पत्ता आदि संयोगों को देखें। इनमें झाड़–पौधे के साथ जीवन बल नहीं रहता है तथा जीवों व मानवों के शरीर की पुष्टि के लिए आवश्यक तत्व रहता है। **(अध्याय:9(3), पृष्ठ नंबर: 216–218)**

- ....व्यवस्था, अपने आप में न्याय, उत्पादन, **विनिमय** में भागीदारी हैं। यह परिवार से विश्व परिवार पर्यन्त सूत्रित व्याख्यायित तथ्य हैं। इन आधारों पर “व्यवस्था समाज का वैभव हैं और धर्म समाज का स्वरूप हैं।” मानव का मानवत्व सहित व्यवस्था होना समाज हैं और समग्र व्यवस्था हैं – न्याय, उत्पादन, **विनिमय** में भागीदारी। यही समग्र व्यवस्था का तात्पर्य है। इनकी निरंतरता के लिए दूसरी भाषा में, मानव परंपरा में व्यवस्था और व्यवस्था में

भागीदारी निरंतर वैभवित होने के लिए, मानवीय शिक्षा–संस्कार और स्वास्थ्य–संयम रूपी स्रोत के साथ ही मानव परंपरा का जागृत वैभव स्पष्ट हो जाती है।... **(अध्याय:9(4), पृष्ठ नंबर: 241–242)**

- न्याय:– संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति है। मौलिकता न्याय का स्वरूप सहज रूप में ही संबंध मूल्य और मूल्यांकन ही है। यह मानव संबंध, नैसर्गिक संबंध और उत्पादन सबंध के रूप में स्पष्ट होता है। मानव संबंध व्यवहार सूत्र का स्वरूप हैं। नैसर्गिक संबंध पूरकता सहज सत्यता हैं। उत्पादन संबंध उपयोगिता सहज सबंध हैं। इनमें उपयोगिता को प्रमाणित करने के लिए प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन और कला मूल्य की स्थापना और उसके मूल्यांकन के रूप में हैं। आवर्तन विधि संपन्न **विनिमय** प्रक्रिया पूर्वक व्यवहारिक होना पाया जाता हैं मानव संबंध समाज रचना का आधार हैं। परिवार मूलक विधि से समाज रचना निरंतर सहज हैं। मानवत्व ही परिवार संबंधों की तृप्ति का सूत्र है। परिवार ही विश्व परिवार के रूप में अखण्ड समाज हैं। परिवार रचना के साथ व्यवस्था की अभिव्यक्ति एक अनिवार्य स्थिति हैं। व्यवस्था सहज अभिव्यक्ति क्रम में न्याय, **विनिमय** और उत्पादन प्रधान प्रक्रिया हैं। न्याय प्रक्रिया में स्थापित एवं शिष्ट मूल्यों का मूल्यांकन मौलिक हैं। **विनिमय** प्रकिया में श्रम मूल्यों का मूल्यांकन मौलिक हैं। उत्पादन कार्यों में अथवा उत्पादन विधि में श्रम नियोजन मौलिक हैं। इस प्रकार मौलिकता त्रय पूर्वक सार्वभौमिकता और अक्षुण्णता सहज होता है। इसी अभिव्यक्ति के लिए मानवीय शिक्षा–संस्कार और स्वास्थ्य–संयम आवश्यकीय कार्यक्रम हैं। इसी के आधार पर सार्वभौम व्यवस्था और अखण्ड समाज रचना के लिए, मानव का जागृत होना पाया जाता है। **(अध्याय:9(4), पृष्ठ नंबर: 247–248)**
- न्याय स्वयं मूल्य और मूल्यांकन के रूप में संबंधों में समाधान = सुख है।

  व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी = समाधान = सुख हैं। अस्तित्व दर्शन, जीवन ज्ञान के रूप में सत्य नित्य समाधान =नित्य सुख है।

  ऐसा देखा गया है यह प्रत्येक मानव को समझ में आता है। इन तथ्यों में प्रत्येक व्यक्ति सहज रूप में प्रमाणित हो सकता है। अस्तु, मानव जाति को मानव धर्म के आधार पर ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में मानव के एक होने से सत्य को समझ सकता है। इस प्रकार मानव धर्म सुख हैं। ऐसा सुख जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन, मानवीयता पूर्ण आचरण सहज रूप में है। सर्वतोमुखी समाधान मानव सहज “स्वत्व” हो जाता है। इसके प्रमाण में व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी अपने आप न्याय, उत्पादन, **विनिमय** संबंधी समाधान हैं, फलस्वरूप मानव सुखी होता है। **(अध्याय:9(5), पृष्ठ नंबर: 256–257)**

- उत्पादन और संतुलन सहज वैभव का मूल सूत्र विकल्प के रूप में होना समझ में आता है कि:–
  1) भय और प्रलोभन के स्थान पर मूल्यों की पहचान, निर्वाह और मूल्यांकन करने का दायित्व।
  2) लाभोन्माद के स्थान पर विकल्प के रूप में आवर्तनशीलता की समझ और प्रक्रिया।
  3) स्वयं व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

4) श्रम मूल्यों का मूल्यांकन, स्वयं का, दूसरों का मूल्यांकन।

5) श्रम **विनिमय**।

6) हर मानव सहज रूप में अक्षय बल, अक्षय शक्ति संपन्न है। श्रम शक्ति ही निपुणता, कुशलता के रूप में मूल पूंजी है। यह पूंजी निवेश, पूंजीवाद और साम्यवाद का विकल्प है।

7) संग्रह के स्थान पर समृद्धि।

8) मानव व नैसर्गिक संबंध, हर परिवार मानव का उत्पादन में भागीदारी।

9) हर परिवार में व्यवहार व उद्योग, परिवार व्यवस्था में भागीदारी। **(अध्याय:9(10), पृष्ठ नंबर: 305-306)**

- मानव सहज शरीर यात्रा, जीवन और शरीर के संयुक्त यात्रा के प्रयोजनों को देखने पर पता लगता हैं कि जागृति अर्थात् जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना, उसकी तृप्ति और निरंतरता का होना ही हैं। यही प्रामाणिकता, स्वानुशासन, सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व के रूप में प्रमाणित होना ही हैं। यही व्यवसाय, व्यवहार, समाज व्यवस्था, विचार और अनुभव सहज रूप में वांछित, आवश्यकीय चिरप्रतीक्षित घटना है अथवा उपलब्धि है। उल्लेखनीय बात यही है कि अब संपूर्ण सौभाग्य, मानव के लिए करतलगत होना संभव हो गया हैं। इस क्रम में प्रत्येक मानव, प्रत्येक परिवार, सम्पूर्ण मानव के तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा सहज रूप में होगी। फलस्वरूप पर्यावरणीय नैसर्गिक समस्या, प्रदूषण समस्या, न्याय समस्या, सुरक्षा समस्या, उत्पादन समस्या, **विनिमय समस्या**, शिक्षा-संस्कार समस्या और स्वास्थ्य-संयम समस्याएँ दूर होंगी। **(अध्याय:9(10), पृष्ठ नंबर: 317)**
- व्यवहार प्रमाण के आधार पर ही सार्वभौम व्यवस्था और अखण्ड समाज प्रमाणित हो पाता है। इसलिए आवश्यकताएँ सीमित अथवा संयत होती हैं। वर्तमान में विश्वास ही व्यवस्था का प्रमाण हैं। इसलिए भी मानव का संयत होना सहज होता हैं। मानव का संयत होना ही आवश्यकताओं को संयत अथवा सीमित होना हैं। यही समझदारी की मूल वस्तु हैं। ऐसी समझदारी के आधार पर ही सीमित आवश्यकताओं के आधार पर उत्पादन कार्य संयत होना, **विनिमय कार्य** लाभ-हानि से मुक्त विधि से संपन्न होना, देखने को मिलता हैं। फलतः लाभोन्माद संयत होना सहज हैं। कोई एक उन्माद संयत होने के आधार पर, अन्य दोनों उन्माद संयत हो जाते हैं। लाभोन्माद, कामोन्माद और भोगोन्माद ही मानव परंपरा में अव्यवस्था का कारक एवं द्योतक हैं। न्याय सुलभता से भोगोन्मादी और कामोन्मादी प्रवृत्तियाँ संयत हो जाती हैं। समग्र व्यवस्था में भागीदारी, सर्वतोमुखी समाधान और प्रामाणिकता के आधार पर सहज ही लाभोन्माद का संयत होना संभव है। इस प्रकार तीनों उन्माद शांत होकर, सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज परंपरा के उत्सव में अथवा नित्य उत्सव में विलीन हो जाते हैं। **(अध्याय:9(10), पृष्ठ नंबर: 326-327)**

- परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि से ही न्याय–सुलभता और लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** सुलभता संभव हो जाती हैं। ऐसा संभव होने पर संग्रह के स्थान पर समृद्ध होना ही हैं। प्रत्येक परिवार मानव आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने के क्रम में समृद्धि का अनुभव करता हैं। न्याय सुलभ होने से मानव वर्तमान में विश्वास करता ही हैं। फलत: सभी ओर समाधान नजर आता है। इसी सत्यतावश समृद्धि सहित परिवार मानव व्यवस्था के रूप में प्रमाणित हो जाता है। **(अध्याय:9(10), पृष्ठ नंबर: 338)**
- हर परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन होने के आधार पर प्रत्येक परिवार में शरीर पोषण, संरक्षण और समाज गति के अर्थ में निश्चित उत्पादन–कार्य विधिवत् निर्धारित रहना संभव हो जाता हैं। फलस्वरूप उत्पादन सुलभता का अनुभव होना सहज हैं। इस प्रकार न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, **विनिमय सुलभता** सहज आवर्तनशील वैभव, स्वयं नित्य उत्सव के रूप में स्वराज्य व्यवस्था को प्रमाणित कर देता हैं। ऐसे उत्सव के अभिन्न अंगभूत मानवीय शिक्षा–संस्कार और स्वास्थ्य संयम सहज कार्यक्रम मानव कुल में व्यवहृत होता ही रहेगा। **(अध्याय:9(10), पृष्ठ नंबर: 338)**
- मुद्रा और श्रम मूल्य:– मुद्रा और प्रतीक मुद्राएँ अभी तक समुदायों में, विविध प्रकार से प्रचलित रहीं। धातुओं के ऊपर लिखी हुई संख्याओं को मुद्रा कहते है। उन्हीं संख्याओं को कागज पर छापने से वह प्रतीक मुद्रा कहलाता हैं। दोनों प्राप्ति नहीं हैं। जो कुछ भी प्राप्ति है; वह आहार, आवास, अलंकार संबंधी और दूरदर्शन, दूरगमन, दूरश्रवण संबंधी वस्तुओं में है। इन सब की उपयोगिता स्पष्ट है। इनका सदुपयोग करना भी हैं। मुद्रा और प्रतीक मुद्रा का उपयोग नहीं हो सकता, सदुपयोग होने की बात तो दूर रही। इसलिए इस भ्रम का विकल्प आवश्यक रहा। इसका विकल्प श्रम का नियोजन, श्रम मूल्य का मूल्यांकन और श्रम **विनिमय** ही हैं। वस्तुओं का **विनिमय** मूल्य, श्रम नियोजन के आधार पर होना पाया जाता हैं। इसलिए वस्तुओं का मूल्यांकन होना सहज संभव है। वस्तुओं का मूल्यांकन ही श्रम का मूल्यांकन है। वस्तु का विनियम ही, श्रम का **विनिमय** है। इस प्रकार श्रम का मूल्यांकन और श्रम **विनिमय** प्रणाली को अपनाना सुलभ है। जिससे द्रोह–विद्रोह, शोषण अपने–आप शांत हो जाते हैं। इसकी गति अवश्य ही मानव कुल चाहता हैं। इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि:–

  1) श्रम मूल्य को पहचाना जा सकता है।

  2) श्रम मूल्य का मूल्यांकन उत्पादित वस्तु के उपयोगिता और कला के आधार पर किया जा सकता है।

  3) श्रम **विनिमय** मानव सहज एक आवश्यकता है।

  4) श्रम **विनिमय** को वस्तु **विनिमय** के रूप में किया जा सकता हैं।

  श्रम मूल्य का मूल्यांकन प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन के आधार पर होना पाया जाता है। श्रम नियोजन आज भी प्राकृतिक ऐश्वर्य पर ही होता है। उसे प्रतीक मूल्य के चक्कर में ले जाकर परस्पर विश्वासघात करने की हजारों मंजिल की एक बड़ी दुकान आदमी जाति ने सजा लिया है। इसी व्यापार में ही सर्वाधिक दिलचस्पी मानव में देखने को मिलती है। इसके मूल में संग्रह हैं, संग्रह के मूल में भोग हैं। सुविधा भोग की लिप्सा में व्यापारवाद को मानव

मानस से सर्वाधिक संख्या में स्वीकार कर लिया है। व्यापार मूलत: उत्पादन नहीं हैं, जबकि उत्पादन और उपभोक्ता के बीच में सर्वाधिक पवित्र सेवा मानकर जनमानस ने स्वीकारा है। इसका प्रमाण है व्यापारी ने जो दाम लेकर जिस वस्तु को बेच लिया, उसका विश्वास प्रत्येक मानव करता आया है। अभी भी सर्वाधिक लोग विश्वास करते हैं। अभी की स्थिति में, कई देशों में, जिस वस्तु को जिस नाम से बेचा जाता हैं, उस नाम की वस्तु का जो सहज रूप गुण होता हैं, उससे भिन्न या विकृत वस्तुओं को बेचकर लाभोन्माद की तुष्टि देता हुआ आदमी देखने को मिलता हैं। जैसे चावल में पत्थर मिलाकर बेचना। इसी प्रकार औषधि द्रव्यों में भी मिलावट की बात देखी गई हैं। यह लाभोन्माद से ही आता हैं। लाभोन्माद संग्रह के रूप में विनियोजित रहता है। यह उदाहरण यहाँ इसलिए दिया गया है कि वस्तुओं को खरीदते समय ही मानव सहज रूप में ही विश्वास से खरीदता हैं। उस वस्तु के निष्प्रयोजन और विकल्प की स्थिति में पीड़ित होना स्वाभाविक हैं। इससे पता लगता हैं कि एक तो मूल्यों की मूल्यांकन विधि में, मूल्यांकन में जो ज्यादा कम वाली बात है, वह अपने प्रकार की दो स्थितियाँ निर्मित करता हैं। दूसरी यह भी बात समझ में आती हैं कि वस्तु की पवित्रता, गुणवत्ता पर प्रश्न चिन्ह लग गए हैं? इसलिए मानव की व्यवस्था प्रणाली में, प्रत्येक व्यक्ति व्यवस्था में भागीदार है, इस कारण व्यापार मानसिकताएँ ग्राम मूलक उत्पादन और समृद्धि सहज मानसिकता में विकसित होना स्वाभाविक है। **(अध्याय:9(11), पृष्ठ नंबर: 350-351)**

व्यवहारात्मक जनवाद

(संस्करण: 2009, मुद्रण: 2017)

- सुदूर विगत से, क्रमागत विधि से आई जनचर्चा, शिक्षा, विविध माध्यम भौतिकवादी और ईश्वरवादी मान्यताओं, घटनाओं के आधार पर नकारात्मक, सकारात्मक विधि से निर्णय लेते रहे। इस बीच बहुत सारे यांत्रिक घटनाएँ प्रकृति सहज उर्मियाँ मानव को कर्माभ्यास में कर तलगत हुई जैसे दूर–दर्शन, दूर–श्रवण, दूर–गमन जैसी दूर–संचार विधियाँ विविध उपक्रमों से स्थापित हो गई। इसकी शिक्षा विधि भी सभी देशो में स्वीकृत हो गई है। किसी देश में सर्वाधिक सुलभ किसी देश में कम सुलभ हुई है। इससे अनायास ही मानव जाति के लिए उपलब्धि यह हुई कि सभी समुदाय, परिवार, व्यक्ति शीघ्रातिशीघ्र एक जगह में जुटने का किसी निश्चित मुद्दे पर परस्पर आदान–प्रदान चर्चा और निर्णय लेने के लिए सहायक हो गई। अभी तक परम्पराओं में जन मानसिकता और जनचर्चा स्पष्ट हो चुकी है उसी के अनुरूप विविध समुदाय बारम्बार एक दूसरे केअनुरूप साथ परामर्श विधि अपनाना सुलभ हुआ इसी के साथ घरेलू उपकरणों को और आवास–अलंकार संबंधी वस्तुओं को निर्मित करने में यंत्रोपकरण की सहायता उपादेयी मानी गई है। इस दशक के मध्यभाग तक मानव ने यह भी आंकलित किया है कि हर उत्पादन ठीक समझा हुआ आदमी के हाथों से जितना सस्ता हो सकता है उतना यंत्रोपकरण से नहीं हो सकता है। इस ध्वनि से यह भी एक स्वाभाविक अनुमान होता है सभी मानव के लिए कार्यकारी योजनाएं विधिवत समझ में आई नहीं रहती है। कुछ लोग यांत्रिकी तकनीकी के आधार पर यंत्रों की सहायता से उत्पादन को बढ़ावा देने का कार्य किये है। इसका तात्पर्य यह हुआ इस दशक तक मानव में से अधिकांश लोग कार्यकारी मानसिकता से रिक्त रहते है और संचालनकारी मानसिकता से संबद्ध रहते है या संबद्ध होने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। यही आज की देश धरती की जनमानसिकता का स्वरूप है। यह भी एक कारण रहा है आहार, आवास, अलंकार संबंधी उत्पादनों से एवं उसके प्रतिफलन मूल्यांकन **विनिमय** में और महत्वाकाँक्षी संबंधी वस्तुओं, उपकरणों के उत्पादनों के संतुलन स्थापित होना अभी तक नहीं हो पाया है। आज की स्थिति में कृषि उत्पादन का मूल्यांकन उपेक्षणीय दिखाई पड़ता है। उससे अधिक आकर्षक मांसाहारी पशु–पक्षी पालन में लोगों की दिलचस्पी बढ़ी है। उससे अधिक दिलचस्पी आवास संबंधी और व वस्त्र संबंधी उत्पादनों में होना पाया जाता है। इससे अधिक दिलचस्पी महत्वाकाँक्षी संबंधी वस्तुओं के उत्पादन में दिखाई पड़ती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनमानसिकता की प्रवृत्ति कृषि उपज कार्यों में कम होती गयी। अन्य कार्यो में अधिक होती गयी। यही संपूर्ण देश धरती की हालत है। व्यापार तंत्र लाभोन्मादी अर्थ तंत्र ऐसी स्थिति निर्मित करने का उत्तरदायी होना समझ में आया। अतएव इसमें सन्तुलनकारी जनचर्चा की आवश्यकता है ही। **सम्पूर्ण** अर्थतंत्र अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष पर निर्भर है। इसमें सभी राष्ट्र संस्थाएँ सहमत है। इसके बावजूद अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा (बहुमूल्य धातुएँ) उपयोगिताशील वस्तुओं का प्रतीक मुद्रा ही है। प्रतीक प्राप्ति नहीं होती दूसरे विधा से प्राप्तियाँ प्रतीक नहीं होती इस सूत्र से स्पष्ट हो जाता है कि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष बहुमूल्य धातुओं के

रूप में पहचाना गया है। यह केवल धन को धन से पाने की विधि से सम्मत होकर सामान्य मानव हर उपभोक्ता ऐसी प्रतीक मुद्रा प्रणाली से प्रताड़ित होने के लिए बाध्य हो चुका है। इसके निराकरण सहज जनचर्चा और जनमानसिकता की आवश्यकता है। सुदूर विगत से ही हम संघर्ष के लिए ही जनमानस को तैयार करने के क्रम में संघर्षात्मक जनवाद को अपनाते आये हैं। संघर्ष एक सर्वस्वीकृत वस्तु न होकर मजबूरी का ही प्रदर्शन है। जैसे युद्ध किसी के लिये वांछित घटना नहीं है फिर भी युद्ध की तैयारियाँ हर देश करता है। यह देश–देश के बीच मजबूरी की स्थिति है। हर व्यक्ति एक दूसरे के साथ व्यावहारिक संगीत को स्थापित करना चाहता है। शिक्षा–संस्कार(प्रचलित) कार्यक्रम में इसके लिए कोई निश्चित प्रावधान न होने के कारण हर व्यक्ति एक दूसरे से सशंकित मानसिकता को लिये हुए संघर्ष को अपनाने के लिए विवश होता जा रहा है। इसका जीता जागता साक्ष्य यही देखा जा रहा है पति–पत्नि दोनो अलग–अलग कोषालयों में खाता बनाए रखना चाहते है। इतना ही नहीं है घर में रखी हुई पति पत्नि की पेटियों में अलग–अलग ताला होना भी पाया जाता है। हर परिवार में घर के दरवाजे पर ताला लगाया ही जाता है। ताला लगाने का तात्पर्य मानव जाति के प्रति शंका–कुशंका ही है। हर व्यक्ति इस बात को स्वीकार कर चलता ही है कि चोर डाकू होते ही है। इसलिए ऐसा प्रबंध करके ही रखना ही है। कोषालयों को देखे वहाँ भी अभेद्द कक्ष बनाए जाते है – इसके बावजूद भी यह सब लूटे जाते हैं। ऐसी घटनाओं को बारम्बार सुना जाता है। इन सभी घटनाओं को याद दिलाने के मूल में एक ही मकसद है– हम मानव को अभी व्यवस्था में जीना है। ऐसी समझदारी विकसित नहीं हुई और उचित प्रणालियों को अपनाना दूर ही है इसलिए जनवाद में व्यवस्था रूपी व्यवहार चर्चा को पहल करना परम आवश्यक है ही। **(अध्याय:1, पृष्ठ नंबर: 14–16)**

- हर राज्य राष्ट्रीय पर्व दिवस की पावन बेला में राज्य की अखंडता सार्वभौमता, अक्षुण्णता का नारा अथवा जिक्र करते ही हैं। जबकि सन 2000 के पहले दशक तक ऐसा कोई ऐसा राज्य अथवा धर्म नहीं हुआ जिसका अन्य धर्मों के साथ विरोध ना हो, अथवा जो सबके लिए स्वीकार्य हो, ऐसा कोई धर्म ग्रंथ तैयार हो नहीं पाया। सभी अपने ढंग से श्रेष्ठता का दावा करते ही हैं। हर श्रेष्ठता की कसौटी है, जो सर्वमान्य स्वीकृत हो जिसके फलन में समाधान, समृद्धि, अभय सह अस्तित्व के रूप में प्रमाणित हो, स्वीकृत हो, और व्यवस्था के रूप में मानवीय शिक्षा– संस्कार, न्याय– सुरक्षा, परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य, **विनिमय कोष**, (लाभ हानि मुक्त) और स्वास्थ्य– संयम कार्य रूप में प्रमाणों का वर्चस्व वर्तमान हो। इस प्रकार अखंड समाज, सार्वभौमता का प्रयोजन स्पष्ट हो जाता है। इन प्रयोजनों के साथ ही निरंतरता का वैभव होना पाया जाता है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर:44)**

- भाषा अपने में बोली के रूप में आता ही है। हर बोली का अर्थ होना पाया जाता है। ऐसे अर्थ अस्तित्व में कोई वस्तु, घटना, फल, परिणाम के रूप में होना पाया जाता है। इसी के साथ क्रियाकलाप, व्यवहार प्रक्रिया भी भाषा के अर्थ के रूप में अस्तित्व में होता ही है। अस्तित्व में होना ही अर्थ व वस्तु है क्योंकि प्रयोजन, परिणाम, फल,

क्रिया, प्रक्रिया भी वस्तुगत विद्या ही है। ये सारे अर्थ, प्रयोजन के साथ ही सार्थक होना देखा गया है। सार्थकता तो सुस्पष्ट है। समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व ही वांछित उपलब्धि व वस्तु है। इसी के साथ सम्पूर्ण प्रकार के शिक्षा–संस्कार प्रक्रिया, न्याय सुरक्षा प्रक्रिया, उत्पादन–कार्य प्रक्रिया, **विनिमय**–कोष प्रक्रिया, स्वास्थ्य–संयम क्रियाकलाप के रूप शब्द का अर्थ समझ में आता है। जिससे मनवाकांक्षा अथवा मानव प्रयोजन प्रमाणित होने कीओर अपेक्षा मानव परंपरा में समाहित है ही। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर:45)**

- व्यवहार व्यवस्था का तात्पर्य अथवा समाज व्यवस्था का तात्पर्य मानव में, से, के लिए लक्ष्य समेत जीने की विधि, विधान, कार्य और व्यवहार ही है। व्यवहार विधि संबंधो के आधार पर मूल्यों के निर्वाह करने के दायित्व पर निर्भर किया जाता है। इसके लिए जो क्रमबद्धता अर्थात निर्वाह के लिए जो क्रम बद्धता होती है यही विधान है। इन विधि विधान के आधार पर सर्वप्रथम स्वस्थ मानसिकता की पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन विश्वास का मूल आधार होता है। स्वस्थ मानसिकता जागृत मानसिकता होती है। जागृत मानसिकता अनुभवमूलक मानसिकता है। जागृतिपूर्ण मानसिकता अपने में मानवीयता, देव मानवीयता, दिव्य मानवीयता को प्रमाणित करने के क्रम में उद्धत रहती ही है। मानवीयता, देव मानवीयता, में परिवार और समाज व्यवस्था मानवीयता पूर्ण आचरण सहित प्रमाणित होना बनता है। इसी क्रम में दिव्य मानवीयता समग्र व्यवस्था में भागीदारी पूर्वक स्वतंत्रता, स्वराज्य को प्रमाणित करने में सार्थक हो जाती है। स्वतंत्रता, स्वराज्य सह अस्तित्व विधि से वैभवित होते है। स्वराज्य व्यवस्था में स्वाभाविक विधि से मानवीय शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य, **विनिमय**–कोष, स्वास्थ्य–संयम कार्य और व्यवस्था अपने आप में निर्वाह होते है। ऐसे स्वराज्य व्यवस्था परिवार मूलक विधि से विश्व परिवार व्यवस्था तक दश सोपानीय विधि से सार्थक हो जाते है। हर स्थितियों में सामान्य रूप में 10–10 समझदार व्यक्तियों की एक सभा सम्पन्न होती है। एक परिवार में 10 समझदार व्यक्तियों होते हैं। ऐसे 10 व्यक्तियों में से एक व्यक्ति परिवार व्यवस्था के अतिरिक्त और सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी के लिए निर्वाचित रूप में प्रस्तुत होना बनता है। ऐसे व्यक्ति को हर परिवार में पहचान लेना एक स्वाभाविक प्रक्रिया रहता ही है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 83)**
- हर मानव स्वराज्य स्वतंत्रता चाहता ही है। स्वतंत्रता का स्वरूप यही है :–
  - स्वयं में विश्वास करने में स्वतंत्रता
  - श्रेष्ठता का सम्मान करने में स्वतंत्रता
  - प्रतिभा को लोकव्यापीकरण में स्वतंत्रता
  - व्यक्तित्व को प्रमाणित करने की स्वतंत्रता
  - उत्पादन में स्वावलंबी होने की स्वतंत्रता
  - व्यवहार में सामाजिक होने की स्वतंत्रता

  यही छ: विधा में स्वतंत्रता है इसमें निष्णात होने के फलस्वरूप:–
  - मानवीय शिक्षा कार्य में स्वतंत्रता

- न्याय सुरक्षा कार्य में स्वतंत्रता
- उत्पादन कार्य में स्वतंत्रता
- **विनिमय कार्य** में स्वतंत्रता
- स्वास्थ्य–संयम कार्य में स्वतंत्रता

स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होती है। इनमें हमें पारंगत होना है प्रमाणित होना है यही स्वतंत्रता का वैभव है। स्वतंत्रता के साथ स्वराज्य, स्वराज्य के साथ स्वतंत्रता अविभाज्य है। परिवार संबंध, मानव संबंध, प्राकृतिक संबंधो में न्याय और संतुलन प्रमाणित करने में स्वतंत्रता बनी ही रहती है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 91–92)**

- परिवार ही मूलत: सभा के रूप में, सभा ही परिवार के रूप में वैभवित होता है। निर्णय लेने के रूप में सभा कहलाता है। क्रियान्वयन करने के रूप में परिवार कहलाता है। इस प्रकार परिवार और सभा अविभाज्य होना पाया जाता है। सभा में संवाद अवश्यंभावी है। जिसमें एक दूसरे की मानसिकता, प्रयोजन, फल, परिणाम का बोध होना पाया जाता है। फलस्वरूप हर निर्णय सर्वसम्मति के रूप में सार्थक होना पाया जाता है। सर्वसम्मतियाँ परिवार में ही हो पाती है। सभी मुद्दे समझदारी से शुरूआत होते हुए प्रमाणीकरण तक लम्बाई चौड़ाई होना पाया जाता है। मानवत्व सहज समझदारी का मूल रूप सहअस्तित्व है, प्रमाणीकरण का स्वरूप सहअस्तित्व है। इस प्रकार से प्रमाणीकरण और समझदारी की वस्तु एक ही हुई। इसी बीच सभी कड़ियाँ जुड़ी हुई है। इन सभी कड़ियों में सहअस्तित्व की खुशबू बहती ही रहती है। इसमें कोई अलग विशेष प्रयास का स्थान भी नहीं है। स्वभाव गति में सहअस्तित्व की धारा प्रमाण तक अर्थात मानव द्वारा प्रमाण तक और मानव द्वारा किया गया प्रमाण अस्तित्व रूपी सहअस्तित्व तक जुड़ा ही रहता है। यही अनुभव की महिमा है। ऐसे अनुभव की निरन्तरता रहना स्वाभाविक है। इसलिए मानव परम्परा में अनुभवमूलक विधि, व्यवस्था, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, उत्पादन, **विनिमय**, स्वास्थ्य संयम इन सभी कार्यो में सहअस्तित्व का नजरिया स्पष्ट होता ही रहता है। यही मानव कुल का परम वैभव है। यही स्वराज्य और स्वतंत्रता की महिमा है। इस पहलू पर जो मुद्दा है स्वराज्य और स्वतंत्रता को प्रमाणित करना है या नहीं, यह संवाद का मुद्दा हो सकता है। इसे मानव कुल निरीक्षण परीक्षण करेगा ही। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 109)**

- दसो परिवार संस्कृति सभ्यता में एक रूपता को बनाए रखेंगे। कला और उत्पादन क्रियाओ के प्रोत्साहन से अपनी अपनी पहचान बनाए रखने में सतत स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होते जायेंगे। इस स्वायत्ता को पहचानने के उपरान्त सम्मिलित व्यवस्था दस परिवार में समाधान, समृद्धि का अनुभव होना, प्रमाणित होना, गवाहित होना बन जाता है। यही परिवार समूह सभा का वैभव होना पाया जाता है। इस वैभव के साथ यह भी स्वयं स्फूर्त होता है

इसकी विशालता की आवश्यकता है। जैसे परिवार में परिवार समूह व्यवस्था की प्रवृति स्वयं स्फूर्त होती है। इसी प्रकार परिवार समूह सभा ग्राम परिवार की विशालता दस के गुणन में होते हुए ग्राम सौभाग्य को प्रमाणित करने का उद्देश्य बन जाता है। क्योकि समूचे ग्राम में कम से कम 10 परिवार समूह सभा से निर्वाचित सदस्य होगी। दस परिवार सभा अपना सौभाग्य प्रमाणित किये रहना स्वाभाविक रहता है। इन आधारो पर हर परिवार समूह सभा से एक एक व्यक्ति का निर्वाचन होना सहज हो जाता है। इस स्वयं स्फूर्त निर्वाचन से जन प्रतिनिधि अपने दायित्व, कर्तव्य से सम्पन्न, सजग प्रमाणित रहता ही है क्योंकि समझदार परिवार से ही जन प्रतिनिधि की उपलब्धि होना पाया जाता है। इसके हर परिवार के समझदार होने की व्यवस्था, लोक शिक्षा और शिक्षा विधि से, मानवीय शिक्षा का बोध कराने की व्यवस्था सुचालित रहेगी ही। इस प्रकार से तीसरे सोपान के लिए दस जनप्रतिनिधि परिवार समूह सभा से निर्वाचित होकर ग्राम सभा के लिए उपलब्ध रहेंगे। इसके निर्वाचन की कालावधि को हर ग्राम सभा अपनी अनुकूलता के आधार पर अथवा सबकी अनुकूलता के आधार पर निर्णय लेगी। उस कालावधि तक मूलत: परिवार से निर्वाचित होकर परिवार समूह से निर्वाचित होकर ग्राम परिवार सभा कार्यक्रम में भागीदारी करने के लिए पहुँचे रहते है। इनके लिए कोई मानदेय या वेतन स्वीकार नहीं होता है। क्योंकि हर परिवार समृद्ध रहता ही है। समाधान समद्धि के आधार पर ही जनप्रतिनिधि निर्वाचन होना पाया जाता है। जब दसो जनप्रतिनिधि एकत्रित होते है ये सभी प्रतिनिधि हर कार्य करने योग्य रहते हैं। व्यवस्था कार्य में ऐसा कोई भाग नहीं रहेगा जिसे यह कर नहीं पायेगे। दूसरा हर कार्य के लिए समय और प्रक्रिया को निर्धारित करने में समर्थ रहेंगे। इस शोध के आधार पर मानवीय शिक्षा– संस्कार में पारंगत जैसे एक गॉव में प्राथमिक शिक्षा का आवश्यकता तो रहता ही है उसमें पारंगत रहेंगे। न्याय–सुरक्षा कार्य में पारंगत रहेंगे। उत्पादन–कार्य में पारंगत रहेंगे। **विनिमय** कार्य में पारंगत रहेंगे। स्वास्थ्य संयम कार्य में भी पारंगत रहेंगे। प्राथमिक स्वास्थ्य विधा में सभी पारंगत रहेंगे। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 112–113)**

- व्यवस्था की चौथी कड़ी हर परिवार में उत्पादन का एक कोष रहेगा। परिवार के उपयोग से अधिक जितने भी उत्पादन रहेंगे उनका **विनिमय** अड़ोंस–पड़ोंस में अर्थात ग्राम–समूह और ग्रामो में कर लेगी। इससे सामाग्री लाने और ले जाने की प्रक्रिया में काफी बचत हो जायेगी। जिससे ईंधन से लेकर श्रम तक, श्रम से लेकर यंत्रो तक बचत का प्रावधान है। इसे अच्छी तरह से समझदार परिवार का हर सदस्य समझ सकता है। परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन जितना भी रहेगा, वे सभी उत्पादनो को एक सम्मिलित कोष में एकत्रित किया जायेगा। यह कोष मूलत: वस्तुओं का ही कोष है। इसके साथ श्रम मूल्य का मूल्याँकन रहेगा। उसी के बराबर में हर गांव में कोषालयो के खाते में श्रम मूल्य के साथ प्रतीक मुद्रा का संख्या भी लिखकर रखी जायेगी। उसी के साथ हर परिवार को उसी ग्राम कोष से क्या–क्या वस्तुएँ समीचीन दिनो के लिए आवश्यक है वह सूची रहेगी। उसी कोष से अपेक्षित वस्तुओ को प्राप्त किया जायेगा। ग्राम **विनिमय** कोष से वस्तुएँ किसी दूसरे ग्राम कोष में जायेगी और दूसरी वाँछित वस्तुओं को लायेगी। तभी तक समीपस्थ बाजार में विक्रय कर आवश्यक वस्तुओ को क्रमवार लाने की व्यवस्था रहेगी।

लाभ हानि मुक्त विधि से वस्तुओ को ग्राम के सभी व्यक्तियों को उपलब्ध कराने की व्यवस्था रहेगी। इसी **विनिमय** कोष के कार्यक्रम में सभी प्रकार की आहार संबंधी वस्तुएँ यथा सब्जी, दूध, अनाज वगैरह तो रहेगी ही; कलात्मक जितनी भी उपज है, कृषि औजार, भारवाहन का औजार, गृहनिर्माण में उपयोगी वस्तुएँ, अलंकार संबंधी सभी उपज को कोषालय में एकत्रित किया जायेगा। कोषालय से बाजार में दूसरा स्वराज्य कोषालय में ले जाने की, ले आने की व्यवस्था ग्राम स्वराज्य सभा में रहेगी। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 116)**

- तीसरी कड़ी में उत्पादन कार्य एक महत्वपूर्ण भूमिका है ही। परिवार समूह सभा में प्रौद्योगिकी के पक्ष में जितनी भी जानकारी चाहिये उन सब में पारंगत रहना आवश्यक है। ये दसों सदस्य ग्रामोद्योग, लघु उद्योग विधा में पारंगत रहेंगे। जैसे वन खनिज की संतुलित व्यवस्था है। वैसे ग्राम उद्योग विधा में उद्योगों को स्थापित करेगें। जैसे पढ़ाई की सामग्री, अलंकार सम्बंधी सामग्री, गृह निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री, दूरगमन दूर दर्शन, दूरश्रवण सम्बंधी उपकरणों को निर्मित करने की व्यवस्था बनी रहेगी। ऐसा उत्पादन उन दस गाँव की आवश्यकता के अर्थ में रहेगा। इस उत्पादन कार्य में श्रम निवेश परस्पर दस गाँव के बीच ही बना रहेगा। इसका आदान प्रदान के लिए **विनिमय** कोष बनाना स्वाभाविक है। इस **विनिमय** कोष के साथ आदान–प्रदान का सम्बंध बनाए रखेगी। स्वास्थ्य संयम पाँचवी कड़ी है इस कड़ी में ग्राम सभा में जिसका स्वास्थ सुधार नहीं हो सका ऐसे लोगो के साथ लिए स्वास्थ्य–संयम केन्द्र रहेगा। प्राद्योगिकी कार्य से जितनी भी समाज गति के लिए साधन उपलब्ध हुए रहते है इसे हम समृद्ध कर रहे है ऐसे समृद्ध कोष से स्वास्थ्य केन्द्र को सम्पन्न बनाए रखने का केन्द्र कार्य करेगा। इस प्रकार स्वास्थ्य केन्द्र के लिए साधन भरपूर रहेगा। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:118–119)**
- बुनियादी तौर पर हर परिवार समझदार होने के आधार पर ही क्षेत्र परिवार सभा का वैभव भी प्रमाणित होने की संभावना बनी रहती है। हर मानव का उद्देश्य साम्य होने के आधार पर व्यवस्था सूत्र व्याख्या अपने आप स्पष्ट होती है। इसकी भी प्रथम कड़ी शिक्षा–संस्कार कार्यक्रम है। इन शिक्षा संस्कार कार्यो में यथावत एक विद्यालय रहेगा। इसके पहले की सीढ़ी में जो प्रौद्योगिकी बनी रहती है उसके योगदान पर उत्तर माध्यमिक शालाएँ और स्नातक शालाएँ क्रम विधि से कार्य करेगी। क्रम विधि का तात्पर्य हर इन्सान चाहे नारी हो, नर हो समझदार होने के लिए कार्य करेगा। समझदारी का किसी उँचाई इस क्षेत्र परिवार सभा के अन्तर्गत प्रमाणित होना स्वाभाविक है। ऐसे प्रमाण के लिए तमाम व्यक्ति प्रशिक्षित रहेंगे। इसी कारणवश स्नातक पूर्व और स्नातक विद्यालय किसी क्षेत्र सभा के अन्तर्गत संचालित रहेंगे। जिसमें मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद की रोशनी में ज्ञान, विज्ञान, विवेक सम्पन्न विधि से हर विद्यार्थी की मानसिकता में स्थापित करने का कार्य होगा। इसी क्रम में हर सभा के अधिकार में कुछ मझोले, बड़े प्रौद्योगिकी समायी रहेगी। इसके लिए बुनियादी रूप में आवश्यकीय सभी साधन क्षेत्र सभाओं के प्रौद्योगिकी सम्पदा से निर्मित किये रहेंगे। इस विधि से हर क्षेत्र परिवार सभा में मझोले और छोटे उद्योगो का उत्पादन प्रचुर होने की व्यवस्था रहेगी। प्रधानत: ये उद्योग आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन सम्बंधी

यंत्रो को बनाने के कार्य में प्रवृत्त होगा। **इसी सोपान में एक विनिमय कोष रहेगा जिसका सम्बंध इसके पहले के चारो सोपानों के विनिमय कोष से रहेगा।** (अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:119–120)

- चौथी कड़ी में **विनिमय** कोष कार्य सम्पादित होगा। मंडल परिवार सभा कोष से ग्राम परिवार सभा कोष तक का सम्बंध यथावत बना रहेगा। इसी प्रकार दूर संचार विधि से सभी कड़ियो का सम्बंध एक दूसरे से जुड़ा रहेगा। इसलिए सभी सोपान का अनुभव सुलभ रहता **है। (अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 121)**
- चौथी कड़ी **विनिमय** कार्य के बाबत है। जो उत्पादन हुआ रहता है उसे **विनिमय** कोष में संग्रह किये रहेंगे। इसके बावजूद ग्राम परिवार सभा से सभी सोपानों में संचालित **विनिमय** कोष अनुबंधित रहेंगे। यह अनुबंधन अपने आप में सदा–सदा के लिए अर्थात पीढ़ी से पीढ़ी के लिए प्रशस्त और अनुकूल होने के रूप में उत्पादन कार्य को साज सजावट गुणवत्ता से परिपूर्ण विपुल मात्रा में उपलब्ध कराने की व्यवस्था किये रहेंगे। सभी सोपानों के श्रम मूल्य के आधार पर, उपयोगिता के आधार पर वस्तु मूल्य, वस्तु मूल्य के आधार पर श्रम मूल्य का निर्धारण, मूल्यांकन, पहचान होता ही रहेगा इस विधि से श्रम मूल्य के आधार पर आदान प्रदान सुगम होना पाया जाता है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:123)**
- आठवीं सोपान में मुख्य राज्य सभा होगी। जिसके लिए मंडल समूह सभा से एक एक निर्वाचित सदस्य रहेंगे। जिनके आधार पर समूचे कार्यकलाप सम्पन्न होगे। जिसमें पहली कड़ी शिक्षा–संस्कार कार्य की गतिविधियों में सर्वोत्कृष्ट समाज गति, सर्वोत्कृष्ट उत्पादन कार्य, सर्वोत्कृष्ट न्याय–सुरक्षा कार्य, सर्वोत्कृष्ट उत्पादन कार्य, सर्वोत्कृष्ट **विनिमय** कार्य गति और सर्वोत्कृष्ट स्वास्थ्य–संयम का शोध संयुक्त रूप में होता रहेगा। ये सभी सोपानीय परिवार सभाओं के लिए पे्ररणा के रूप में प्रस्तुत होती रहेगी। इस विधि से अपनी गरिमा सम्पन्न शिक्षण कार्य, कर्माभ्यास पूर्ण कार्यक्रम को सम्पन्न करता रहेगा। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 123–124)**
- चौथी कड़ी **विनिमय** कोष होगी इसका आदान–प्रदान **विनिमय** कार्य को मुख्य राज्य परिवार सभा सम्पन्न करेगी। इसमें सभी आदान–प्रदान व्यवस्था **विनिमय** प्रक्रिया में ही समाहित रहेगी। इसमें सन्तुष्टि बिन्दु यही है कि सर्वाधिक उत्पादन हो जो आवश्यकता से अधिक हो, आवश्यकता का आंकलन सभी सोपानीय व्यवस्था में संबंध अनुबंध से पहचानने की व्यवस्था रहेगी। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 124)**
- इस समिति की चौथी कड़ी **विनिमय** कोष रहेगी। **विनिमय** कोष के अधिकार सम्पूर्ण यंत्र उपकरणों का संग्रह उनका विधिवत **विनिमय** करने का अधिकार रहेगा। इसी कोष के चलते और प्रगतिशीलता को पहचानने की अनुसंधान, शोध अवश्य सम्पादित होती रहेगी। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 125)**
- चौथी कड़ी **विनिमय** कोष है विश्व राज्य परिवार सभा में **विनिमय** के लिए कोई खास वस्तुएँ नहीं रह जाते है। आवश्यकता महसूस होने की स्थिति में विश्व मानव के लिए उपयोगी वस्तु को प्रस्तुत करेगा। इसकी सम्भावना दूरगमन, दूरदर्शन, दूरश्रवण सम्बन्धी वस्तुओ में परिष्कृति और गति हो सकती है। विश्व मानव परिवार सभा की गरिमा के अनुसार ज्यादा से ज्यादा ऊर्जा संतुलन सम्बन्धी औजारो के ऊपर ध्यान देने की आवश्यकता है।

विद्युत ऊर्जा, विकरणीय ऊर्जा यह दो प्रकार की ऊर्जाएँ अति महत्वपूर्ण है इनमें से विकरणीय ऊर्जा पर संतुलन का नजरिया विश्व मानव परिवार सभा में सुस्पष्ट रहने की आवश्यकता है। इसको कारगर बनाए रखना अर्थात सर्वसुलभ करने योग्य ज्ञान विवेक विज्ञान कर्माभ्यास सम्पन्नता को बनाए रखना है किसी भी सोपानीय आवश्यकता पड़ने पर शिक्षा शिक्षण की कर्माभ्यास की व्यवस्था को बनाए रखेंगे। यही **विनिमय** का प्रधान स्वरूप रहेगा। यह विश्व मानव परिवार सभा का महिमा मंडित स्थितियो के लिए अनुकूल है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 128)**

अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

(संस्करण: 2009)

- समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का तात्पर्य – मानवीय शिक्षा कार्य में, न्याय सुरक्षा कार्य में, परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य में, लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** कार्य में, स्वास्थ्य–संयम कार्य में भागीदारी करने से है। **(भूमिका)**
- मानव परंपरा तब तक भ्रमित रहना भावी है जब तक समुदाय और समुदायगत आवश्यकता की हठधर्मिता, सुविधा संग्रह की हठधर्मिता, भोग–अतिभोगवादी हठधर्मिता, आदमी को मूलतः दुखी मानने वाली हठधर्मिता, स्वार्थी, अज्ञानी और पापी मानने वाली हठधर्मिता, कोई एक समुदाय अपने को धर्मी अन्य को विधर्मी मानने की हठधर्मिता, द्रोह–विद्रोह–शोषण और युद्ध को एक आवश्यकता मानने वाली हठधर्मिता, व्यक्तिवादी (अहम्तावादी) मानसिकता के लिये सभी हठधर्मिता रहेगी। इसका निराकरण जागृति ही है। जागृति पूर्ण परंपरा मे ही अर्थात् जागृत शिक्षा–संस्कार, जागृत न्याय व्यवस्था और जागृत उत्पादन कार्य–व्यवस्था, जागृत लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** व्यवस्था और जागृत स्वास्थ्य संयम पीढ़ी से पीढ़ी को सुलभ होने से है। ऐसी जागृत पूर्ण परंपरा में पीढ़ी से पीढ़ी जागृत होते ही रहना एक अक्षुण्ण परंपरा है। ऐसी परंपरा में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सर्वसुलभ होने की कार्यप्रणाली, पद्धति, नीति क्रियाशील रहेगी फलतः विविध प्रकार से समुदायों को अपनाया हुआ भ्रम अपने आप विलय होना स्वाभाविक है। यह अनुभव मूलक जीने के क्रम में पाया जाने वाला वैभव है। **(अध्यायः, पृष्ठ नंबर: 21–22)**
- मानव परंपरा में यह विदित है कि मानव क्रियाकलाप के मूल में मानसिकता का रहना अत्यावश्यक है। मानसिकता विहीन मानव को मृतक या बेहोश घोषित किया जाता है। विकृत मानसिकता (मान्य, सामान्य मानसिकता के विपरीत) वाले मानव को पागल, असंतुलित अथवा रोगी के नाम से घोषणा की जाती है। यह सभी क्रियाकलाप वांछित, इच्छित और आवश्यकीय मानसिकता हर क्षण, हर पल, हर दिन शरीर यात्रा पर्यन्त प्रभावित होने के क्रम में ही राज्य मानसिकता, धर्म मानसिकता, व्यापार मानसिकता, अधिकार मानसिकता, भोग मानसिकता, सुविधा–संग्रह मानसिकता समीक्षित होता है। न्याय मानसिकता, धर्म (समाधान) मानसिकता, नियम मानसिकता, प्रामाणिकता पूर्ण मानसिकता, समृद्धि मानसिकता, सह–अस्तित्व मानसिकता, वर्तमान में विश्वास मानसिकता, परिवार मानसिकता, स्वायत्त मानसिकता, समाज मानसिकता, व्यवस्था मानसिकता, मानवीय शिक्षा–संस्कार मानसिकता, स्वास्थ्य संयम मानसिकता का मूल्यांकन किया जाना जागृत परंपरा में संभव होता है। अनुभवमूलक विधि से किया गया कार्य–व्यवहार विचार, अर्पण–समर्पण, सम्बंध–मूल्य–मूल्यांकन–उभय तृप्ति परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन, **लाभ–हानि मुक्त विनिमय**, प्रामाणिकता पूर्ण प्रबोधन (समझे हुए को समझाने, किये हुए को कराने, सीखे हुए को सिखाने) से ही ये सब सकारात्मक उपलब्धियाँ मानव परंपरा में सहज–सुलभ

होना पाया जाता है। यह सम्पूर्ण वैभव मानव परंपरा में अनुभवात्मक अभिव्यक्ति एवं मानसिकताएँ है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:26–27)**

- उक्त मुद्दों पर स्वीकृत अधिकारों के आधार पर किये गये समझौते बारंबार बदलते भी रहते है। इसी के साथ इस शताब्दी के अंतिम दशक तक में यह भी देखा गया जिस देश के पास सर्वाधिक समर शक्ति हाथ लगी है वह किसी के अधिकारों को भी हथिया लिया है और अपने अधिकार के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। इस शताब्दी के पहले भी इस प्रकार की नजीरें उपनिवेश के रूप में घटित होना ख्यात हो चुकी है। इस प्रकार कोई भी अपने सामरिक कूटनीतिक (अन्त:कलह को पैदा करो–राज करो) मानसिकता से ही पहले भी जो अपना देश नहीं है ऐसे देशों पर अधिकार पाने का प्रयोग किया है। यह राज्याधिकार मानसिकता मूलत: अपने स्वजनों, स्वजातियों और स्वदेशियों के सुविधा के लिये अन्य देश की सम्पदाओं को अपहरण कर, शोषण कर अपने देश में उपयोग करने के रूप में प्रयास करना देखा गया है। आदिकाल से ही सामरिक शक्ति सम्पन्न राज्य को विकसित राज्य, उस देश में निवास करने वालों को विकसित जनजाति होना मान्यता के रूप में लोकव्यापीकरण हुआ है जबकि युद्ध न तो विकास का आधार है, कड़ी है, न प्रक्रिया है। क्योंकि इससे अखण्ड समाज का एक भी सूत्र–व्याख्या, प्रयोजन प्रमाणित नहीं होता। जबकि मानवीयतापूर्ण पद्धति, प्रणाली, नीति से अखण्ड समाज का ही सूत्र रचना, व्याख्या व प्रयोजन नित्य समीचीन है। इससे वंचित होने का एक ही कारण है, भ्रमात्मक मानसिकता अथवा भय, प्रलोभन, आस्थाओं से ग्रसित मानसिकता ही है। अभी तक जितने भी झीना–झपटी युद्ध, विश्वयुद्ध हुए हैं, वे सब उक्त तीनों आधारों पर ही सम्पन्न हुए हैं। अतएव अनुभव मूलक विधि से ही मानवीयतापूर्ण पद्धति प्रणाली नीतिपूर्वक है। अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था, मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार सुलभता, न्याय–सुरक्षा सुलभता, उत्पादन–कार्य सुलभता, **विनिमय**–कोष सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता नित्य वैभव के रूप में इसी धरती पर वैभवित होना सहज है, नियति है, एक अपरिहार्यता है। ऐसी ऐश्वर्य सम्पन्न मानव परंपरा महिमा से ही अनेक राज्य, समुदाय सम्बन्धी अधिकारोन्माद समापन होना स्वाभाविक है। इसका समापन और मानवीयता का उदय अर्थात् जागृति ही मानव परंपरा में, से, के लिये मौलिक संक्रमण और परिवर्तन है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 37–38)**
- उत्पादन सुलभता अर्थात् परिवार में जितने भी परिवार मानव रहते हैं उन सबकी आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य होना परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था क्रम में सहज और सुलभ है। इस विधि से हर परिवार समृद्ध होने सहज समीचीनता सुलभ रहता ही है। इसी के साथ श्रम मूल्य के आधार पर **विनिमय** प्रणाली सर्वसुलभ होता ही है। इस विधि से लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** सम्पन्न होना सहज है। फलस्वरूप लाभ से होने वाली अहम्ता (अहंकार) और हानि से होने वाली पीड़ा से मुक्त होना स्वाभाविक रहता ही है। समाधान, समृद्धि, शांति और सुख का सूत्र होना और न्याय सुलभता के साथ ही वर्तमान में विश्वास होना देखा गया है। बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक यह प्रणाली मानव कुल में प्रभावी नहीं हुई है। इस स्थिति में भी यह अनुभव किया गया है स्वायत्त विधि से किया गया उत्पादन कार्य से समृद्धि का और सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति विधि से न्याय का प्रमाण

हमें सुलभ हो चुका है। अब रहा **विनिमय** प्रणाली अभी तक प्रचलित लाभोन्मादी के अंतर्गत ही हम लेन–देन जैसा उत्पादन और **विनिमय** मुद्रा के आधार पर करते हुए भी समृद्धि का अनुभव किया। इसलिये और कहा जा सकता है कि लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** प्रणाली प्रत्येक परिवार में, से, के लिये शांति कारक सूत्र होना देखा गया। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 39)**

- स्थिरता और निश्चयता का स्वरूपों को अध्ययन करने के लिये

  1) अस्तित्व

  2) परमाणु में विकास

  3) परमाणु ही व्यवस्था का आधार

  4) सह–अस्तित्व में व्यवस्था

  5) व्यवस्था सूत्र ("त्व") सहित व्यवस्था)

  6) पूरकता–उदात्तीकरण, रचना–विरचना

  7) पूरकता–उदात्तीकरण और संक्रमण

  8) परमाणु ही गठनपूर्णतापूर्वक जीवन पद (चैतन्य पद) में वैभवित होना

  9) जीवन में जीवनी क्रम

  10) बंधन सहित जीवन का कार्यक्रम और जागृतिक्रम

  11) जीवन ही जागृति पूर्वक क्रियापूर्णता में संक्रमण

  12) जीवन ही जागृतिपूर्णता पूर्वक आचरण पूर्णता में संक्रमण, प्रधान बिन्दु है।

इसमें से कोई भी बिन्दु यंत्र प्रमाण से प्रमाणित नहीं हो पाती जबकि हर मानव इसको समझ सकता है और व्यवहार में प्रमाणित कर सकता है। आदर्शवाद जिसका आधार आप्त पुरुषों के वचन हैं के आधार पर भी ये बारह बिन्दुओं में से कोई भी बिन्दु अध्ययन, बोध और प्रमाणगम्य नहीं हो पाते।

इसलिये अनुभव मूलक जागृतिपूर्ण विधि से सभी दिशा, कोण, परिप्रेक्ष्य, आयामों में व्यवहार प्रमाण मानव कुल में अति आवश्यक है। अनुभव व्यवहार में प्रमाणित होना अपरिहार्य है और हर प्रयोग व्यवहार में सार्थक होना उतना ही अनिवार्य है। इस प्रकार अनुभव मूलक जागृति विधि पूर्ण प्रमाण सूत्रों पर आधारित विचारों और विचार सूत्रों पर आधारित संप्रेषणा और वांग्मय शैलियों से इंगित 'वस्तु' के रूप में अर्थों–प्रयोजनों के सार्थकता के रूप में व्यवहार, उत्पादन, व्यवहार–न्याय, व्यवहार और न्यायिक **विनिमय**, व्यवहारिक स्वास्थ्य–संयम और व्यवहारिक शिक्षा–संस्कार परंपरा की आवश्यकता है। और उसकी आपूर्ति ही स्वाभाविक रूप में अग्रिम पीढ़ियों के सहस्त्राबदियों तक इस धरती पर मानव परंपरा सहज वैभव और उसकी सार्थकता रूपी जागृति और व्यवस्था को प्रमाणित कर सकते हैं। यह हर व्यक्ति के लिये सहज सुलभ हो सकता है। सार्थक रूप में जीने की कला अर्थात् जीने की हर तरीकों का जागृतिसूत्र के अनुरूप मूल्यांकित

होना संभव है। हर मानव में जागृति और मानवत्व प्रमाणित होने का अनुमान विद्यमान है ही। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 53–54)**

- स्वनारी/स्वपुरूष का प्रयोजन इस विधि और आधार से देखा गया है कि समाज रचना क्रम में एक नारी–पुरुष का शरीर संयोग मानव शरीर रचना अथवा संतान परंपरा के लिए आवश्यकता विधि से सहज कार्यकलाप विधि से भी आवश्यक घटना है। शरीर रचना विधि से यौवन ही इसका आधार है। कार्य विधि से मानव परंपरा बना रहना एक आवश्यकता है। प्रयोजन विधि से व्यवस्था में जीना एक अनिवार्यता है। व्यवस्था का तात्पर्य न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, **विनिमय** सुलभता ही है जिसका स्रोत मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार और स्वास्थ्य–संयम कार्यकलाप ही है। इसी से परिवार परंपरा होना भी सहज है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 161–162)**
- स्वराज्य व्यवस्था ही होता है, शासन नहीं होता। व्यवस्था के संदर्भ में पहले से उसके स्वरूप को स्पष्ट किया जा चुका है। परिवार मानव विधि से ही स्वराज्य वैभव का उदय होना देखा जाता है। हर परिवार में शरीर यात्रा के लिए शरीर पोषण, संरक्षण एवं समाज गति के लिये आवश्यकीय वस्तुओं को उत्पादित करने का भी कार्यकलाप समाया रहता है। सम्बन्ध–मूल्य–मूल्यांकन–उभयतृप्ति अथवा परस्पर तृप्ति विधि से व्यवहार और आचरण को प्रकट करना मूलत: परिवार का तात्पर्य है। ऐसे परिवार में उक्त तीनों प्रकार की आवश्यकताएँ बनी ही रहती है। इसके निर्वाह क्रम में उत्पादन कार्य की आवश्यकता बना ही रहता है। इसका तात्पर्य यह हुआ परिवार गति और समाज गति के लिए उत्पादन कार्य भी एक आवश्यकीय तत्व है। अस्तु, सम्बंध–मूल्य–मूल्यांकन और उभय तृप्ति विधि से परिवार और समाज सूत्र और आवश्यकता से अधिक उत्पादन–कार्य में परिवार के हर सदस्य का उपयोगिता–पूरकता विधि से भागीदारी परिवार व्यवस्था और समाज व्यवस्था के सूत्र में प्रमाणित हो पाता है। इसीलिये प्रत्येक परिवार में, से, के लिए न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, **विनिमय** सुलभता, स्वास्थ्य–संयम सुलभता नित्य सार्थक होना सहज है। जिसका स्रोत रूप में मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार और स्वास्थ्य–संयम कार्यकलापों के रूप में होना पाया जाता है। इस प्रकार व्यवस्था सार्वभौमता के दिशा में प्रशस्त होता है और अखण्ड समाज का सूत्र भी नित्य प्रभावी होना पाया जाता है। इसमें मूलसूत्र सह–अस्तित्व सूत्र ही है। यह अथ से इति तक अनुभवमूलक विधि से ही समझ में आता है। अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन होता है फलत: हर व्यक्ति स्वायत्त मानव, परिवार मानव, समाज व्यवस्था मानव के रूप में प्रमाणित होता है। यही अनुभव परंपरा की गरिमा और महिमा है। इसी का फलन मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा परिपूर्ति और तृप्ति व उसकी निरंतरता बन पाती है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 180–181)**
- हम यह पाते हैं कि जागृति सूत्र व्याख्या और प्रमाण सर्वशुभ के स्वरूप में ही वैभवित होता है। इस आशय को लोकव्यापीकरण करना भी सर्वशुभ कार्यक्रम का एक बुनियादी आयाम है। इसी सत्यतावश "अनुभवात्मक अध्यात्मवाद" एक प्रस्तुति है। हर मानव अपने कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता पूर्वक ही हर प्रस्तुतियों को परखना (परीक्षण करना) स्वीकारना या अस्वीकार करने के कार्यकलाप को करता है। मानव अपने में ही पाये जाने वाले

कल्पनाशीलता–कर्मस्वतंत्रतावश ही कार्यप्रणालियों की दिशाओं को परिवर्तित करता है। जैसे राजशासन राजकेन्द्रित दिशा से छूटकर लोककेन्द्रित दिशा के लिए तड़प रहा है। दूसरे भाषा में राजतंत्र से छूटकर लोकतंत्र की अपेक्षा बलवती हुई है। मान्यताओं पर आधारित (अथवा मान्यता केन्द्रित) रूढ़ियों के स्थान पर सार्थकता की ओर नजरिया को फैलाने की प्रवृत्तियाँ मानव में उदय हो चुकी है। मान्यता का दूसरा आयाम रहस्यमूलक गाथाओं के आधार पर मानव अपने कार्य नीतियों, व्यवहार नीतियों को निर्धारित रहने के लिए विवश रहते आया है। उसमें पुनर्विचार की आसार जैसे–समझदारी के आधार पर कार्य–व्यवहार, उत्पादन–**विनिमय**, स्वास्थ्य–संयम, शिक्षा, न्याय जैसी प्रवृत्तियों को सार्वभौमता की ओर दिशा परिवर्तन की आवश्यकता बलवती होती जा रही है। इससे पता चलता है–हम मानव एक ऐसा अभ्यास विधि चाहते हैं जो सर्वमानव में स्वीकृत हो, प्रयोजनशील हो। इन दो ध्रुवों के आधार पर ही मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा का अर्थ, प्रयोजन और प्रणाली, पद्धति, नीति स्पष्ट हो गये है। मानवापेक्षा अर्थात् मानव लक्ष्य जीवनापेक्षा अर्थात् जीवन मूल्य है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 221–222)**

- सामान्य व्यक्तियों के परस्परता में आजीविका संबंध प्रधान रहा है। इसी के साथ राज्य और धर्म शासन सूत्रों से अनुप्राणित संस्कृति, सभ्यता का धारक–वाहक होते हुए आज तक का इतिहास उक्त चार चौखटों से गुजरता हुआ देखने को मिलता है। यहाँ प्रासंगिक निष्कर्ष यही है, राज्य और धर्म शासन विधि से समाज रचना का सूत्र बनता ही नहीं है, न स्थापित हो पाया है। धर्म और राज्य के साथ, अभी तक जितने भी समुदायों के रूप में स्वीकृतियाँ है, वह सब संघर्ष परक ही है क्योंकि अभी तक समुदायगत राज्य और धर्म सर्व स्वीकृति होना संभव नहीं हो पाया। धर्म और राज्य शासन छल बल और प्रताड़ना जैसे औजारों के आधार पर ही गतिशील रहना देखने को मिल रहा है। इसका साक्ष्य यही है, धर्मशासन के अनुसार मानव प्रजाति सदा ही स्वार्थी अज्ञानी व पापी है। इससे छुटकारा दिलाना धार्मिक कार्यक्रम है। इस धरती पर जितने भी राज्य शासन है उनका मानना यही है देशवासी गलती–अपराध कर सकते हैं, पड़ोसी देश युद्ध कर सकते हैं इसलिये गलती को गलती से रोकना, अपराध को अपराध से रोकना और युद्ध को युद्ध से रोकना है यही सभी राज्यों का कार्यक्रम है। इस बीच जन सुविधा, जन कल्याण के नाम से जन, तन, धन, मन को लगाकर कल्याणकारी कार्य का दावा किया करते हैं यही अभी तक देखने को मिलता है। ऐसी जनकल्याणकारी कार्य दूरसंचार, यातायात, वाहन, सड़क, स्वास्थ्य, जनसुविधा व शिक्षण संस्थाओं के रूप में होना देखने को मिलता है। इस धरती में कलात्मक विज्ञान, तकनीकी, व्यापार की शिक्षा ही स्थापित हुई दिखती है। इस धरती में अभी तक न्याय पूर्ण व्यवहार और समाधानपूर्ण व्यवस्था मानवीयता पूर्ण शिक्षा में प्रवेश ही नहीं हो पाया। जबकि **विनिमय** व सार्वभौम व्यवस्था ही शिक्षा की सम्पूर्ण आत्मा है। ऐसी व्यवहार शिक्षा के लिये आवर्तनशील अर्थशास्त्र और व्यवस्था, व्यवहारवादी समाज शास्त्र और व्यवस्था, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान और व्यवस्था अनिवार्यतम स्थिति है। उत्पादन, प्रौद्योगिकी, तकनीकी को हर परिवार में समृद्धि सम्मत विधि से विकसित और स्थापित करने की आवश्यकता है। एक पीढ़ी समृद्ध होता है, आगे पीढ़ी को समृद्ध बनाने के लिये स्थापना कार्य को करते रहता है। समृद्धि के मूल में मानव व्यवहार ध्रुवीकृत होना आवश्यक

है। मानव व्यवहार सूत्र मानव की परिभाषा और मानवीयतापूर्ण आचरण के रूप में अनुप्राणित होना देखा जाता है। फलस्वरूप परिवार मानव के रूप में प्रमाणित होना पाया जाता है। शिक्षा–संस्कार से हर मानव में स्वायत्तता प्रमाणित होना ही इसकी सार्थकता है। इन तथ्यों को पहले भले प्रकार से स्पष्ट किया जा चुका है। यथार्थ यही है हर जागृत मानव सुख, शांति, संतोष को ही भोगता है और कोई चीज को भोगता नहीं है। सुविधा–संग्रह भी सुख, लक्षित होना सुस्पष्ट हो चुका है। इसी के साथ इसकी क्षणिकता–भंगुरता भी है, अतएव मानव इतिहास रूपी चारों सोपानों में कहीं भी सुख भोग की निरंतरता नहीं हो पायी। अब केवल परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था उसके पाँचों आयामों सहित कार्यप्रणाली में मानवापेक्षा सहित जीवनापेक्षा रूपी सुख, शांति, संतोष, आनंद भोगने में मिलता है। इसे भले प्रकार से हम देख पाये हैं। इस स्थिति के लिये हर व्यक्ति जागृत हो सकता है। इसी तथ्य के आधार पर सर्वसुख समीचीन है। सर्ववांछनीयता भी यही है। इस प्रकार जीवन भोक्ता है, सुख भोग है, भोग्य वस्तु व्यवस्था है। शरीर सहित मानव समाधान–समृद्धि अभय, सह–अस्तित्व सहज तथ्यों को भोगता है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 248–250)**

- जीना कम से कम तीन आयामों में स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होता है। तभी व्यवस्था में जीने का रस और सुख अपने आप मिलने लगता है। ऐसे तीन आयाम को न्याय सुलभता (न्याय प्रदायिता एवं पाने में सुलभता), उत्पादन सुलभता और **विनिमय** सुलभता पूर्वक ही हर परिवार व्यवस्था में जीता हुआ अनुभव करता है। ज्यादा से ज्यादा मानव, मानवीयतापूर्ण व्यवस्था में पाँचों आयामों में अपने भागीदारी को प्रमाणित करता है। यह उक्त तीनों के साथ शिक्षा–संस्कार सुलभता और स्वास्थ्य–संयम सुलभता है। इन्हीं व्यवहारिक आधारों के कारण मानव को जागृत और जागृतपूर्ण स्थितियों में देखा गया है। यह सबके लिये समीचीन है। इन्हीं दो स्थिति को क्रम से क्रियापूर्णता और आचरणपूर्णता का नाम दिया है। आचरण की विशालता में ही विशाल, विशालतर और विशालतम व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना सहज है। सम्पूर्ण प्रक्रिया का सफल स्वरूप समाधान और समृद्धि के रूप में मूल्यांकित होता है। अभय, सह–अस्तित्व मानवीयता पूर्ण आचरण का फलन है। इन तथ्यों को भली प्रकार से देखा गया है। इस प्रकार हर परिवार मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार पूर्वक स्वायत्त मानव और परिवार मानव के रूप में जीते हुए व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण प्रस्तुत करना सहज है। सहजता का तात्पर्य जागृति पूर्वक प्रमाण सहज गति ही सहज होना। जागृति नित्य समीचीन रहता ही है। यह परम्परा जागृत होने के उपरान्त ही सर्वसुलभ होता है। मानवापेक्षा, जीवनापेक्षा ही सार्वभौम अपेक्षा है। यही जागृति और कैवल्य का प्रमाण है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 259–260)**

व्यवहारवादी समाजशास्त्र

(संस्करण : 2009)

- विकल्पों का प्रधान बिन्दुओं को,

  1) चेतना विकास मूल्य शिक्षा–संस्कार तकनीकी शिक्षण कार्य में विकल्प,
  2) ज्ञान, दर्शन, विवेक, विज्ञान विधि विचारों में विकल्प,
  3) न्याय सुरक्षा विधान में विकल्प,
  4) स्वास्थ्य संयम कार्य में विकल्प,
  5) विचार व आचरण विधि में विकल्प,
  6) व्यवहार कार्य विधि में विकल्प,
  7) उत्पादन विधि में विकल्प,
  8) **विनिमय विधि** में विकल्प,
  9) उपयोग विधि में विकल्प।

  इन विकल्पों को हम भले प्रकार से पहचान चुके हैं। इस विश्वास से कि हम जिन विकल्पों को अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के सूत्र के रूप में समझ चुके हैं वह सर्वमानव में स्वीकृत है ही। जैसे प्रसंग के रूप में –

  1) उत्पादन कार्य में स्वायत्त होने के उद्देश्य सहित प्रत्येक परिवार उत्पादन कार्य में भागीदारी का निर्वाह करना। समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि।
  2) उत्पादन कार्य में नियोजित होने वाले श्रम मूल्य का पहचान उसका मूल्यांकनपूर्वक श्रम **विनिमय** प्रणाली को अपनाना। यह लाभ हानि मुक्त होना स्वीकार्य है।
  3) आवश्यकता से अधिक उत्पादन, उत्पादन से उपयोग, उपयोग से सदुपयोग, सदुपयोग से प्रयोजनशील विधियों को स्वीकारा गया है। उपयोग विधि से परिवार न्याय और व्यवस्था, सदुपयोग विधि से समाज न्याय और व्यवस्था, प्रयोजनीयता विधि से प्रामाणिकता और जागृति मानव कुल में लोकव्यापीकरण होने का सहज सुलभता को देखा गया।.....**(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:70–71)**

- मानव परिवार और कार्य

  स्वायत्त मानव ही अर्थात् स्वायत्त नर–नारी ही परिवार मानव के रूप में प्रमाणित होते हैं। परिवार का परिभाषा में वर्तमान होना ही स्वायत्त मानव का प्रमाण है। मानवीय शिक्षा–संस्कारपूर्वक ही हर विद्यार्थी स्वायत्तता सम्पन्न होता है। मानवीय शिक्षा का परिभाषा भी यही है। जब यह परिवार परिभाषा में प्रमाणित होते हैं तब सहज ही एक–दूसरे के साथ सम्बन्धों को पहचानते हैं, मूल्यों का निर्वाह करते हैं, परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करते हैं और श्रम मूल्य का भी मूल्यांकन करते हैं। सम्बन्ध निर्वाह, मूल्य निर्वाह का मूल्यांकन करते हैं, उभयतृप्ति पाते

हैं। यही परिवार मानव का प्रमाण है। यही परिवार मानव के रूप में अनेक परिवार सभा यथा परिवार समूह सभा, ग्राम परिवार सभा के रूप में संतुलन निर्वाचन विधि से कार्यरत होना पाया जाता है। परिवार मानव, परिवार समूह, ग्राम परिवार और विश्व परिवारों तक सभी परिवार सभा क्रम से, (क्रम से का तात्पर्य विशालता और समग्रता की ओर) परिवार समृद्धि सम्पन्नता का व सभा विधि व्यवस्था का धारक–वाहक रूप में समाज और व्यवस्था को अभिव्यक्त करते हैं। हर परिवार, परिवार समूह, ग्राम परिवार, ग्राम परिवार समूह विधि से विश्व परिवार तक संतुलन का स्वरूप मानवीय शिक्षा–संस्कार न्याय, उत्पादन, **विनिमय**, स्वास्थ्य संयम, मानवीय शिक्षा सुलभता पूर्वक संबंध में सहज स्वायत्त रहना पाया जाता है। हर सुलभता में उभयता एक अनिवार्य स्थिति है। उभयता का तात्पर्य मानव की परस्परता; नैसर्गिक अर्थात् जल, वायु, धरती और सूर्य उष्मा का परस्परता सदा रहता ही है। मानव के परस्परता में संबंधों के साथ ही नैसर्गिक उपलब्धियों अर्थात् उत्पादन होता है। क्योंकि नैसर्गिक संयोग से ही हर उत्पादन होना देखा जाता है। ऐसा उत्पादन, **विनिमय** के लिये वस्तु होना पाया जाता है। और व्यवहार के लिये हर स्वायत्त मानव; संबंध दृष्टा, मूल्य दृष्टा होना पाया जाता है। जानने, मानने, पहचानने की विधि से संबंधों का पहचान होना पाया जाता है। उसकी स्वीकृति के फलन में जीवन सहज अक्षय शक्ति, अक्षय बल रूपी ऐश्वर्य; मूल्यों के रूप में एक दूसरे के लिये स्वीकार्य योग्य रूप में आदान–प्रदान होता है। यही मानव संबंध और मूल्यों का तात्पर्य है। ऐसे संबंधों को सात रूप में पहचाना गया है। और मूल्यों को क्रम से जीवन मूल्य को चार स्वरूप में, मानव मूल्य छह स्वरूप में, स्थापित मूल्य नौ स्वरूप में, शिष्ट मूल्य नौ स्वरूप में और वस्तु मूल्य दो स्वरूप में समझ सकते हैं। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर: 91–92)**

- सर्वमानव सहज रूप में ही समान है। इसीलिये मानव धर्म सर्वमानव में समान है। यह तथ्य समझ में आता है। सर्वतोमुखी समाधान का तात्पर्य ही है स्वयं व्यवस्था में और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का निर्वाह करना। इसी विधि से मानव अपने में चिरआशित स्वराज्य को पाकर सुख, शांति, संतोष और आनन्द को पाकर; समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व को प्रमाणित करता है। यही मुख्य रूप में मानव का चाहत भी है। मूलत: धर्म एक शब्द है। हर शब्द किसी का नाम है। धर्म शब्द से इंगित वस्तु मानव जागृति और उसका प्रमाण रूपी प्रामाणिकता, सर्वतोमुखी समाधान ही है। इसका स्वीकृत स्वरूप ही सुख, शांति, संतोष, आनन्द है। इसका दृष्टा पद में भी सुख, शांति, संतोष आनन्द है। इसका दृश्य रूप ही व्यवस्था है। वह परिवार सभा से विश्व परिवार सभा तक गुँथे हुए स्वरूप में दिखाई पड़ती है। व्यवस्था सहज अभिव्यक्ति ही अथवा फलन ही समाधान, समृद्धि, अभय और सह–अस्तित्व है। इस प्रकार जीवन सहज लक्ष्य, मानव सहज अर्थात् अखण्ड समाज सहज लक्ष्य, संगीत, विन्यास है, यही समाधान के रूप में निरूपित होती है। सह–अस्तित्व और अनुभव में संगीत है। यही आनन्द के नाम से विख्यात होता है। न्याय, उत्पादन, **विनिमय**, स्वास्थ्य–संयम, शिक्षा–संस्कार में होने वाला अनुभव ही सर्वतोमुखी समाधान है। यह मानव सहज जागृति की अभिव्यक्ति और संप्रेषणा है। सम्पूर्ण मानव अपने परिवार सहज आवश्यकता से अधिक कार्य करता है इसके फलन में समृद्धि का अनुभव होता है। यह भी समाधान है। हर

परिवार सभा से विश्व परिवार सभा तक सम्बन्धों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन और उभयतृप्ति पाने की विधि जागृतिपूर्वक सम्पन्न होता है। यह निरन्तर समाधान है। लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** प्रणाली जागृति सहज मानव की अपेक्षा है। इस विधि से **विनिमय कार्य** का क्रियान्वयन स्वयं समाधान है। स्वास्थ्य संयम, स्वाभाविक रूप में जीवन जागृति को शरीर के द्वारा मानव परंपरा में प्रमाणित करने योग्य शरीर है। यही स्वास्थ्य का निश्चित स्वरूप है। जागृतिपूर्ण परंपरा में सर्वमानव अपने स्वास्थ्य को स्वस्थ बनाये रखने का उपाय और स्रोत बना ही रहता है। यह स्वयं में समाधान है। प्रत्येक मानव मानवीय शिक्षा–संस्कार पूर्वक स्वायत्त मानव, परिवार मानव, विश्व परिवार मानव के रूप में प्रमाणित हो पाता है। यह सर्वतोमुखी समाधान है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर: 114–115)**

- स्वतंत्रता :– प्रत्येक मानव अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था (मानव धर्म) में भागीदारी निर्वाह करने, कराने एवं करने के लिये मत देने में स्वतंत्र है। अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था की अक्षुण्णता मानवीय शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य, **विनिमय–कोष**, सुलभता सहित है जिसका क्रियान्वयन दस सीढ़ी में होता है। 1.'परिवार' सभा, 2.'परिवार समूह' सभा, 3. 'ग्राम परिवार' सभा, 4. 'ग्राम समूह' परिवार सभा, 5. 'ग्राम क्षेत्र' परिवार सभा, 6. 'मंडल' परिवार सभा, 7. 'मंडल समूह' परिवार सभा, 8. 'मुख्य राज्य' परिवार सभा, 9. 'प्रधान राज्य' परिवार सभा और 10. 'विश्व राज्य'। **(अध्याय:5, पृष्ठ नंबर: 126)**
- परिवार सभा सभ्यता – सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन विधियों से सम्पन्न अनुभव ही सभ्यता की प्रतिष्ठा है। परिवार ही अपने परिपक्वता विधि से सभा के स्वरूप में प्रमाणित होता है। इस प्रकार सभा ही सभ्यता की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन स्रोत है। सभा स्वरूप क्रम से दस सीढ़ियों में स्पष्ट है। मूलत: परिवार सभा ही अन्य स्तरीय सभाओं की रचना–कार्य और प्रवृत्तियों को प्रवर्तित करता है। परिवार में समाधान, समृद्धि और परस्परता में विश्वास, प्रतिष्ठा के रूप में अनुभव होना ही, उसकी विशालता की आवश्यकता स्फूर्त होती है। इसी क्रम में परिवार के अन्य कार्य सूत्र भी आशय के रूप में सूत्रित रहता ही है। धरती में अकेले व्यक्ति या परिवार नाम की स्वरूप की व्यवस्था नहीं है। अनेक व्यक्ति, अनेक परिवार के रूप में मानव प्रकाशित है। इसलिये परस्पर परिवार में विश्वास का सूत्र फैलना एक आवश्यकता रहता ही है। इसी क्रम में परिवार समूह, ग्राम मुहल्ला परिवार होना एक साधारण विधि है। इसमें परिवार का आशित **विनिमय**, न्याय, स्वास्थ्य–संयम, शिक्षा–संस्कार अपेक्षा के रूप में ही रहता है। क्योंकि परिवार आवश्यकीय सभी सामान्य आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा सम्बन्धी वस्तुओं को निर्मित नहीं करता। आवश्यकता से अधिक एक–दो वस्तुओं को अवश्य ही उत्पादित करता है एवं **विनिमय** पूर्वक अन्य वस्तुओं में बदलने की आवश्यकता बनी रहती है। यह एक आवश्यकीय प्रक्रिया है। इसे दूर–दूर तक सूत्रित करना एक आवश्यकता है। मानव जागृतिपूर्वक ही सामाजिक होना पाया जाता है। यह शिक्षा–संस्कारपूर्वक ही होता है। इसका परीक्षण, सर्वमानव के साथ होना सहज है। इस विधि से संबंधों को विशाल और विशालतम रूप देना आवश्यकता है। इसी विधि से ग्राम परिवार सभा से विश्व परिवार सभा तक सम्बन्ध रचना मानव का चिर कामना नैसर्गिकता

सहज विधि से स्पष्ट हुआ है। इस विधि से धरती के मानव न्याय, जो अखण्ड समाज के अर्थ को ध्वनित करता है, के साथ समाधान जो सार्वभौम व्यवस्था को ध्वनित करता है, के साथ जागृति जो इन दोनों को संतुलित रूप में प्रमाणित है, के साथ निरन्तर जीने की कला को, अनुभव बल को, विचार शैली को सर्वथा परिपूर्ण रूप में जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना संभव है। जागृत परंपरा ही शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, **विनिमय**–कोष, उत्पादन–कार्य और स्वास्थ्य–संयम के रूपों में हर सभा के परस्परता में, हर सभा में प्रमाणित होता है और उसका मूल्यांकन होना एवं उसकी तृप्ति सर्वसुलभ होना ही मानवीयतापूर्ण आचार संहिता का परम लक्ष्य है। अस्तु:–

1. मानव का मौलिक आधार, उसके विशालता का स्वरूप, आवश्यकता का उद्गमन, सार्थकता का स्वीकार हर मानव में है ही।
2. हर मानव प्रमाणित होना ही चाहता है।
3. सार्थक होने का सहज स्रोत मानवीय शिक्षा–संस्कार ही है। और
4. परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में ही सम्पूर्ण प्रमाण प्रमाणित होता है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 133–135)**

- परिवार की पहचान, उसकी विशालतमता ही समाज का स्वरूप है। व्यवस्था अपने में न्याय, उत्पादन, **विनिमय**, स्वास्थ्य– संयम और शिक्षा–संस्कार सुलभता ही है और समाज अपने– आप में सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति विधि ही जागृति का साक्ष्य है। इसी उभय तृप्ति का नामकरण ही 'न्याय' है। यह सभी परिवार में हो सकता है, आवश्यकता है, यह सर्वविदित है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:136)**
- स्वधन :– प्रतिफल, पारितोष और पुरस्कार से प्राप्त धन।

  प्रतिफल रूपी स्वधन श्रम नियोजन और सेवा के प्रतिफल के रूप में देखा गया। श्रम नियोजन की नित्य संभावना और स्वरूप को सामान्य आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा सम्बंधी वस्तुओं को पाने की विधि से किया गया कुशलता, निपुणता, मानसिकता और विचार सहित किया गया हस्तलाघव कार्यकलाप। परस्पर सेवा का तात्पर्य यही है बिगड़े हुए वस्तु, यंत्रों, मानव तथा जीव शरीरों को सुधारना। इस विधि से श्रम नियोजन और सेवा दोनों ही स्पष्ट है। इन क्रिया कलाप के प्रतिफल में सामान्य आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुएं उपलब्ध होना ही सम्पूर्ण प्रतिफल कार्यकलाप है।

  तथ्य :– मानवीयतापूर्ण विधि से अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का होना प्रधान लक्ष्य है। इसी विधि में मौलिक अधिकार और इसी क्रम में मौलिक अधिकार का स्पष्टीकरण एक दूसरे को इंगित होता है, स्वीकृत होता है, जाँचने की विधि स्वयं स्फूर्त होता है। इसी क्रम में स्वायत्त मानव के वैभवों का परीक्षण जैसा– (1) स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने का अधिकार, प्रक्रिया और प्रमाण, (2) प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलनाधिकार प्रक्रिया और प्रमाण और (3) व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलंबनाधिकार, प्रक्रिया

और प्रमाण एक दूसरे को समझ में आता है। समझ में आने का तात्पर्य जानने–मानने–पहचानने–निर्वाह करने से है। ऐसे मानव ही परिवार मानव और व्यवस्था मानव के रूप में प्रमाणित होना सहज है। यही सम्पूर्ण स्वत्व स्वतंत्रता और अधिकारों का वैभव और विस्तार है। इस प्रकार कर्तव्य दायित्व ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में अधिकार है।

इससे यह स्पष्ट हो गया है कि हर मानव चाहे नर हो चाहे नारी हो, स्वस्थ रहने के मापदण्ड अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व क्रम में स्वायत्त मानव के रूप में स्पष्ट किया जा चुका है। जिनमें ही मानवत्व रूपी स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार को स्वयं स्फूर्त विधि से प्रमाणित होना पाया गया है। ऐसा स्वायत्त मानव स्वस्थ मानव परिवार परंपरा में, व्यवहार परंपरा में, उत्पादन परंपरा में, **विनिमय** परंपरा में, स्वास्थ्य–संयम परंपरा में, मानवीयता पूर्ण शिक्षा–संस्कार परंपरा में और न्याय–सुरक्षा परंपरा में भागीदारी को निर्वाह करना ही समग्र व्यवस्था में भागीदारी का तात्पर्य है। यह समझदार परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि से समाज रचना परिवार से ग्राम परिवार, ग्राम परिवार से विश्व परिवार तक और ग्राम स्वराज्य सभा से विश्व परिवार सभा तक इन सभी आयामों में भागीदारी का सूत्र, व्याख्या अग्रिम अध्यायों में स्पष्ट हो जाएगी। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 157–159)**

- तीसरे प्रकार से स्वधन, पुरस्कार के रूप में प्राप्त धन। मानवीयतापूर्ण परंपरा में श्रेष्ठता का सम्मान होना स्वाभाविक है। श्रेष्ठता का मूल्यांकन मानवीयतापूर्ण परंपरा में व्यवस्था में भागीदारी, स्वायत्त मानव, परिवार मानव और समग्र व्यवस्था में भागीदारी उसकी गति और श्रेष्ठता पुरस्कृत होना स्वाभाविक है। इसी के साथ–साथ स्वास्थ्य–संयम कार्यों में श्रेष्ठता, उत्पादन–कार्यों में श्रेष्ठता, **विनिमय–कार्यों** में श्रेष्ठता, मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार कार्यों में श्रेष्ठता का मूल्यांकन और पुरस्कार मानव परंपरा में सहज है। इन किसी भी विधाओं का मूल्यांकन और पुरस्कार मानव परंपरा में सहज है। इन किसी भी विधाओं में श्रेष्ठता का सम्मान ग्राम परिवार सभा से विश्व परिवार सभा तक किसी स्तरीय परिवार सभा में श्रेष्ठ व्यक्ति का सम्मान किया जाना मानव परंपरा का ही सम्मान है। इस विधि से प्राप्त वस्तु स्वधन में गण्य होता है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 165–166)**
- परिवार विधि में हर सम्बोधन प्रयोजन से लक्षित होना पाया जाता है। और हर प्रयोजन हर व्यक्ति के अपेक्षा सहित सम्बोधन का वस्तु है।

परिवार क्रम में

सम्बोधन	**प्रयोजन**
1. पिता –	संरक्षण
2. माता –	पोषण
3. पति–पत्नी –	यतित्व–सतीत्व
4. पुत्र–पुत्री –	अनुराग

5. स्वामी (साथी) – दायित्व

6. सेवक (सहयोगी) –कर्तव्य

7. गुरू – प्रामाणिकता

8. शिष्य – जिज्ञासु

9. भाई–बहन–मित्र – जागृति (समाधान–समृद्धि)

सभा क्रम में

सम्बोधन **प्रयोजन**

सभा में – जागृति में

भाई–मित्र–बन्धु–बहन – समानता के अर्थ में

समितियों में सम्बोधन

गुरू–शिष्य – शिक्षा–संस्कार विधा में

आचार्य–आवेदक – न्याय–सुरक्षा विधा में

पितामह, पिता–माता, पुत्र–पुत्री – उत्पादन–कार्य सम्बन्ध

आयु के अनुसार – **विनिमय–कोष सम्बन्ध**

सहयोगी – साथी – स्वास्थ्य–संयम विधा में। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 182–183)**

- मानव सहज सभी सम्बन्ध पूर्णता को प्रतिपादित करने के लिये अनुबंधित रहने के कारण ही है। हर सम्बन्धों का पहचान के साथ ही मूल्यों का उद्गमन जीवन सहज रूप में व्यक्त होता है। इसका मूल स्रोत जीवन अक्षय शक्ति, अक्षय बल सम्पन्न रहना ही है। यह भी हम समझ चुके हैं कि जीवन ही शरीर को जीवन्त बनाए रखता है और जीवन अपने आशयों को शरीर के द्वारा मानव परम्परा में, से, के लिये अर्पित करता है। पहला–समझदारी को प्रमाणों के रूप में अर्पित करता है और प्रबोधनों के रूप में अर्पित करता है। प्रबोधन किसी को बोध के लिए अर्पित होता है और प्रमाण स्वतृप्ति और तृप्तिपूर्ण परम्परा के आशय में घटित होती है। यह जीवन जागृति की स्वाभाविक क्रिया है। जागृत मानव ही व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण होना पाया जाता है। व्यवस्था स्वयं में न्याय, उत्पादन और **विनिमय** सुलभता ही है। इन्हीं की निरन्तरता के लिये स्वास्थ्य–संयम और मानवीय शिक्षा–संस्कार एक अनिवार्य स्थिति है। इस प्रकार व्यवस्था का पाँच आयाम होता है। इन्हीं आयामों में भागीदारी, व्यवस्था में भागीदारी का तात्पर्य है। इस प्रकार हर जागृत मानव (परिवार मानव) सहज रूप में व्यवस्था को प्रमाणित करता है। यही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का आधार और अभिव्यक्ति है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:190–191)**

- परिवार सम्बन्ध, मानव सम्बन्ध, समाज सम्बन्ध ये सब आवश्यकतानुसार उपयोग करने का नाम है। सबका निर्देशित अर्थ, चिन्हित अर्थ अखण्ड समाज ही है। अखण्ड समाज का पहचान, लक्ष्य, प्रयोजन, प्रणाली, पद्धति, नीतियों के समानता से है। मानव लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व होना ही है। प्रयोजन व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी है। मानवीयतापूर्ण पद्धति न्याय, उत्पादन, **विनिमय**, स्वास्थ्य–संयम और शिक्षा–संस्कार में पूरकता प्रणाली परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था प्रणाली और नीति तन, मन, धन रूपी अर्थ के सुरक्षा हैं, यही मानव का मौलिक अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन है। अस्तित्व नित्य प्रकाशमान होने के कारण अस्तित्व में हर वस्तु का प्रकाशित रहना स्वाभाविक है। सम्पूर्ण अभिव्यक्ति, संप्रेषणा और प्रकाशन अस्तित्व सहज ही है। अस्तित्व स्वयं ही नित्य अभिव्यक्ति व संप्रेषणा है। मानव अस्तित्व में अविभाज्य वर्तमान व अभिव्यक्ति है। सभी अभिव्यक्तियाँ सभी अवस्थाओं में अभ्युदय के अर्थ में ही व्यक्त हैं। इस प्रकार अस्तित्व स्वयं में ही प्रकाशित, अभिव्यक्त व सम्प्रेषित है। इस क्रम में यह समझ में आता है कि अस्तित्व निरंतर स्पष्ट व प्रकाशमान है। अस्तित्व ही नित्य संप्रेषणा है जो नित्य समाधान नित्य व्यवस्था है। अस्तित्व ही नित्य व्यक्त अभिव्यक्त हैं क्योंकि अस्तित्व सदा–सदा स्थिर, शाश्वत है, नित्य वैभव है। इन्हीं तथ्यों से यह भी ज्ञात होता है कि अस्तित्व में, से, के लिये कोई रहस्य व कोई अवरोध एवं संघर्ष नहीं है। विरोध नहीं है, विद्रोह नहीं है, विपन्नता नहीं है। बड़े–छोटे के रूप में कुंठा–निराशा नहीं है। युद्ध व शोषण नहीं है। ये सभी नकारात्मक पक्ष मानव के द्वारा अपनाया हुआ भ्रमित परम्परा का देन है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:194–195)**
- जागृत परम्परा में मानव ही सम्पूर्ण आयाम, कोण, दिशा व परिप्रेक्ष्य सर्व देशकाल में जागृत शिक्षा यथा अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन रूपी जीवन ज्ञान सहज परम ज्ञान, अस्तित्व दर्शन सहज सह–अस्तित्व रूपी परम दर्शन, मानवीयतापूर्ण आचण रूपी परम आचरण, ज्ञान–विज्ञान विवेक सम्मत समाधानपूर्ण शिक्षा–संस्कार सुलभ होता है। जागृति सहज मानवीयतापूर्ण आचरण और मानव सहज परिभाषा के अनुरूप शास्त्रों का प्रणयन स्वाभाविक रूप में ही है। आवर्तनशील अर्थशास्त्र अपने सह–अस्तित्व सहज सूत्रों के प्रतिपादन सहित व्याख्यायित हुआ है। यह परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन के लिये अपनाया हुआ उत्पादन कार्य में नियोजित श्रम, उत्पादन सहज उपयोगिता के आधार पर उसका मूल्यांकन फलस्वरूप श्रम **विनिमय** प्रणाली स्थापित होती है। यह समझ के करो विधि से सर्वसुलभ हो जाता है। इसी क्रम में यह व्यवहारवादी समाजशास्त्र भोगोन्मादी समाज शास्त्र के स्थान पर प्रस्तावित किया है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:195–196)**
- इस विश्लेषण से यह बात स्पष्ट हो गई कि जीवन जागृतिपूर्वक ही हर मानव स्वायत्तता पूर्वक परिवार मानव होने का प्रमाण सहित स्वयं में व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का निर्वाह करता है। जीने की कला दूसरे विधि से मानवीयतापूर्ण आचरण विधि मानव सहज परिभाषा क्रम से ही मानवीयता का व्याख्या सहज ही सार्थक हो जाता है। सार्थक होने का तात्पर्य अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था क्रम में भागीदारी है। अखण्ड समाज सूत्र परिवार विधि से सार्थक होना पाया जाता है। परिवारों का स्वरूप और विशालता को दश सोपानों में स्पष्ट किया गया है।

इसी के साथ–साथ दश सोपानों में सभा–स्वरूप व्यवस्था कार्य, कर्तव्य, दायित्व को स्पष्ट किया है। परिवार क्रम में मूल्य, चरित्र, नैतिकता अविभाज्यता को सहज ही स्पष्ट किया जा चुका है। दश सोपानीय समाज रचना और व्यवस्था गति अपने–आप में एक दूसरे को संतुलित करने के अर्थ से हम अभिहित होते हैं। जैसे:– परिवार– जिसका सूत्र सम्बन्ध मूल्य, मूल्यांकन, उभय–तृप्ति और परिवारगत उत्पादन–कार्य में पूरकता फलस्वरूप परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन है। परस्पर परिवार व्यवस्था में **विनिमय** एक अनिवार्य कार्य है। इसी के साथ सीखा हुआ को सिखाने, किया हुआ को कराने, समझा हुआ को समझाने का कार्य प्रणाली सदा–सदा जागृत मानव पंरपरा में वर्तमान रहता ही है। इसी क्रम में सर्वमानव सुख, सर्वमानव शुभ और सर्वमानव समाधान सर्वसुलभ होता ही रहता है। इस स्थिति को पाना सर्वमानव का अभीप्सा है। अतएव सुलभ होने का मार्ग सुस्पष्ट है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:196–197)**

- मानव सहज जागृति प्रभाव विशालता की ओर गतिशील होना स्वाभाविक है। जैसा मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार एक परिवार में परिवार का विरासत न होकर सम्पूर्ण विश्व मानव का स्वत्व होना पाया जाता है। इसीलिये मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार सार्वभौम होना सहज है। इसी प्रकार न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य, **विनिमय**–कोष, स्वास्थ्य–संयम क्रियाकलाप भी सार्वभौम होता ही है। इन पाँचों आयाम का सार्वभौम रूप में वर्तमान होना ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का द्योतक है। दाम्पत्य संबंध ऐसी व्यवस्था में भागीदारी का संकल्पोत्सव होना पाया जाता है, ऐसे संकल्प का प्रमाण समाधान और समृद्धि का स्वरूप ही है। यही परिवार मानव का लक्ष्य और आवश्यकता है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:229–230)**
- व्यवस्था संबंध – व्यवस्था में जीने का प्रमाण परिवार में होता है। समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज क्रम में व्यवस्था संबंध को पहचानने की आवश्यकता उत्पन्न होती है। जैसा परिवार में न्याय–सुरक्षा का प्रमाण संबंध, मूल्य, मूल्यांकन तन, मन, धन का सदुपयोग–सुरक्षा विधि से प्रमाणित हो जाता है। यही परिवार मानव का मानवीयतापूर्ण परिवार का परिभाषा है। इसीलिये परिवार में परस्पर हुई पिता–पुत्र, भाई–बहन, मित्र, गुरू, शिष्य, पति–पत्नि, माता–पिता इन संबंधों में संबोधन सहज संबध चिन्हित होता है और उत्पादन–कार्य में भागीदारी प्रमाणित रहता ही है। हर परिवार में वस्तुओं का उपयोग, सदुपयोग भी साक्षित रहता है। **विनिमय**–कार्य के लिये और विशाल संबंध की आवश्यकता बनी रहती है। एक परिवार की आवश्यकता जितने प्रकार की वस्तुओं की बना रहता है उनमें से कुछ वस्तुओं को किसी भी परिवार में उत्पादित होना स्वाभाविक है **विनिमय**पूर्वक एक परिवार में उत्पन्न वस्तु को दूसरे परिवार प्राप्त कर लेना ही वस्तुओं का आदान–प्रदान का तात्पर्य है। इस विधि से **विनिमय** एक आवश्यकीय क्रियाकलाप है; यह स्पष्ट हो जाता है। व्यवस्था के आयामों में **विनिमय** एक आयाम है। व्यवस्था रूप में ही संपूर्ण आयाम सहित परंपरा स्पष्ट होती है यथा मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार परंपरा अन्य सभी चार आयामों के लिये स्त्रोत और संतुलन सूत्र होना पाया जाता है। प्रत्येक आयाम में मानव अपने संतुलन पूर्वक कार्य–व्यवहार करने के क्रम में हर सूत्र व्याख्यायित हो जाता है। यथा मानवीय शिक्षा–संस्कार में ये देखने को मिलता है

कि यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता रूप में समझा हुआ को संस्कारों के रूप में; किया हुआ को प्रमाणों के रूप में दूसरी भाषा में जिया हुआ को अथवा जीने की विधि को प्रमाण के रूप में देखा जाता है। समझने का जो कार्यक्रम है जिसमें समझाने वाली क्रिया समाहित रहती हैं यही संस्कार का कारण है यह अध्ययन पूर्वक सम्पन्न होना पाया जाता है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:233–234)**

- हर परिवार में संपादित किया गया उत्पादित वस्तुओं को **विनिमय**–कोष विधि से गतित होना एक अनिवार्य स्थिति है। संपादन का तात्पर्य पूर्णता और उसकी निरंतरता के अर्थ में अर्पण, समर्पण सहज उपयोगी वस्तुओं से है। **विनिमय** का कार्यरूप और गतिरूप किसी एक वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु को प्राप्त कर लेने का क्रियाकलाप है। ऐसे क्रियाकलाप के लिए भंडारण एक आवश्यकीय प्रक्रिया है। हर ग्राम में उसकी आवश्यकता के अनुरूप भंडारण विधि को, प्रक्रिया को और तादाद को पहचानते हुए **विनिमय** कार्य को गति प्रदान करना भी व्यवस्था और व्यवस्था गति का एक आयाम होना पाया जाता है। ऐसे **विनिमय** कार्य में स्वाभाविक रूप में आधार सूत्र श्रम नियोजन के आधार पर वस्तु मूल्य को पहचानने की विधि से श्रम मूल्य का ही **विनिमय** करना मानव सहज होना देखा गया है। इसी क्रम में संपूर्ण मानव परिवार **विनिमय** कार्य को निर्वाह करने का अवसर, आवश्यकता और उसका प्रयोजन सार्थक होता है। **विनिमय कार्य सार्थक होने का तात्पर्य लाभ–हानि मुक्त विधि से प्रत्येक वस्तु श्रम मूल्य सहज विधि से मूल्यांकन सहित आदान–प्रदान होने से है।** प्रत्येक मानव अपना शोषण नहीं चाहता है, इस प्रकार सर्वमानव शोषण नहीं चाहता है। जागृति पूर्वक लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** व्यवस्था सार्थक होता है। यह मानव परंपरा में मौलिक अधिकार है। हर परिवार अपने आवश्यकता से अधिक उत्पादन, श्रम–मूल्य, मूल्यांकन और उभय तृप्ति विधि से **विनिमय** कार्य को संपन्न करना अर्थात् वस्तु का आदान–प्रदान करना मौलिक अधिकार पाया जता है। **विनिमय** कार्य में प्रधान सूत्र श्रम मूल्य का मूल्यांकन करना ही है। **विनिमय** सुलभता का अर्थ में सभी प्रकार के सार्थक आवश्यकीय वस्तुएं कोष के रूप में सतत्–सतत् बनाए रखना कोष कार्य का गति है। कोष **विनिमय** को संतुलित बनाये रखता है। फलस्वरूप श्रम मूल्य का मूल्यांकन कला मूल्य और उपयोगिता मूल्य के आधार पर संपन्न होना पाया जाता है जिसके आधार पर हर परिवार अपने समृद्धि को व्यक्त करने में समर्थ हो पाता है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:239–241)**
- परिवार में स्वायत्त मानव का ही भागीदारी होना जागृत परम्परा सहज गतिविधि है। इसका संपूर्ण गति व्यवस्था सहज पाँचों आयामों में होना पाया जाता है। परिवार मानव ही व्यवस्था और समाज का बीज रूप होना देखा गया। स्वायत्त मानव जागृति पूर्ण परंपरा सहज शिक्षा–संस्कार का फलन के रूप में होना देखा गया। स्वायत्त मानव परिवार मानव के रूप में प्रमाण है। परिवार मानव ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का बीजरूप है यही मुख्य बिन्दु है। इसी आधार पर मौलिक अधिकारों का प्रयोग सर्व सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा, प्रकाशन, अनुभव, बोध, व्यवहार और व्यवस्था के रूप में स्पष्ट हो जाता है। इसी के साथ यह भी स्पष्ट हो जाता है कि राज्य और धर्म एक दूसरे के पूरक होते हैं; समाज ही धर्म का स्वरूप है; व्यवस्था ही राज्य है; धर्म का संतुलन राज्य से, राज्य का

संतुलन धर्म से होना स्पष्ट किया जा चुका है। धर्म का स्वरूप ही अखण्ड समाज है। अखण्ड समाज सूत्र से सूत्रित परिवार है। इस विधि से जागृत परिवार सूत्र से सूत्रित अखण्ड समाज है। इसी प्रकार परिवार अपने में एक व्यवस्था, प्रसन्नता और उत्साह का मुखरण है। ऐसी मुखरण समाधान–समृद्धि का फलन होना देखा गया है। निरंतर उत्साह समाधान और उसकी निरंतरता के आधार पर बहता रहता है। इसीलिये जागृत मानव इसे व्यक्त करने योग्य होता है। यह मौलिक अधिकार का ही मूल रूप है।

1. श्रम मूल्य के आधार पर **विनिमय**–कोष कार्यक्रम परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का अंगभूत होना; जीवन जागृति पूर्ण विधि का ही अभिव्यक्ति है।

2. जीवन जागृति पूर्वक ही श्रम मूल्य का मूल्यांकन हर उत्पादित वस्तुओं का उपयोगिता, कला मूल्य के आधार पर निर्धारित होता है।

3. श्रम नियोजन श्रम **विनिमय** प्रणाली में प्रतीक वस्तुओं या मूल्यों का दखलांदाजी बनाम हस्तक्षेप नहीं होती। दूसरे विधि से इसकी आवश्यकता ही शून्य हो जाती है।

4. प्रतीक मुद्रा में भ्रमित मानव का कल्पना भ्रमपूर्वक किया गया सभी निर्णय स्थिर नहीं हो पाते इसीलिये प्रतीक मुद्रा और वस्तु का मूल्य ही अस्थिर हो जाता है।

5. प्रतीक मुद्रा के साथ ही अमानवीयता वश द्रोह–विद्रोह, शोषण, तस्करी की घटनाएं हो पाती हैं। प्रतीक वस्तु कोई धातु होना देखा गया प्रतीक मुद्रा, धातु मुद्रा और पत्र मुद्रा के रूप में देखा गया। यह दोनों प्रकार की मुद्रा प्रणाली में स्थिरता निश्चयता सिद्ध नहीं हो पाती इन सब कारणों से मानव कल्पित होना स्पष्ट हो जाता है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:241–242)**

- जागृति सहज कार्यक्रम दायित्व और कर्तव्य के आधार पर ही सुयोजित हो पाता है। ऐसे सुयोजन परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था के रूप में सर्वसुलभ होता है। जागृति पूर्वक जीने की कला ही सुयोजना का साक्ष्य है। परिवार मूलक स्वराज्य–व्यवस्था में व्यवस्थापूर्वक ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना पाया जाता है। इसी सत्यवश, यही सत्यता मानव परंपरा में सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व के रूप में प्रमाणित होता है; जिसका अक्षुण्णता सहज होना पाया जाता है। मानव का अभीष्ट सदा–सदा से ही और सदा–सदा के लिये शुभ ही शुभ होना देखा गया है। ऐसा सार्वभौम शुभ अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था रूपी कार्यक्रम ही है। ऐसा कार्यक्रम स्वाभाविक रूप में ही जागृति सहज शिक्षा–संस्कार विधि से स्पष्ट हो जाती है। मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार अपने–आप में अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन, मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) के रूप में स्पष्ट हो जाता है। यही सह–अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्नता सहित होने वाले अध्ययन, अवधारणा, अनुभव है। सह–अस्तित्व में अनुभव के आधार पर ही अखण्ड समाज, सार्वभौम

व्यवस्था का प्रमाण मानव परंपरा में ही प्रमाणित होना समीचीन है। यही जागृति का द्योतक है। मानवीयतापूर्ण परंपरा का प्रमाण मानवीय शिक्षा–संस्कार सुलभता, न्याय–सुरक्षा सुलभता, **विनिमय**–कोष सुलभता, उत्पादन–कार्य सुलभता और स्वास्थ्य–संयम सुलभता ही है। इन्हीं पाँच आयामों के योगफल में संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था अपने–आप प्रमाणित होता है और अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप और उसकी निरंतरता बना ही रहता है। ऐसे भागीदारी में दायित्व, कर्तव्य का प्रमाण हर मानव में, से, के लिए सहज सुलभ होता है। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:263–264)**

- दायित्व बोध और उसके अनुरूप कार्य प्रणालियाँ; सम्बन्ध, मूल्य–मूल्यांकन, उभयतृप्ति, संतुलन और उसकी निरंतरता के रूप में वर्तमान होना पाया जाता है। इसी के साथ तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा भी दायित्वों में समाहित रहता ही है। कर्तव्य का स्वरूप आवश्यकता से अधिक उत्पादन, लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** कार्यों में भागीदारी के रूप में सम्पन्न होना देखा गया है। दायित्वों और कर्तव्यों को निर्वाह करने के क्रम में स्वास्थ्य–संयम एक अनिवार्य क्रियाकलाप है जिसको आगे अध्याय में स्पष्ट किया गया है।इस प्रकार दायित्व बोध के लिये जानना, मानना और कर्तव्य बोध के लिये पहचानना, निर्वाह करना एक अनिवार्य स्थिति है। इस स्थिति में कार्यरत, व्यवहाररत रहना ही जागृत परंपरा सहज महिमा है। परंपरा सहज महिमा ही मानव संतान में, से, के लिये अत्यधिक प्रभावशाली होता है। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:264–265)**
- समारोह

  मानव परंपरा ज्ञानावस्था की अभिव्यक्ति संस्कारानुषंगीय विधि से जागृति पूर्णता को प्रमाणित करने वाला होने के कारण सभी उत्सवों में सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति, तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करना समीचीन रहता ही है। जिसकी अक्षुण्णता होना देखने को मिलता है। अतएव अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के लिये पूरक है, सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज के लिये पूरक होना देखा गया है। इसी क्रम में अखण्ड समाज का अध्ययन और अवधारणा पूर्वक अनुभव सहज होना देखा गया है। इसके लिये अर्थात् संस्कार के लिये उत्सव के प्रकारों को स्पष्ट किया जा चुका है। सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप सभा विधि से अखण्ड समाज का स्वरूप परिवार विधि से चरितार्थ होना देखा गया है। सभी सभाओं में समारोह सम्पन्न होना एक आवश्यकता बना रहता है। इन समारोह की प्रधान अभिव्यक्ति सभा और सभा से अनुशासित पाँच–पाँच समितियों का कार्यकलाप उसकी स्थिति–गति का मूल्यांकन और सभा का उद्देश्य के आधार पर सफलताओं का आंकलन मूल्यांकन हर्ष–ध्वनियों के साथ समारोह का उत्साह और प्रसन्नता का मूल्यांकन किया जाता है। हर सभा का अपने उत्सव को व्यक्त करने का निश्चित उपलब्धियों के साथ होना ही देखा गया है जैसे परिवार में समाधान; समृद्धि; परिवार समूह में न्याय, उत्पादन में समारस्यता; ग्राम मुहल्ला परिवार सभा में न्याय, उत्पादन **विनिमय** कार्यों में संतुलन और सामरस्यता समाधान का आधार बना रहता है। यही नित्य

उत्सव का स्वरूप है। हर समारोह में, कम से कम ग्राम परिवार सभा में समारोह का सभी सम्भावनाएँ समीचीन रहता ही है।

ग्राम–मुहल्ला सभा से मनोनीत–अनुशासित पाँच समितियों का कार्यरत रहना स्वराज्य व्यवस्था का वैभव है। इन वैभव के सफलताओं को देखने सुनने के लिये पूरे ग्राम मुहल्लावासी को उत्सुक रहना आवश्यक है। ग्राम सभा से निश्चित नियंत्रित विधि से एक–एक समिति का मूल्यांकन कार्यक्रम का तौर–तरीका जो अपनाये गये थे उसके आधार पर सफलता का समारोह सम्पन्न करना आवश्यक रहता ही है। इसका समयावधि ग्राम सभा के समयानुसार सम्पन्न होना व्यवहारिक है। इसी के अनुसार न्याय–सुरक्षा समिति के सफलताओं को समीक्षा कर पूरा ग्रामवासियों को अवगाहन कराने का कार्य सम्पन्न किये जाने के रूप में देखने को मिलता है। इससे सम्पूर्ण ग्रामवासी न्याय–सुरक्षा सुलभ होने में विश्वस्त एवं आश्वस्त होने का अवसर समारोह समय में स्वाभाविक रूप में देखने को मिलता है। इसी उमंग के साथ भविष्य के प्रति भरोसा करना स्वाभाविक होता है। वर्तमान तक की सफलता भविष्य के प्रति आश्वस्तता का हर संगम स्थिति, गति, उत्साह और प्रसन्नता के स्वरूप में ही प्रमाणित होना देखा गया है। इसी प्रकार उत्पादन–कार्य समिति, **विनिमय**–कोष समिति, स्वास्थ्य–संयम कार्य समिति, मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार समितियों का वर्तमान तक के सफलता, भविष्य में आश्वस्त होने का सफल योजना के अवगाहन तक का समारोह प्रसन्नता में अभिभूत होना, स्वाभाविक है। ऐसी अभिभूति के साथ ही हर्ष ध्वनि सफलता का कीर्ति गायन, भविष्य में सफलता का आकांक्षा, सम्भावना सहित कर्तव्यों और दायित्वों की स्वीकृति और उसका उद्गार सहित हर्ष ध्वनि गीत–संगीत का वातावरण बनाया जाना समारोह–वैभव का प्रतिष्ठा रहेगा। अस्तु, ग्राम सभा बनाम पाँचों समितियों सहित सफलता का आंकलन अग्रिम योजनाओं का प्रकाशन समारोह का सारतत्व रहेगा। यही व्यवस्था मूलक समारोहों की महिमा है। इसी प्रकार हर स्तरीय समितियों में समारोह कार्य सम्पन्न होना स्वाभाविक रहेगा। यह विश्व परिवार पर्यन्त व्यवहारान्वयन होना देखने को मिलता है। सम्पूर्ण मानव इस धरती मे समारोह और उत्साहपूर्वक संतुष्ट होते हैं। इसकी नित्य समीचीनता जागृति परंपरा पर्यन्त बनी ही रहेगी। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:291–293)**

- हर उत्पादन मानव में निहित, मानव सहज निपुणता, कुशलता, पांडित्य सहित सहज मानसिकता पूर्वक शरीर के द्वारा प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन करने के फलस्वरूप वस्तुओं में उपयोगिता और कला मूल्य स्थापित होता है। यही उत्पादन का अथ–इति है। ऐसे उत्पादित वस्तुओं का **विनिमय** इसलिये आवश्यक हुई कि हर परिवार में निश्चित कुछ वस्तुओं का उत्पादन करना समीचीन, संभव और क्रियान्वित रहता है। जबकि हर परिवार को जो उत्पादन सहज सम्पन्न रहते हैं उन वस्तुओं से भिन्न अन्य वस्तुओं की आवश्यकता बनी रहती है। इसलिये **विनिमय** प्रणाली है। **(अध्याय:10, पृष्ठ नंबर:303–304)**
- **विनिमय–कोष का मूल्यांकन** :– **विनिमय**–कोष अपने परिभाषा के स्वरूप में **विनिमय** कार्य सम्पन्न करता हुआ और **विनिमय** के लिए आवश्यकीय सभी वस्तुओं को विशेषत: सामान्य–आकांक्षा संबंधी सभी वस्तुओं को श्रम

मूल्य के आधार पर आदान–प्रदान करता हुआ एक क्रियाकलाप है। इसमें हर स्तरीय कोषों में उन–उन स्तरीय आवश्यकता के अनुरूप वस्तुएँ उपलब्ध रहता ही है। उन–उन स्तरों में यह समितियाँ लाभ–हानि मुक्त विधि से **विनिमय** करता है। इसका उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशील रूप प्रदान करना हर परिवार का ही कार्यकलाप होना देखा गया है। इस मुद्दे पर अर्थात् उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता सहज क्रियाकलापों को पहले स्पष्ट किया जा चुका है।

विनिमय–कोष लाभ–हानि मुक्त श्रम–मूल्यों का मूल्यांकन विधि से **विनिमय** कार्य को सम्पादित करता है, इसलिये **विनिमय**–कोष के स्वत्व में कोई संग्रह, किसी भी प्रकार का संग्रह देखने को नहीं मिलता है क्योंकि अस्तित्व में संग्रह का साक्ष्य नहीं है। अस्तित्व में पूरकता का गवाही है, त्व सहित व्यवस्था का गवाही है। अस्तित्व में जीवन जागृति साक्ष्य है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर **विनिमय**–कोष में लाभ की आवश्यकता नहीं रह जाती है क्योंकि सार्वभौम व्यवस्था और अखण्ड समाज के सूत्र में, से, के लिये और इसे नित्य सफलीभूत बनाने का प्रणाली–पद्धति–नीति में, से के लिये मानव सहज विज्ञान और विवेक सम्मत विचारों के रूप में कार्यरत रहना देखा गया है। इसी क्रम में जीवन जागृति पूर्वक यह अभीष्ट समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व के रूप में प्रमाणित हो जाता है। यह अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का ही महिमा है। अन्य किसी विधि में मानव सहज अभीप्सा रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व सर्वसुलभ होता ही नहीं। अखण्ड समाज विधि से अर्थात् मानव जाति धर्म, दीक्षा, स्वायत्तता में समानता के आधार पर ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्रित होना देखा गया है। इसलिये सार्वभौम अपेक्षा, सर्वमानव से अपेक्षित अपेक्षा सबको मिलना ही स्वाभाविक है। इसलिये हम स्वाभाविक रूप में मानव सहज दिशा को जागृति के रूप में जीवन सहज आवश्यकताओं को सुख, शांति, संतोष, आनन्द के रूप में, मानव सहज लक्ष्य को आवश्यकताओं को समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व के रूप में पाने की सम्पूर्ण विधि स्वयं अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था ही होना पाया जाता है। अतएव **विनिमय**–कोष में आवर्तनशील विधि प्रमाणित होने के आधार पर विधि, नीति और प्रक्रिया में सामरस्यता हो जाता है। हर परिवार समृद्धि का अनुभव करता है इसलिये आवर्तनशीलता में समान गति प्रदान करने के लिये समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व उद्देश्य होना देखा गया है। इसमें हर परिवार में इन **विनिमय**–कोष में भागीदारी करने का प्रसन्नता और उत्साह बना ही रहता है। यह सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का एक आयाम होना सबको विदित रहता है। इसमें निष्ठा होना हर परिवार के लिये सहज है। हर ग्राम, मुहल्ला, सभा में गतिशील सभी समितियों में मानवीयता पूर्ण परिवार में, से स्वयं स्फूर्त सेवाएँ अर्पित होना स्वाभाविक है। क्योंकि हर परिवार मानव समृद्धि का अनुभव करता ही है। इस प्रकार **विनिमय**–कोष समिति में भागीदारी निर्वाह करने वाले या अन्य समिति में भागीदारी निर्वाह करने वाले परिवार मानव को प्रतिफल की आवश्यकता ही नहीं रहती। इसी के साथ–साथ यह भी बोध, अवधारणा और अनुभव सहज रहता है कि अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करना ही जागृत मानव सहज जागृति विधि से निष्ठा सतत् प्रभावशील रहता है। अतएव सार्वभौमता क्रम में भागीदारी

नित्य उत्सव होना पाया जाता है। हर जागृत मानव में नित्य उत्सव सहज रूप में प्रमाणित होता ही है। यह तथ्य पहले स्पष्ट हो चुका है कि स्वायत्त मानव शिक्षा–संस्कार पूर्वक विधिवत् दीक्षित होना, सर्वसुलभ होना यह जागृत मानव परंपरा का देन के रूप में विदित हो चुकी है। यही प्रधान रूप में शिक्षा–संस्कार पूर्वक सार्वभौमता को प्रमाणित करता है। यही स्वायत्तता को प्रमाणित करता है। इसी के साथ–साथ यह भी सर्वेक्षित तथ्य है कि हर मानव संतान में स्वायत्तता की आवश्यकता शैशव अवस्था से ही प्रकाशित रहता है क्योंकि हर मानव संतान न्याय का अपेक्षा रखता ही है, सही कार्य–व्यवहार करना चाहता ही है और सत्यवक्ता होने में निष्ठा प्रदर्शित करता ही है। यही बुनियादी अभीप्सा का द्योतक है। बुनियादी अभीप्सा की तुष्टि बिन्दु जागृति, प्रामाणिकता के रूप में सह–अस्तित्व रूपी परम सत्य बोध सहित प्रमाणित होना देखा गया है। सार्वभौमता (अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था) में भागीदारी से ही सही कार्य–व्यवहार करने का प्रमाण होना देखा गया है। समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व सुलभता के रूप में न्याय सुलभता के वैभव को देखा गया है। इस प्रकार शैशव अवस्था से ही जीवन सहज अभीप्सा प्रकाशित होता ही है। इसके लिये आवश्यकीय स्रोत, प्रक्रिया, प्रणाली और नीति मानव परंपरा में सुलभ होने के आधार पर ही हर मानव संतान का अभीप्सा सफलीभूत होना सहज और समीचीन है। इस प्रकार स्वायत्त मानव, परिवार मानव अपने परिभाषा में ही सार्वभौमता में भागीदारी का स्वरूप ही है। अतएव ऐसी भागीदारी दायित्व और कर्तव्य में परिगणित होने के कारण हर व्यक्ति भागीदार होने का अर्हता को बनाये रखता है। ऐसी भागीदारी का स्वयं स्फूर्त होना ही जागृति की महिमा है। इस प्रकार **विनिमय** कोष कार्य में भागीदारी के फलस्वरूप समाधान और उसकी निरंतरता का प्रमाण होना स्वाभाविक है। यही व्यवस्था में भागीदार होने का अथवा समग्र व्यवस्था में भागीदार होने का फल है अथवा वैभव है। इस विधि से भी **विनिमय** कोष आवर्तनशील विधि के साथ अपने को सफल बनाना सहज सिद्ध होता हैं।

विनिमय–कोष में गाँव के हर परिवार सदस्य होने के कारण गाँव (ग्राम) का प्रत्येक परिवार पाँचों समितियों के प्रति मूल्यांकित करने में स्वतंत्र रहेंगी ही क्योंकि परिवार मूलक स्वराज्य गति में प्रत्येक परिवार वर्तमान में विश्वस्त, भविष्य के प्रति आश्वस्त रहना आवश्यक है। इसका स्रोत व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रभाव ही है। ऐसी प्रभावोत्पादी अर्हता को प्रमाणित करने में, से, के लिये मानव स्वतंत्र है।

व्यवस्था में जीना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना एक आवश्यकीय कार्यकलाप रहते हुए व्यवस्था में जीने से सभी लोग संतुष्ट रहते हैं। इनमें से कुछ लोग परिवार प्रेरणा के आधार पर ही समग्र व्यवस्था में भागीदारी के लिए तत्पर हो जाते हैं। इस विधि से सम्पूर्ण परिवार ही कृत, कारित, अनुमोदित विधि से समग्र व्यवस्था में भागीदार होना प्रमाणित होता है। **(अध्याय:10, पृष्ठ नंबर:306–310)**

आवर्तनशील अर्थशास्त्र

(संस्करण: 2009)

- इसके पहले अभी तक व्यक्तिवादी समुदायों के रूप में गुजरी बीती मानव परंपरा में तत्कालीन विधियों से मानव को ही स्वीकृत अर्थ का स्वरूप, परिवार में आबंटन, अथवा, बंटन समुदायों में **विनिमय**, आवश्यकता, संभावना, स्रोत और मानव से किया गया प्रवृत्तियों और कार्यों का सामान्य स्पष्टीकरण को उचित समझकर उसे भी प्रस्तुत किए हैं। **(अध्याय:1, पृष्ठ नंबर: 3)**
- उक्त स्वरूपों में अनुप्राणित राज्य, धर्म और जनता अथवा राज्यवासी समुदाय अपने–अपने कल्पनाशीलता–कर्मस्वतंत्रता को भी प्रयोग करते रहे। उक्त सभी प्रकार के उत्पादनों के क्रम में ग्रामोद्योग, कुटीर उद्योगों की स्थापना हुई। इसके आरंभिक काल में वस्तु **विनिमय** प्रणाली प्रभावशील रही। राजगद्दी के कर–विधि कार्यक्रम के साथ ही वस्तु–**विनिमय** प्रणाली में भी लाभार्जन के लिए प्रवृत्त हुआ। यही लाभोन्माद का प्रारंभिक चरण माना जा सकता है। इसके उपरान्त विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार के वस्तु **विनिमय** के स्थान पर मुद्रा प्रचलन स्थापित हुई। आरंभिक समय में धातु मुद्रा का प्रचलन स्थापित होना इतिहास में भी अंकित है। धातुओं पर लिखे गये संख्यात्मक मूल्यों के आधार पर वस्तुओं का **विनिमय** आरंभ हुआ। यहाँ उल्लेखनीय घटना यही है 'इसके पहले वस्तु **विनिमय** प्रणाली जब स्थापित हुई तब धातु मुद्रा चलन के साथ भी श्रम–मूल्य का मूल्यांकन, उसकी प्रणाली, पद्धति, नीति स्थापित नहीं हो पायी।' **(अध्याय:1, पृष्ठ नंबर:10)**
- परिवार का तात्पर्य सीमित संख्यात्मक स्वायत्त नर–नारियों का न्याय पूर्वक सहवास रूप है। यह अपने आप में स्वयं स्फूर्त विधि से परस्पर संबंधों को पहचानना मूल्यों को निर्वाह करना, मूल्यांकन करना और उभय तृप्ति पाना होता है। इसी के साथ–साथ समझदार परिवारगत उत्पादन कार्य में परस्पर पूरक होना, परिवार की आवश्कता से अधिक उत्पादन करना अथवा होना होता है। यही परिवार का कार्यकलाप का प्रारंभिक स्वरूप है। संबंध, मूल्य, मूल्यांकन विधि से समाज रचना और अखंड समाज होना पाया जाता है अथवा संभावनाएं है ही। समाज रचना विधि ही व्यवस्था का आधार है। व्यवस्था का स्वरूप पांचों आयामों में यथा

  (1) न्याय सुरक्षा,

  (2) उत्पादन कार्य

  (3) **विनिमय** कोष

  (4) स्वास्थ्य संयम, और

  (5) शिक्षा संस्कार

  कार्यकलापों के रूप में प्रमाणित हो पाता है और उसकी निरंतरता संभावित है। सभी आयामों में भागीदारी को निर्वाह करना ही समग्र व्यवस्था में भागीदारी का तात्पर्य है। ऐसी व्यवस्था सार्वभौम होने की संभावना समीचीन है

जिसकी अक्षुण्णता मानव परंपरा में भावी है। ऐसी व्यवस्था को कम से कमएक गाँव से आरंभ करना और सभी आयामों में भागीदारी को निर्वाह करने योग्य अर्हता सें समूचे ग्राम वासियों को सम्पन्न करना एक आवश्यकता है। ऐसे अर्हता से सम्पन्न परिवार मानव और परिवार कम से कम 100 परिवार के सह–अस्तित्व में परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था समझदारी पूर्वक प्रमाणित हो पाता है। ऐसी परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में ही आवर्तनशील अर्थशास्त्र चरितार्थ होना सहज संभव है। **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर:30–31)**

- आवर्तनशीलता का तात्पर्य जिस किसी बिन्दु से समृद्धि के अर्थ में प्राकृतिक ऐश्वर्य नैसर्गिकता सहज पूरकता क्रम में लक्ष्यपूर्ति तक और पुन: आरंभिक बिन्दु तक सूत्रित होने से है। यह चक्राकार रूप में चित्रित हो पाता है और प्रमाणित हो पाता है। उदाहरण के रूप में बीज से वृक्ष तक एवं वृक्ष से बीज तक क्रियाकलापों का अध्ययन स्वयं चक्राकार विधियों से ही दिखाई पड़ती है। वंशों के अनुरूप शरीर रचना एवं शरीर रचना के अनुरूप वंश परंपराएं चक्राकार विधि से इंगित होती है। जानने–मानने के आधार पर पहचानना निर्वाह करना एवं पहचानने निर्वाह करने के क्रियाकलापों को जानना–मानना चक्राकार विधि से देखा जाता है। संबंध सूत्रों के आधार पर मूल्य, मूल्य निर्वाह के आधार पर मूल्यांकन, मूल्यांकन के आधार पर संबंध सूत्र आवर्तन रूप में दिखाई पड़ता है। व्यक्ति का पूरकता परिवार में, परिवार का पूरकता व्यक्ति के लिए सूत्रित होना आवर्तनशीलता है। परिवार की पूरकता ग्राम में, ग्राम की पूरकता परिवार के लिए सूत्रित होना आवर्तनशीलता है। श्रम नियोजन पूर्वक उत्पादन, श्रम मूल्य के आधार पर उत्पादित वस्तु का मूल्य और मूल्यांकन, उत्पादित वस्तु का श्रम मूल्य के आधार पर **विनिमय** आवर्तनशीलता के रूप में प्रमाणित होता है। पदार्थावस्था प्राणावस्था के लिए, प्राणावस्था जीवावस्था के लिए, पदार्थ, प्राण और जीव, ज्ञानावस्था के लिए तथा ज्ञानावस्था, पदार्थ, प्राण और जीवास्था के लिए पूरक होना आवर्तनशीलता है। जीवन ज्ञान सहित सह–अस्तित्ववादी विचार मानवीयतापूर्ण आचरण पूर्वक व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण मानव और मानव परंपरा में प्रमाणित करना अपेक्षित है। **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर: 31–32)**
- पूरे गाँव में आवर्तनशीलता को इस प्रकार पहचानना आवश्यक और सहज है कि प्रत्येक परिवार समूचे ग्राम परिवारों के साथ एक दूसरे को किसी संबंध से पहचानते हैं, मूल्यों का निर्वाह करते हैं मूल्यांकन करते हैं। सदा तृप्ति मिलती ही रहती है। दूसरा श्रम मूल्यों के आधार पर वस्तु मूल्यों का मूल्य निर्धारित करते हैं और परस्पर **विनिमय** करते हैं। हर परिवार में आवश्कता से अधिक उत्पादन कार्य स्पष्ट रहता ही है। इस प्रकार वस्तुओं का उत्पादन, **विनिमय** और न्याय–सुरक्षा कार्यकलाप एक दूसरे से पूरक विधि से आवर्तनशील होते हैं। क्योंकि श्रम नियोजन, श्रम मूल्य में सामरस्यता, संबंध और मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य में सामरस्यता और उसका नित्य गति के रूप में व्यवहार और **विनिमय** एक–दूसरे के लिए पूरक होते हैं और नित्य गतिशील रहते हैं इस प्रकार इसकी आवर्तनशीलता समझ में आती है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर:57)**

- इसी क्रम में परिवार सहज सहवास, ग्राम मोहल्ला सहज सहयोग, राष्ट्र और विश्व परिवार सहज सह अस्तित्व के रूप में आवर्तनशील अर्थ व्यवस्था को जानना–मानना–पहचानना–निर्वाह करना नियति सहज समीचीन है। परिवारमूलक विधि से एक ग्राम और ग्राम मूलक विधि से एक परिवार व्यवस्था पांचों आयामों के रूप में वैभवित होना सहज है। यही पाँचों आयामों की परस्पर पूरकताएं आवर्तनशीलता को प्रमाणित करना मानव का सहज अपेक्षा और जागृति क्रम घटना की समीचीनता अध्ययनगम्य हो जाता है। एक ग्राम व्यवस्था में न्याय सुरक्षा कार्य में भागीदारी, **विनिमय** कोष कार्यो में भागीदारी निरंतर समीचीन रहता है। परिवार व्यवस्था में जीना प्रमाणित रहता है। इन तीनों आयामों के लिए स्रोत रूप में स्वास्थ्य संयम कार्यों में भागीदारी और शिक्षा संस्कार कार्यों में भागीदारी की आवश्यकता, सम्भावना और प्रयोजन समीचीन रहता ही है। हर समझदार परिवार मानव कहे गये पाँच आयामों में भागीदारी को निर्वाह करने योग्य होता ही है। इसका स्रोत शिक्षा–संस्कार विधि से सम्पन्न होने की व्यवस्था है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 57–58)**
- समूचे व्यवस्था का अर्थात् एक परिवार से विश्व परिवार, मानव व्यवस्था को पहचानने–निर्वाह करने के क्रम में दस सीढ़ियों में पहचानना सहज है। यथा

  1) परिवार सभा व्यवस्था
  2) परिवार समूह सभा व्यवस्था
  3) ग्राम परिवार सभा व्यवस्था
  4) ग्राम समूह परिवार सभा व्यवस्था
  5) ग्राम क्षेत्र परिवार सभा व्यवस्था
  6) मंडल परिवार सभा व्यवस्था
  7) मंडल समूह परिवार सभा व्यवस्था
  8) मुख्य राज्य परिवार सभा व्यवस्था
  9) प्रधान राज्य परिवार सभा व्यवस्था और
  10) विश्व राज्य परिवार सभा व्यवस्था।

  इन दसों सीढ़ियों का अन्तर संबंध हर एक व्यक्ति 10 व्यक्ति को अथवा हर 10 व्यक्ति एक–दूसरे को मानव सहज संबंधों के रूप में पहचानने, उसमें निहित मूल्यों को निर्वाह करने के रूप में समझा गया है। इस क्रम में एक परिवार सभा से कम से कम 10 व्यक्ति होना मानते हुए इसे चित्रित किया गया है। 10 व्यक्ति में से एक व्यक्ति को किसी निश्चित काल तक परिवार समूह सभा व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करने के लिए निर्वाचित करेंगे। ऐसे 10 परिवारों में से निर्वाचित एक–एक व्यक्ति मिलकर एक परिवार समूह सभा के रूप में कार्य करना होगा। ऐसे 10 परिवार समूह सभाएं अपने में से एक–एक व्यक्ति निर्वाचित करेंगे। ऐसे 10 व्यक्ति मिलकर एक ग्राम मोहल्ला स्वराज्य परिवार सभा व्यवस्था गठित करेंगे। यही निर्वाचित 10 व्यक्ति मिलकर, ग्राम के कम से कम 1000 व्यक्ति

में से ही 5 समितियों को मनोनीत करेंगे। ये 5 समितियाँ क्रम से 1.न्याय–सुरक्षा, 2.उत्पादन–कार्य, 3.**विनिमय–कोष**, 4.शिक्षा–संस्कार और 5.स्वास्थ्य–संयम समितियाँ रहेंगी। इसमें मूलतः महत्वपूर्ण मुद्दा यही है परिवार के सभी सदस्यों को स्वयं पर विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवसाय में स्वावलंबी, व्यवहार में सामाजिक योग्य क्षमता–योग्यता–पात्रता को स्थापित करने के उपरांत ही परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था सभा का गठन करना सहज है। ऐसे 10–10 व्यक्तियों का 10 ग्राम स्वराज्य परिवार सभाओं में से 1–1 व्यक्ति को निर्वाचित करेंगे। ऐसे 10 व्यक्ति मिलकर एकग्राम समूह परिवार सभा का गठन करेंगे। और इसमें भी पांच आयाम रूपी समितियों को मनोनीत व्यक्तियों से गठित करेंगे। इसी प्रकार क्रम से प्रधान राज्य परिवार सभा का गठन, पाँचों आयाम रूपी समितियों का मनोनयन सम्पन्न होगा। इस धरती पर जितने भी प्रधान राज्य परिवार सभाएं होंगी वे सब अपने–अपने निर्वाचित सदस्यों को पहचानने, इस प्रकार विश्व परिवार सभा व्यवस्था भी मनोनयन पूर्वक 5 व्यवस्था समितियों को गठित करेगा। ये सभी समितियाँ ग्राम से विश्व तक अंतर सम्बन्धित रहना होगा। सभी स्तरीय सभाएं इन पाँचों समितियों का मूल्यांकन करते हुए श्रेष्ठता की ओर कार्य और प्रयोजन पर बल देते रहना बनता है। इस विधि से भविष्य का हर क्षण उत्सव मय होना समझ में आता है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 58–60)**

- आवर्तनशीलता अनिवार्यता और उसका स्वरूप

* संग्रह का तृप्ति बिन्दु किसी भी देश काल में किसी एक व्यक्ति को भी नहीं मिल पाया।
* समृद्धि सामान्य आकांक्षा और महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुओं के आधार पर हो पाता है न कि प्रतीक मुद्रा के आधार पर।
* आवर्तनशील व्यवस्था में मानव सहज अपेक्षा रूपी समृद्धि सभी परिवारों के लिए समाधान सहित सुलभ हो जाता है।
* अर्थशास्त्र विधा में आवर्तनशीलता स्वयं में श्रम नियोजन और श्रम **विनिमय** प्रणाली, पद्धति, नीति है।
* समृद्धि का भाव परिवार में ही होता है। एक परिवार समृद्ध होने के लिए एक से अधिक परिवार का समृद्ध रहना अनिवार्य है। इस क्रम में अकेले में समृद्ध होने की कल्पना और संग्रह विधि से समृद्धि की कल्पना दोनों भ्रम सिद्ध हुआ।
* अभाव का अभाव ही समृद्धि है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:91)**

- तृप्ति का स्रोत संभावना और स्थिति को और प्रकार से देखा गया है कि प्रत्येक मानव में जीवन शक्तियाँ अक्षय है, क्योंकि आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा और प्रमाण को कितना भी परावर्तित करें और परावर्तन के लिए यथावत् शक्तियाँ उर्मित रहता हुआ देखने को मिलता है। उर्मित रहने का तात्पर्य उदयशील रहने से है। उदयशीलता का तात्पर्य निरंतर उदितोदित रहने से है। उदितोदित का तात्पर्य नित्य वर्तमानता से है। इस प्रकार प्रत्येक मानव में जीवनशक्तियाँ और बल नित्य वर्तमान होना स्वाभाविक है। शरीर यात्रा के पहले भी जीवन यथावत् रहता ही है।

शरीर यात्रा के अनन्तर जीवन रहता ही है। जीवन सहज रचना कार्य के सम्बन्ध में अध्ययन सहज विधि से स्पष्ट की जा चुकी है। यह सूत्र अस्तित्व न तो घटती न तो बढ़ती– न ही पुरानी होती है। यह अस्तित्व सहज अनन्त वस्तुओं में व्यापकता, सहज सह–अस्तित्व के आधार पर स्पष्ट है। अस्तित्व में चारों अवस्थाएं नियति सहज अभिव्यक्ति है। नियति सहज कृति का तात्पर्य उपयोगिता एवं पूरकता और विकास जागृति सहज अभिव्यक्ति से है। सह–अस्तित्व स्वयं क्रमबद्ध प्रणाली होने के कारण सम्पूर्ण घटना और प्रयोजन पूर्व घटना–प्रयोजन से जुड़ी हुई होते हैं। फलस्वरूप मूल रूप से गुंथी हुई, जुड़ी हुई, स्पष्ट हो जाते हैं। मूल रूप सह–अस्तित्व ही है। जो नित्य वर्तमान ही है। वर्तमान त्रिकालाबाध सत्य है। परम सत्य रूपी वर्तमान में प्रमाणित होना ही सत्य का तात्पर्य है। वर्तमान स्वयं सह–अस्तित्व और उसकी निरंतरता होना देखने को मिलता है। मानव भी अस्तित्व में अविभाज्य वस्तु होते हुए दृष्टापद प्रतिष्ठावश जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने की संपदा सम्पन्न है। इसलिए सत्य में राहत पाना मानव का अभीप्सा बनी हुई है। अभीप्सा का तात्पर्य अभ्युदय पूर्ण इच्छा से है। अभ्युदय का तात्पर्य सर्वतोमुखी समाधान व उसकी निरंतरता से है। सर्वतोमुखी समाधान सह–अस्तित्व सहज वर्तमान में मानव का दृष्टा, कर्ता व भोक्ता पद को प्रमाणित करने से हैं। इस प्रकार मानव अपने दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहज रूप से ही मूल्यांकन कार्य को संपादित कर तृप्ति को पाता है। ऐसे मूल्यांकन के मूल में प्रत्येक उत्पादित वस्तु के उपयोगिता, सदुपयोगिता प्रयोजन का आधार और उसका मूल्यांकन संभव हो जाता है। इस प्रकार हम मानव परंपरा रूपी (गति–प्रयोजन विहिन) राष्ट्रीय कोष, अन्तर्राष्ट्रीय कोष, सुवर्ण द्रव्य मूलक मूल्यांकन से मुक्त होकर श्रम नियोजन, श्रम मूल्य और मूल्यांकन **विनिमय** प्रणाली पूर्णतया संभव है और समीचीन है। जागृतिपूर्वक उपयोगिता, सदुपयोगिता क्रम को मूल्यांकन के लिए पहचानना सहज है। इसी तारतम्य में तृप्ति और उसकी निरंतरता सर्वसुलभ होता है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:106–107)**

- अर्थशास्त्र विधा में आवर्तनशीलता स्वयं में श्रम नियोजन और श्रम **विनिमय** प्रणाली, पद्धति, नीति है। श्रम नियोजन और श्रम **विनिमय** साधारणतया समझ में आने वाल तथ्य यह है कि श्रम का अपना स्वरूप जीवन शक्ति रूपी मन और तन का संयुक्त रूप में स्थिति में पाई जाती है। यह स्वाभाविक रूप में जीवन शक्ति रूपी तकनीकी अर्थात् निपुणता–कुशलता–पाण्डित्य का नियोजन कार्य प्रणाली है। सम्पूर्ण निपुणता–कुशलता आशा, विचार इच्छा रूपी जीवन क्रियाकलापों का वैभव अथवा महिमा के रूप में विद्यमान रहना पाया जाता है। चित्त में से आवश्यकता के आधार पर चित्रण कार्यकलाप सहित विश्लेषण सम्मत विधि से कुशलता निपुणताएँ मन में विद्यमान रहते हैं। प्रत्येक क्रिया में उपयोगिता को स्थापित करने के लिए और सुन्दरता को स्थापित करने के लिए मूलत: चित्रण हर मानव के चित्त में उभर आना सहज है। यह तो पहले से ही हमें विदित है जागृत जीवन सहज पाँचों बल और पाँचों शक्तियाँ अक्षय रूप में कार्यरत रहते हैं। इनके नित्य कार्यरत रहने में अस्तित्व में कोई बाधक तत्व नहीं है। अपितु अस्तित्व में हर वस्तु जीवन शक्तियों के अक्षय–कार्यकलाप के लिए अनुकूल रूप में ही विद्यमान रहते हैं। जैसे जागृत जीवन सहज कल्पना का अवरोधक तत्व कुछ भी नहीं है और अनुकूल तत्व सब जगह में है।

अनुकूलता इस प्रकार से प्रमाणित होता है कि सभी शुभ कल्पनाएँ जागृतिपूर्वक सफल होना पाया जाता है। अजागृति पर्यन्त प्रमाणित होना संभव नहीं होता है। जैसे समृद्धि की कल्पना हर व्यक्ति में, हर परिवार में, हर समुदाय में निहित रहना पाया जाता है। यह आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य से ही सफल होने की सत्यता में जागृत होने के उपरांत ही, समृद्धि सफल होता है। किसी मुद्दे में जागृति का दूसरा बिन्दु हर मानव समृद्धि का इच्छुक है। अनुभव करना चाहता है। जबकि समृद्धि जागृत मानव परिवार में ही हो पाता है। एक परिवार समृद्ध होने के लिए एक से अधिक परिवार का समृद्ध रहना अनिवार्य है। इस क्रम में अकेले में समृद्ध होने की कल्पना और संग्रह विधि से अथवा संग्रह कार्यवाही से समृद्धि कल्पना दोनों भ्रम सिद्ध हुआ। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:129–131)**

- स्वराज्य का परिभाषा ही है स्वयं का वैभव को प्रमाणित करने का सम्पूर्ण दिशा–कोण–आयाम–काल–परिप्रेक्ष। वैभव का स्वरूप न्याय–सुलभता, उत्पादन सुलभता–**विनिमय** सुलभता ही है। ऐसे वैभव का नित्य स्रोत मानव कुल में शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम कार्यप्रणाली है। अस्तु,"स्वराज्य के अंगभूत विधि से ही आवर्तनशील अर्थशास्त्र का अध्ययन मानवीयतापूर्ण होना सहज है।" इतना ही नहीं अर्थात् केवल आवर्तनशील अर्थ–शास्त्र ही स्वराज्य का संपूर्ण सूत्र न होकर समाज शास्त्र, संविधान शास्त्र, मनोविज्ञान शास्त्र, उत्पादन–कार्य शास्त्र ये सब स्वराज्य का अंगभूत होना पाया जाता है। इसी के साथ–साथ सटीक अध्ययन करने के लिए और दर्शन इन शास्त्रों की पुष्टि के लिए तर्कसंगत विचारों को पाना भी एक अनिवार्यता बना रहता है इसे प्रस्तावित किये है। न्याय और समाधानपूर्ण सह–अस्तित्ववादी मानव इकाई का अध्ययन और साम्य ऊर्जा में संपृक्त प्रकृति रूपी अस्तित्व में से साम्य ऊर्जामयता को अध्यात्म, ईश्वर, परमात्मा, शून्य आदि के नामों से जानने की विधि में अनुभव अर्थात् मानव में होने वाली अनुभव और उसके प्रमाणों का अध्ययन आवश्यक है। यही तर्कसंगत विचारों का आधार भी होना पाया जाता है। जिससे उपर कहे शास्त्रों का पुष्टि होना देखा गया है। इस विचार के मूल में ही अनुभव रूपी दर्शन का महिमा देखा गया है जिसको इंगित करने के लिए, हृदयंगम करने के लिए मध्यस्थ दर्शन सहज रूप में ही मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ जीवन का प्रतिपादन के रूप में व्यवहार, कर्म, अभ्यास और अनुभव दर्शन के रूप में समीचीन हुई अर्थात् उपलब्ध हो गई है। इस प्रकार परम सत्य को जानने–मानने के लिए दर्शन, उसे तर्कसंगत अर्थात् –विज्ञान सम्मत विवेक, विवेक सम्मत विज्ञान विधि से संप्रेषित करने के लिए विचार, सत्यमयता को तर्कसंगत विचार प्रणाली पूर्वक व्यवहार विधा में अर्थात् परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में प्रमाणित करने के क्रम में शास्त्रों का होना मानव परंपरा सहज आकांक्षा, आवश्यकता और उपलब्धियाँ हैं। इस प्रकार परम सत्य रूप में सह–अस्तित्व है। अस्तित्व में मानव भी एक अविभाज्य इकाई है। इसी विधि से यह भी हम पाते हैं अस्तित्व में प्रत्येक एक अपने 'त्व' सहित व्यवस्था के रूप में होना सत्य है। इन्हीं दो (परम सत्य और सत्य) तथ्यों के आधार पर प्रत्येक एक का लक्ष्य आचरण और प्रमाण ही केवल व्यवस्था सहज आधार होना पाया जाता है। इस नजरिया से मानव मानवत्व सहित जीने की कला क्रम में, दूसरे भाषा से मानवत्व सहित प्रमाणित होने के क्रम में, सत्य को समझना परमावश्यक रहा है यही जागृति सहज प्रमाण हैं। अस्तित्व न तो रहस्य है न ही

दुरुह–जटिल है। अस्तित्व को सत्ता में संपृक्त प्रकृति के रूप में हर व्यक्ति समझने योग्य है और अस्तित्व ही सह–अस्तित्व होने के कारण पदार्थ, प्राण–जीव अवस्था के साथ–साथ ज्ञानावस्था में स्वयं को पहचान पाना सहज है। सह–अस्तित्व में ही व्यवस्था सर्वत्र–सर्वदा वैभवित है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:131–133)**

- मानव अपने परंपरा में व्यवस्था के रूप में जीने के लिए जागृत होना एक अनिवार्यता–आवश्यकता बनी रही। परंपरा के रूप में जागृति का तात्पर्य सत्य परंपरा में प्रवाहित रहने से ही है। मानव परंपरा में सत्य प्रवाहित रहने का प्रमाण शिक्षा में परम–सत्य रूपी अस्तित्व ही सह–अस्तित्व के रूप में व्याख्यायित होना और बोध अनिवार्य रहा। इसी के फलस्वरूप मानवीय संस्कार को परंपरा के रूप में वहन करना स्वाभाविक है। मानवीय शिक्षा–संस्कार की परिणती ही परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था और मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान सहज ही प्रवाहित होता है। इसीलिए शिक्षा–संस्कार में सह–अस्तित्व दर्शन ज्ञान को परम दर्शन के रूप में, जीवन ज्ञान को परम ज्ञान के रूप में, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान को परम आचरण के रूप में वहन करना मानवीयतापूर्ण परंपरा की गरिमा और महिमा है। महिमा का तात्पर्य समझदारी सहित जागृतिपूर्वक व्यवस्था के रूप में जीना और समग्र व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करना ही है। गरिमा का तात्पर्य प्रामाणिकता और उसकी निरंतरता को बनाए रखने से है। यह भी इंगित किया जा चुका है न्याय सुलभता, **विनिमय सुलभता** और उत्पादन सुलभतापूर्वक ही मावीयतापूर्ण व्यवस्था को पहचाना जा सकता है। फलस्वरूप समग्र व्यवस्था में भागीदारी का सौभाग्य उदय होना पाया जाता है। यह भी स्पष्ट हो चुका है हर मानव जागृत होना चाहता है, प्रामाणिक होना चाहता है, व्यवस्था में ही जीना चाहता है। इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति की साम्य–कामनाएँ मानव परंपरा का अथवा मानव पंरपरा सहज लक्ष्य का आधार है। अतएव मानव परंपरा में से के लिए परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था ही एकमात्र शरण है। ऐसी व्यवस्था में आवर्तनशील अर्थ व्यवस्था एक अनिवार्य आयाम है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:133–135)**
- स्वायत्त मानव परिवार मानव के रूप में प्रमाणित होना सहज है। स्वायत्त मानव का स्वरूप–स्वयं के प्रति विश्वास–श्रेष्ठता के प्रति सम्मान,–प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन और व्यवहार में सामाजिक और व्यवसाय में स्वावलंबन। यह सब आवश्यकता के रूप में समीचीन रहता ही है। इसकी आपूर्ति अस्तित्वदर्शन, जीवनज्ञान पूर्वक सम्पन्न होना पाया जाता है। फलस्वरूप परिवार मानव पद आवश्यंभावी होती है। ऐसा स्वायत्त मानव कम से कम दस संख्या में मिलकर साथ–साथ जीने की कला को जीने देकर जीने के रूप में प्रमाणित करता है। दूसरे विधि से हर परिवार जागृत मानव सम्बन्धों को पहचानते हैं, मूल्यों का निर्वाह करते हैं, मूल्यांकन करते हैं और उभय तृप्ति पाते हैं। साथ ही परिवारगत उत्पादन–कार्य में एक दूसरे के लिए पूरक होते हैं, फलस्वरूप आवश्यकता से अधिक उत्पादन प्रमाणित होता जाता है। यही समृद्धि का आधार–सूत्र है। इस प्रकार जो दस व्यक्ति रहेंगे साथ में सभी उम्र के होंगे ही, ये सब स्वायत्ततापूर्ण, स्वयात्तशीलता के रूप में देखने को मिलता है। स्वायत्त मानव का परिवार मानव होना स्वाभाविक है। क्योंकि सह–अस्तित्व में ही स्वायत्तता का प्रमाण होना स्वीकार्य रहता है। इसी क्रम और विधि से परिवार समूह, ग्राम, ग्राम समूह, क्षेत्र, मंडल, मंडल समूह, मुख्य राज्य, प्रधान राज्य और विश्व राज्य

परिवार और व्यवस्था के रूप में स्वरूपित होना सहज है। इसकी आवश्यकता समीचीन है। परिवार को ही दूसरे भाषा में समाज कहा जाता है। मानव सम्बन्ध–बोध विधि से ही मूल्य निर्वाह और मूल्यांकन, चरित्र और नैतिकतापूर्वक सम्पन्न होना मानव में ही देखा जाता है। इसी सत्यतावश आवर्तनशील अर्थव्यवस्था स्वाभाविक रूप में सार्थक होता है। मूल्य, चरित्र और नैतिकता क्रम में सर्वमानव वैभवित होना चाहता ही है। सफल होने में अभी तक जो अड़चन थी वह केवल व्यक्तिवादी एवं समुदाय चेतना, सामुदायिक श्रेष्ठता का भ्रम। फलस्वरूप, समुदाय–वर्ग संघर्ष, प्राकृतिक देन–ईश्वरीय देन मान लेना ही रहा। अभी यह सौभाग्य समीचीन हो गया है कि मानव मानवीयता को सार्वभौम आचरण के रूप में पहचानना–निर्वाह करना, जानना और मानना सहज हो गया है। अतएव आवर्तनशील स्वरूप–कार्य और प्रयोजन को समझना और उसे प्रमाणित करना आवश्यक है ही। आवर्तनशीलता का स्वरूप मूलतः विभिन्न आयामों में, विभिन्न मूल्यों के आधार पर ही प्रयोजित होना पाया जाता है। जैसे सह–अस्तित्व में जीवन मूल्य, मानव मूल्य आवर्तित होता है। प्रामाणिकता सहज विधि से जीवन मूल्य सफल होता हुआ देखा गया है। सार्वभाम व्यवस्था क्रम में मानव मूल्य सहज सार्थक होना स्पष्ट है और अखण्ड समाज में भागीदारी स्वयं समाज मूल्य यथा स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य आवर्तनशील होना पाया जाता है। इसमें से उत्पादनपूर्वक यथा निपुणता, कुशलतापूर्ण जीवन शक्तियों को हस्त लाघव सहित (शरीर के द्वारा) प्राकृतिक ऐश्वर्य पर स्थापित करने की क्रियाकलाप को उत्पादन कार्य नाम है। यह प्रसिद्ध है। सबको विदित है। ऐसे उत्पादित वस्तुओं को दूसरे से उत्पादित किया गया वस्तु को पाने के क्रम में हस्तांतरित कर लेना अर्थात् लेन–देन कर लेना मानव कुल में एक आवश्यकता है। यही मूलतः **विनिमय** के नाम से जाना जाता है। ऐसे **विनिमय कार्य** उत्पादन के लिए जो कुछ भी शक्तियों का नियोजन कर पाए वही वस्तुओं में उपयोगिता और कला मूल्य के रूप में पहचानने में आती है।

उपयोगिता और कला मूल्य का मूल्यांकन होना सहज है। इसी मूल्यांकन क्रिया को श्रम मूल्य का नाम दिया। उत्पादन क्रम में अनेक वस्तुएं होना पाया जाता है। यह महत्वाकांक्षा और सामान्य आकांक्षा के रूप में वर्गीकृत है। इनमें से सामान्य आकांक्षा सम्बन्धी किसी वस्तु का उसमें भी किसी एक आहार वस्तु का मूल्यांकन सर्वप्रथम करना आवश्यक है। इस क्रिया को इस प्रकार किया जा सकता है कि जैसे गेहूँ को एक गाँव में कई परिस्थितियों में बोया जाता है। उत्पादन भी विभिन्न तादादों में होता है। उसका सामान्यीकरण उत्पादन तादातों के मध्य बिन्दु में सामान्य मूल्य रूप होना सहज है। जब एक वस्तु का उपयोगिता व कला मूल्य का मूल्यांकन हो जाता है, उसी प्रकार गाँव में उत्पादित हर वस्तु का मूल्यांकन हर स्वायत्त मानव से सम्पन्न होना स्वाभाविक है। ऐसे स्वायत्त मानव ही परिवार मानव और विश्व परिवार मानव तक अपने वर्चस्व को अथवा अपने वैभव को प्रमाणित करना संभव होने के कारण परिवार समूह, ग्राम परिवार तक एक गाँव में ही मूल्यांकन क्रिया का ध्रुवीकरण हो पाता है। फलस्वरूप ग्राम में उत्पादित वस्तुओं का **विनिमय** गाँव में होने में कोई अड़चन नहीं रह जाती है। परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का प्रमाण कम से कम एक गाँव से ही होना संभव है। इसीलिए परिवार मूलक विधि से ही यह

सफल होना एक निश्चित विधि है। परिवार सफलता के लिए अर्थात् परिवार स्वायत्तता के लिए स्वायत्त मानव का स्वरूप, उसकी सार्वभौमता अनिवार्य है। स्वायत्त मानव का स्वरूप प्रदान करने का प्रेरक तत्व ही मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार परंपरा है। मानवीयता पूर्ण शिक्षा–संस्कार परम्परा का मूल वस्तु अथवा सम्पूर्ण वस्तु जीवन–ज्ञान, अस्तित्व दर्शन और मानवीयतापूर्ण आचरण ही है। आज की स्थिति में भय और आस्था दोनों प्रलोभन के चक्कर में आकर अस्वीकृत होते जा रहे हैं। प्रलोभन की आपूर्ति का स्रोत और संभावना दोनों न होने के कारण, दूसरा उसकी तृप्ति बिन्दु न होने के कारण पागलपन छा जाना आवश्यंभावी रही है। अतएव इससे मुक्ति पाने के लिए कुछ लोग इच्छा रखते हैं। अधिकांश लोग निराशा, कुण्ठा ग्रसित हो चुके हैं। ऐसी स्थिति में हर मोड़–मुद्दे में विकल्प की आवश्यकता है ही। यहाँ की प्रासंगिकता आवर्तनशील अर्थशास्त्र और कार्यक्रम से यह सारी परेशानियाँ दूर होकर स्वस्थ अर्थात् समाधानित, समृद्ध, अभय, सह–अस्तित्वशील परिवार को साकार कर लेना संभव हो गया है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:135–138)**

- परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य सभा अपने ही ग्राम के व्यक्तियों में से 5 समितियों को गठित करेगा। यह प्रधानत:– (1) न्याय–सुरक्षा करेगा अथवा न्याय सुरक्षा को संतुलित बनाए रखेगा, (2) उत्पादन–कार्यकलाप को संतुलित बनाए रखेगा, (3) **विनिमय** कोष कार्यों को संतुलित बनाए रखेगा, (4) शिक्षा–संस्कार कार्य को संतुलित बनाए रखेगा और (5) स्वास्थ्य–संयम कार्यों को संतुलित बनाए रखेगा। इन्हीं कार्यकलापों के आधार पर क्रमश: (1) न्याय–सुरक्षा समिति (2) उत्पादन–कार्य समिति (3) **विनिमय**–कोष समिति (4) शिक्षा–संस्कार समिति और (5) स्वास्थ्य–संयम समिति नामकरण होगा। कार्य और नाम से यह सुस्पष्ट है कि इस स्वरूप के साथ मानव प्रयोजन, आवश्यकता और अनिवार्यता को अनुभव कर सकता है। इसी क्रम में विश्व परिवार सभा तक 5–5 समितियों का गठन होना सहज है। और हर समिति हर स्तरीय समिति एक दूसरे के साथ संचार और अनुप्राणन संबंध को बनाए रखेंगे। इसमें से **विनिमय** कोष समिति के द्वारा **विनिमय** कार्यों को गाँव में और एक–दूसरे गाँव के साथ सार्थक होगी। हर गाँव में ग्राम सभा ही वस्तु मूल्यों का मूल्यांकन, उसका ध्रुवीकरण क्रियाकलापों की विधि पर निर्णय लेगा। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:139–140)**
- (गलती–अपराध–शोषण–द्रोह–विद्रोह और युद्ध मानव के और मानव परंपरा के लिए अवांछनीय होना स्वीकृत है।) भ्रम मुक्ति पाकर वांछित लक्ष्य अर्थात् मानव लक्ष्य परंपरा में संक्रमित होने की आवश्यकता है। इसके लिए अर्थव्यवस्था, स्वराज्य व्यवस्था में ही समाहित रहना सहज है। इसी स्वराज व्यवस्था में अखंड समाज व्यवस्था में सार्वभौम न्याय व्यवस्था समायी हुई है। **विनिमय** विधि में सार्वभौमता को पाने के लिए भी तन, मन, धन का सदुपयोग प्रणाली ही प्रधान ध्रुव है न कि भोग, बहुभोग और अतिभोग। **(अध्याय:5, पृष्ठ नंबर:152)**

- इस तथ्य को भले प्रकार से देखा गया है कि हर उत्पादन श्रम नियोजन का प्रतिफलन के रूप में ही होना पाया जाता है। प्रतिफलन श्रम नियोजन का ही होता है। प्रतिफलन का तात्पर्य यही है कि मानव के प्रखर प्रज्ञा रूपी निपुणता, कुशलता, पांडित्य का फल। मानव का प्रखर प्रज्ञा, मानवीयतापूर्ण प्रज्ञा ही होना पाया जाता है। ऐसा मानवीयतापूर्ण प्रज्ञा का सम्पूर्ण स्वरूप जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन और मानवीयता पूर्ण आचरण ही है। प्रतिफलन विधि से आबंटन क्रिया ही दूसरे विधि से **विनिमय** कार्य ही सर्वशुभ हो पाता है। प्रतिफलन विधि से लाभ की परिकल्पना मानव में होना संभव नहीं है। **विनिमय** के अनंतर भी उतना ही प्रतिफल बना रहता है, जितना उत्पादन किया रहता है। यही **विनिमय** विधि का तृप्ति बिंदु भी है। श्रम नियोजन क्रियाकलाप में न लाभ होता है न हानि होती है। कम उत्पादन भी एक कर्माभ्यास है। अधिक उत्पादन भी एक कर्माभ्यास ही है। यह अवश्य मानव में होने वाली प्रवृत्ति है– आवश्यकता से अधिक उत्पादन। इस प्रवृत्ति वश ही हर मानव अपने को कर्माभ्यास विधि से प्रस्तुत कर पाता है अथवा आगे बढ़ता है। इन सभी तथ्यों से यह सुस्पष्ट हो गई अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व विधि से, परमाणु में विकास सहज गठनपूर्णता, जीवन पद, जीवनी क्रम (जीवावस्था का आचरण) विधि से और जीवन जागृति विधि से लाभ–हानि का कोई स्थान नहीं है। इतना ही नहीं विकास क्रम सहज प्राणावस्था में, से, के लिए होने वाले पूरकता उदात्तीकरण, रासायनिक भौतिक रचना–विरचना विधियों से भी संग्रह का भी कोई स्थान नहीं है। इस धरती में जितने भी रासायनिक–भौतिक रचनाएँ सम्पन्न होते हैं, वह सब इसी धरती का समृद्धि के रूप में होना पाया जाता है। **(अध्याय:5, पृष्ठ नंबर:160–161)**
- प्रत्येक व्यक्ति जीवन्ततापूर्वक ही अपने को प्रमाणित करना चाहता है। प्रमाणित करने का संपूर्ण स्वरूप समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, और भागीदारी (कारीगिरी) ही है। कारीगिरी का स्वरूप व्यवहार–व्यवसाय (उत्पादन कार्य) और **विनिमय** के रूप में दृष्टव्य है। इसमें से व्यवहार कार्य 'मानव जाति एक– कर्म अनेक; मानव धर्म एक मत अनेक; धरती एक–मानव कृत सीमाएं अनेक; ईश्वर (सत्ता–व्यापक) एक देवताएं (जागृतिपूर्ण जीवन) अनेक; होने, नित्य वर्तमान होने के आधारों और स्वीकृतियों के साथ मानव में, से, के लिए किये जाने वाले सम्पूर्ण (कायिक, वाचिक, मानसिक व कृत, कारित, अनुमोदित) व्यवहार मानवीयतापूर्ण होना पाया जाता है। यहाँ उल्लेखनीय बात यही है हर स्वायत्त मानव परिवार मानव होने, हर परिवार मानव समाधान, समृद्धि का धारक वाहक होता है। दूसरे विधि से हर परिवार मानव व्यवस्था में भागीदार होने के प्रमाण (समाधान–समृद्धि) को प्रमाणित करता है। फलस्वरूप तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग और सुरक्षा का सूत्र अपने आप मानवीयता पूर्ण परिवार में प्रमाणित होता है। मानवीयता पूर्ण परिवार में भागीदारी को निर्वाह करना ही परिवार मानव का वैभव और प्रमाण है। यहाँ यह भी स्मरणीय तथ्य है कि प्रत्येक परंपराएं अपने स्वरूप में "मौलिक" हैं। अवस्थाओं के आधार पर ही परंपरा को पहचाना जाता है। जैसे – पदार्थावस्था में तात्विक रूप से रचना तक की सम्पूर्ण प्रजातियाँ अपने–अपने स्वरूप में मौलिक है। यथा दो अंश से या अनेक अंशों से गठित परमाणुएँ और ऐसे परमाणुओं से रचित अणु, अणु रचित रचनाएं, मृत पाषाण, मणि, धातुओं के रूप में दिखती हैं। यही मौलिकता है।

इसमें प्रत्येक प्रजाति का भी वर्गीकरण अपने स्वरूप में वैभवित रहते हुए विकास क्रम में एक–दूसरे की प्रवृत्ति सह–अस्तित्व सहज विधि से पाये जाने वाले सहवास स्वाभाविक है। सहवास विधि से ही अणु बन्धन विधि दृष्टव्य है। परमाणु में नाभिकीय रूप में एक से अधिक अंशों का होना ही भार–बंधन का सूत्र है। इसको और स्पष्ट रूप में देखना इस प्रकार बनता है कि प्रत्येक परमाणु में एक से अधिक अंश निश्चित दूरी पर एक दूसरे के साथ तालमेल से हैं और वह तालमेल स्वयं एक गति पथ सहित होना पाया जाता है। गति पथ स्वाभाविक रूप में वर्तुलाकार में अथवा अपरिपूर्ण वर्तुलाकार अथवा अण्डाकार होना पाया जाता है। किसी भी दो अंश एकत्रित होने के उपरान्त निश्चित दूरी का स्वरूप स्वयं मर्यादा के रूप में दिखाई पड़ती है। यही मर्यादा रेखा ही स्वयं गति पथ के रूप में स्थापित रहता है। यह स्थापना कम से कम दो अंश एक निश्चित दूरी के साथ–साथ मिला हुआ का प्रकाशन है। यह अनुस्युत क्रिया के रूप में अर्थात् एक अंश मध्य में, दूसरा एक अंश उसके सभी ओर चक्कर लगाता हुआ रहता है। अंश जैसे–जैसे बढ़ती जाती है वैसे–वैसे नाभिकीय क्षेत्र में अंशों का जमाव बढ़ता जाता है। फलस्वरूप परमाणु में भार प्रदर्शन क्षमता घटा–बढ़ा हुआ होना पाया जाता है। यही भार प्रदर्शन क्षमता अस्तित्व सहज, सह–अस्तित्व प्रभाव समेत परमाणुएं एक दूसरे के साथ जुड़ पाते हैं। इसे अणु के रूप में देखा जा सकता है। ऐसे अणुएं अपने भार सहित विभिन्न रचनाओं में भागीदारी को निर्वाह करता हुआ देखा जाता है। ऐसे ही विभिन्न अणुएं विभिन्न अनुपात में पूरकता नियमपूर्वक रासायनिक क्रियाकलापों में भागीदारी करते हैं। फलस्वरूप प्राणकोषा, प्राणसूत्र रचनासूत्र, उदात्तीकरण सिद्धांत पूर्वक श्रेष्ठ और श्रेष्ठतम रचनाएं इसी धरती पर प्रमाणित होना वर्तमान है। दूसरे ओर परमाणु में विकास गठनपूर्णता संक्रमणपूर्वक चैतन्य इकाई जीवन पद में वैभवित होना–ऐसा जीवन ज्ञानावस्था में स्वयं को, स्वयं से, स्वयं के लिए अध्ययन करना सहज संभव होना पाया गया। जीवन ज्ञान के आधार पर ही जीवन ही दृष्टा होना इसका प्रवेश सूत्र अर्थात् जीवन–जीवन को समझने का सूत्र मानव परंपरा संस्कारानुषंगीय विधि से कार्यरत रहना देखा गया, अतएव यही सूत्र क्रम से मानव स्वयं का अध्ययन क्रम को जोड़ने का प्रमाण को प्रस्तुत कर दिया। अध्ययन विधि से ही मानव स्वीकृतियों को अभिव्यक्ति, संप्रेषणा और प्रकाशन किया जाना प्रमाणित हो चुका है। अध्ययन पूर्वक स्वीकृतियों के साथ तृप्ति, सुरक्षा, सदुपयोग, न्याय, समाधान, धर्म, सत्य जैसे नामों के साथ–साथ अर्थ बोध विधि से अध्ययन कार्य को सम्पन्न करने की ओर कल्पनाएं दौड़ता ही रहे आया। इसी क्रम में भ्रम अर्थात् अतिव्याप्ति कार्यक्रमों का अभिव्यक्ति–संप्रेषणा–प्रकाशन के आधार पर चेष्टाएं भ्रमित मानव को बारंबार स्व–निरीक्षण के लिए बाध्य करता ही रहा जैसा शोषण के अनन्तर, युद्ध के अनन्तर, द्रोह–विद्रोह के अनन्तर, सुविधा संग्रह भोग–विलास के अनंतर, परिवार बैर के अंनतर, समुदायों में अंतर्विरोध के अनन्तर, परस्पर समुदाय सीमाओं, धरती की सीमाओं के अनन्तर मूल्यांकन करने का प्रयास बारंबार ध्यानाकर्षण का बिन्दुएं रही। मुख्यत: इस क्रियाकलाप में निष्कर्ष और स्थिरता, फलस्वरूप सार्वभौमता और उसकी अक्षुण्णता में प्रश्न चिन्ह बनने की बिन्दुओं में (1) सह–अस्तित्व नित्य वर्तमान होने में स्वीकृति स्पष्ट नहीं हो पाना–फलस्वरूप भ्रमित रहना। (2) जीवन और जीवन ज्ञान संबंधी शोध कार्य सम्पन्न नहीं हो पाना फलस्वरूप जीवन

(स्वयं) के सम्बन्ध में भ्रमित रहना। फलस्वरूप स्थिर और निश्चयता से वंचित रहना पाया गया। जबकि अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति अस्तित्व में ही निश्चित है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:202–205)**

- श्रम नियोजन का प्रतिफल ही **विनिमय** के लिए वस्तु है। इन्हीं **विनिमय** विधि में श्रम मूल्य के आधार पर **विनिमय कार्य** को सम्पन्न करना आवर्तनशीलता की एक कड़ी है। आशा, विचार, इच्छाएँ निपुणता, कुशलता के रूप में कार्य करना सर्व विदित है। दूसरे विधि से आशा, विचार, इच्छा ही अनुभव मूलक विधि से जीवन ही निपुणता–कुशलता पाण्डित्य का धारक–वाहक हैं। यह सर्वविदित है। यह भी विदित है आशा, विचार, इच्छा के अनुसार ही मानव शरीर संचालन कर पाता है। ऐसी संचालन क्रियाकलाप में ही निश्चित विधि से निश्चित उत्पादन भी होना देखा जाता है। सामान्य आकाँक्षा एवं महत्वाकाँक्षा संबंधी वस्तुओं का उत्पादन कार्य में तत्पर व्यक्ति को देखने से यही दिखाई पड़ता है। जिस वस्तु का उत्पादन होना है उसका आकार, प्रकार उसके मानसिकता में होता ही है। फलस्वरूप उत्पादन कार्य सम्पन्न होता है। इस विधि से निपुणता–कुशलता उत्पादन–कार्य के मूल में होना और उसका उपयोगिता, सदुपयोगिता और प्रयोजनशीलता स्पष्ट होता है। आवश्यकता के आधार पर तकनीकी निपुणता, कुशलता और सम्भावनाओं सहित कार्यकलाप सम्पन्न होना देखा गया है। इस क्रम में पीढ़ी से पीढ़ी समृद्धि होता ही आया है। मूलत: विरोधाभास जो कुछ भी निर्मित हुई ईंधन नियोजन, रासायनिक द्रव्यों का नियोजन, उसके उत्पादनों में होने वाली विसर्जन प्रणालियों से विसंगतियाँ निर्मित हुआ, जिसको प्रदूषण के नाम से इंगित करते हैं। दूसरा विसंगति **विनिमय** प्रणाली में उत्पादक और उपभोक्ता के बीच में दूरी लाभ के रूप में बढ़ता जाना रहा है। इन्हीं दो विसंगतियों के चलते इनसे संबंधित सभी उथल–पुथल होना अर्थात् अवांछित घटनाएँ होना रहा हैं। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:221–222)**
- उत्पादन–कार्य में मानसिकता, स्वस्थ शरीर और हस्तलाघव सहित श्रम नियोजित होता ही है। जहाँ तक साधन की बात है, अर्थात् इसके पहले से जो वस्तुएँ निर्मित हो चुकी हैं, पुन: उत्पादन कार्य के लिए उपयोगी है। यह पीढ़ी से पीढ़ी प्रदत्त होते हुए आया है। इस प्रकार हर पीढ़ी के बाद साधन सम्पन्न होने के क्रम से पीढ़ी से पीढ़ी समृद्ध होना स्वाभाविक है। यह परिवारमूलक विधि से ही सर्वसुलभ हो पाता है। हर परिवार में आवश्यकता व उत्पादन, उपयोग, सदुपयोग, **विनिमय** ये सभी अवयव कार्य–व्यवहार के रूप में होना स्वाभाविक है। इन्हीं कार्य–व्यवहारों में समृद्धि का अनुभव एक लक्ष्य है। इसी लक्ष्य को प्रत्येक परिवार पाने के क्रम में निश्चित उत्पादन का योजना, स्वरूप स्थापित होता ही है। यही व्यवस्था का मूल तत्परता है। परिवारगत आवश्यकता से अधिक उत्पादन से ही समृद्धि का अनुभव होना स्वाभाविक है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:222–223)**
- आवर्तनशीलता के स्वरूपों को सहज ही हम इस प्रकार देख सकते हैं कि उत्पादन के लिए आवश्यकता, आवश्यकता के अनुरूप मानसिकता जो निपुणता, कुशलता और पांडित्य सम्पन्न मानसिकता, स्वस्थ शरीर के द्वारा प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक वस्तुओं में कला मूल्य और उपयोगिता मूल्य की स्थापना, उपयोगिता

मूल्य के अनुरूप उसका सदुपयोग, फलतः आवश्यकता की आपूर्ति, शेष का **विनिमय**। इस प्रकार समृद्धि का अनुभव सूत्र स्पष्ट होता है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:223)**

- परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना लक्ष्य होने के आधार पर विभिन्न उद्यमों को हर परिवार अपनाते हैं। आवश्यकता से अधिक उत्पादन समृद्धि का द्योतक होना पाया जाता है। ऐसा सम्पूर्ण ग्राम परिवार मिलकर ग्राम के आवश्यकीय सभी वस्तुओं को उत्पादन करने के लिए प्रवृत्तशील होते हैं। गाँव के सभी परिवार एक दूसरे के पूरक होते हैं। उत्पादन में पूरक, **विनिमय** में पूरक और पूरक विधि से ही उपयोग, सदुपयोग करते हैं। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:227)**
- इस चित्र में स्पष्ट किया गया पाँचों आयाम रेखाकार और वर्तुलाकार विधि से अन्तर सम्बन्धित और कार्यरत रहते हैं। रेखाकार विधि से अन्तर्संबंध, वर्तुलाकार विधि से पांचों समितियों को अविभाज्य सम्बन्ध आवर्तनशीलता के रूप में देखने को मिलता है। इसके मूल में मानव ही मानवीय शिक्षा–संस्कारपूर्वक स्वायत्त मानव, परिवार मानव (समाज मानव) और व्यवस्था मानव के रूप में प्रमाणित होना ही परिवार मूलक के स्वराज्य व्यवस्था का अबाध गति है। इस क्रम में ग्राम परिवार व्यवस्था में **विनिमय** कोष का कार्य का सामान्य चित्र जो उत्पादन और **विनिमय** सुलभ रूप को स्पष्ट करता है :–

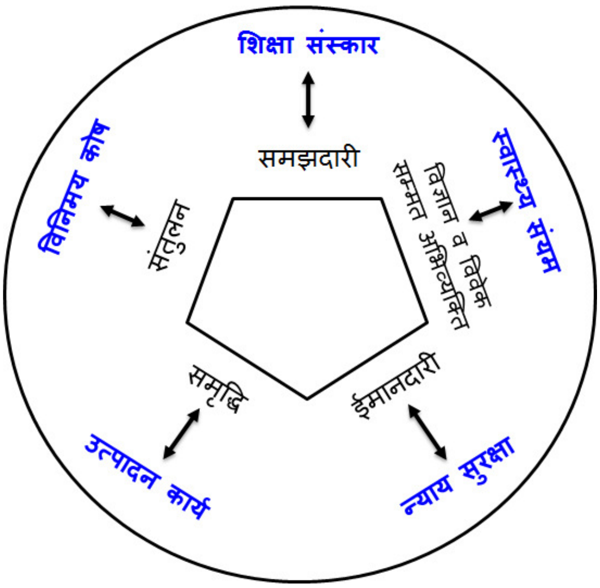

इस चित्र में ग्राम में उत्पादनों का सामान्य ध्यानाकर्षण किया है। सामान्य का तात्पर्य हर गाँव में एक ही परिवार में सभी प्रकार के उत्पादन सीमाओं को बांधना संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार के उत्पादन होना वांछनीय है। अतएव जिन–जिन ग्रामों की सीमा में जो–जो उत्पादन कार्य सम्पन्न होता है, उसका **विनिमय** कार्य को श्रम **विनिमय** विधि से सम्पन्न करना ही **विनिमय** कोष का प्रधान कार्य है।...

"वस्तु और कोष का अलग–अलग कोई स्थान नहीं होता।" क्योंकि अस्तित्व में वस्तु और उसका मूल्य अविभाज्य रूप में देखा जाता है। यही विधि/तथ्य सम्पूर्ण उत्पादित वस्तुओं में भी दिखाई पड़ता है। जैसे एक

वाहन को छोटा या बड़ा सामने रखकर देखें इसका उपयोगिता मूल्य, सुन्दरता मूल्य और वह वाहन अलग–अलग हो सकता है? इस पर कितना भी सोचा जाए अंत में यह अविभाज्य है। यही मानव जाति से कहना बनता है। "उत्पादित वस्तुओं में उपयोगिता मूल्य बना ही रहता है।" हर वस्तुओं का उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य मानव के श्रम नियोजन का ही फलन है। मूल्यांकन श्रम का ही हो पाता है न कि प्रतीक वस्तुओं का। इस तथ्य पर भी पहले विश्लेषण–निष्कर्ष प्रस्तुत किया जा चुका है। इसी विधि से मानव परंपरा में हर परिवार, हर स्तरीय परिवार स्वाभाविक रूप में समृद्धि, समाधान, अभय और सह–अस्तित्व में ओत–प्रोत रहना अथवा यह सर्वसुलभ रहना ही परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का एक अनिवार्यता है क्योंकि सर्वमानव का यही लक्ष्य है। 'समृद्धि का आधार आवश्यकता से अधिक उत्पादित वस्तु, सदुपयोग और सुरक्षा के योगफल में होना देखा गया।' इसका प्रमाण और उसकी निरंतरता अखंड समाज और सार्वभौम व्यवस्था में गति का होना पाया जाता है। अतएव वस्तु और उसका मूल्य स्वाभाविक रूप में अविभाज्य बना रहता है। इसलिए **विनिमय**–कोष व्यवस्था सुन्दर, सुखद, समाधानपूर्ण मानव मार्ग है। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:233–236)**

- मूल्यांकन सम्बन्धी निश्चयन हर ग्राम से आरंभ होकर विश्व परिवार **विनिमय–कोष** तक सम्बद्ध रहना आवश्यक है। शिक्षा पूर्वक हर व्यक्ति में निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य सुलभ होता है। फलस्वरूप उत्पादन कार्य में दक्ष होना पाया जाता है। इसी आधार पर प्रत्येक व्यक्ति में स्वायत्तता पूर्ण लक्ष्य अध्ययन काल से ही समाहित रहता है। सम्पूर्ण उत्पादन की कोटि और स्वरूप स्पष्ट हो चुका है। समृद्धि का सर्वाधिक आपूर्ति आहार, आवास, अलंकार सम्बन्धी वस्तुओं, उपकरणों और सामग्रियों सहित प्रत्येक ग्राम सीमा में जो कुछ भी प्राकृतिक ऐश्वर्य, जलवायु, वन, खनिज, नैसर्गिकता के रूप में रहते ही हैं। इन्हीं आधारों पर या इन्हीं के पृष्ठभूमि में मानव अपना श्रम नियोजन करने का कार्यक्रम बनाता है। हर परिवार अपने प्रतिष्ठा के अनुरूप आवश्यकताओं का निर्धारण करने में मानवीयता पूर्ण शिक्षा संस्कार के बाद ही समर्थ होना पाया जाता है। ऐसे परिवार मानवों से सम्बद्ध परिवार अपने आवश्यकता की तादात, गुणवत्ता सहित आवश्यकताओं को अनुभव करेंगे और उत्पादन–कार्य को अपनायेंगे। हर गाँव में साधारणतया कृषि, पशुपालन, ग्राम शिल्प, कुटीर उद्योग, हस्तकला, ग्रामोद्योगों को अपनाना सहज है। इसी आधार पर हर परिवार के लिए आवश्यकतानुरूप उत्पादन कार्य का अवसर समीचीन होना स्पष्ट है। इसी के साथ यह भी स्पष्ट है कि सम्पूर्ण आवश्यकताएँ शरीर पोषण, संरक्षण और समाज गति में ही उपयोगी, सदुपयोगी, प्रयोजनशील है। इसी स्पष्ट नजरिये से जीवन ज्ञान सम्पन्न हर मानव को आवश्यकताएँ सीमित दिखाई पड़ती हैं और आवश्यकता के अनुरूप उत्पादन श्रम शक्ति मूलत: जीवन शक्ति की ही अक्षय महिमा होने के आधार पर आवश्यकता से अधिक उत्पादन में विश्वास स्वाभाविक है। यह स्वायत्त मानव में अभिव्यक्त होने वाले आयामों में से उत्पादन–कार्य भी एक आयाम है। इस विधि से आवश्यकताएँ सीमित संयत होना पाया जाता है। इसी सूत्र के आधार पर अपने उत्पादन कार्यों को विभिन्न वस्तुओं के रूप में परिणित करने में निष्ठान्वित होते हैं। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:237–238)**

- एक ग्राम में कम से कम 100 परिवार की परिकल्पना की जाती है। पाँचों आयाम सम्बन्धी व्यवस्था सफल होने के लिए कम से कम 100 परिवार का होना एक आवश्यकता है। 100 परिवार के बीच सामान्य आकाँक्षा सम्बन्धित सभी अथवा सर्वाधिक वस्तुएँ ग्राम में ही उत्पादित होना सहज है। उत्पादन कार्यों में परिवार मानव जब संलग्न होता है, उसे निरीक्षण–परीक्षण करने पर पता लगता है कि प्रत्येक उत्पादन कार्य निपुणता–कुशलता, पांडित्य सम्पन्न मानसिकता, विचार, इच्छा, समय खंड, हस्तलाघव और निश्वत साधन के योगफल में होना पाया जाता है। जहाँ तक साधनों की गणना है यह परंपरा के रूप में पीढ़ी से पीढ़ी अधिक साधन सम्पन्न होने की व्यवस्था है। यहाँ यह भी ध्यान रखना आवश्यक है मानव, जलवायु, धरती, वन, खनिज जैसी नैसर्गिकता में और अनंत और व्यापक ब्रह्मांडीय किरणों के वातावरण में होता हुआ देखने का मिलता है। इसी के साथ–साथ मानवकृत उप–वातावरण सहज ही गण्य होता है। अभी यहाँ मानवकृत वातावरण में परिवर्तन, परिवर्धन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। नैसर्गिकता पर किए जाने वाले हस्तक्षेपों, श्रम नियोजनों, प्रतिफलों, उसकी उपयोगिता, सदुपयोगिता और प्रयोजनशीलताओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यह मानवकृत वातावरण में से एक पक्ष है। इसी के साथ–साथ मानवकृत वातावरणिक सूत्र जुड़ा ही रहता है। अन्य वातावरण का तात्पर्य नैसर्गिक और ब्रह्मांडीय वातावरण अविभाज्य वर्तमानित रहने से है। इस प्रकार समग्रता के साथ ही यह धरती, धरती की समग्रता के साथ ही मानव, मानव के समग्रता के साथ ही व्यवस्था और समाज परिकल्पना अध्ययन, योजना और क्रियान्वयन क्रम में मानवीयतापूर्ण मानव के वैभव की पहचान होती है। इसी विधि से मानव समाज और व्यवस्था का अविभाज्य स्वरूप को परिवार और परिवारमूलक व्यवस्था के रूप में देखा गया है। जो स्वयं स्वराज्य और धर्म अविभाज्य रूप और उसका प्रमाण होना पाया गया है। अस्तु समग्र मानव को ध्यान में रखते हुए पाँच आयाम सम्पन्न व्यवस्था को परिपूर्णता के रूप में अध्ययन किया गया है। इसी के अंगभूत उत्पादन, **विनिमय–कोष** के आधार पर अथवा कार्यप्रणाली के आधार पर ग्राम से आरंभित स्वराज्य वैभव सूत्रों के अंगभूत होने के कारण ग्राम सभा से विश्व सभा तक इसकी लम्बाई पहुँचना स्वाभाविक है। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:238–240)**
- ग्राम सभा से मनोनयनपूर्वक व्यवस्थित **विनिमय कोष** व्यवस्था सूत्र और उत्पादन कार्य सूत्र यह दोनों अविच्छिन्न रूप में विशाल और विशालता की ओर सम्बद्ध होना समीचीन है। जैसा ग्राम सभा क्षेत्र में कार्यरत उद्यमों के अतिरिक्त कुटीर और लघु उद्योगों को ग्राम समूह समिति में स्थित उत्पादन कार्य समिति सम्पन्न करेगा और **विनिमय कोष** समिति **विनिमय कार्यों** को समपन्न करेगा। क्षेत्र सभा–समिति लघु उद्योगों और मध्यम उद्योगों के बारे में, से सम्बन्धित उत्पादनों को सम्पन्न करेगा और ग्राम क्षेत्र समिति से मनोनीत **विनिमय** कोष समिति इसका **विनिमय** कार्य सम्पन्न करेगी। क्षेत्र **विनिमय** कोष समिति ग्राम समूह समितियों के, से अक्षुण्ण सम्बन्ध बनाए रखने के आधार पर **विनिमय** कोष समिति से आदान–प्रदान विधि से गतिशील रहना सहज है। इसी प्रकार मण्डल और मण्डल समूह सभाओं से मनोनीत उत्पादन कार्य समिति और **विनिमय**–कोष समितियों के परामर्श से मध्यम कोटि के उद्योगों और वृहद उद्योगों को गतिशील बनाएगा, **विनिमय**–कोष पूर्वक ग्राम सभा तक **विनिमय** विधान

(आदान–प्रदान) को बनाये रखेगा। इसी प्रकार मुख्य राज्य और प्रधान राज्य सभाओं से मनोनीत उत्पादन कार्य समिति द्वारा वृहद् उद्योगों को और उत्पादनों को समृद्ध बनाने का कार्य करेगा। इनसे मनोनीत **विनिमय**–कोष समिति द्वारा आदान–प्रदान विधि सम्पन्न होगी। विश्व राज्य परिवार सभा से मनोनीत उत्पादन कार्य और **विनिमय** कोष समितियों के द्वारा सम्पूर्ण राज्य में संतुलन को बनाए रखने का कार्य करेगा और आवश्यकतानुसार विश्व राज्य सभा द्वारा मनोनीत उत्पादन कार्य समिति विश्व समृद्धि के अर्थ में वृहद उद्योगों को स्थापित कर उत्पादन कार्य को सम्पन्न करेगा।

विनिमय कोष द्वारा वस्तुओं का आदान–प्रदान कार्य सम्पन्न होगा। इसी प्रकार अन्य समितियों का भी सम्बन्ध अपने–अपने स्थिति में और ग्राम परिवार सभा से विश्व परिवार सभा तक रहेगा। इसी में दूरसंचार, परिवहनों का धारकता, वाहकता, उसकी रखरखाव की व्यवस्था सुपरिमार्जित रूप में बना रहेगा। शिक्षा–संस्कार पूर्वक आवश्यकीय सभी तकनीकी शिक्षा को जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन सहित सह–अस्तित्व मानसिकता से सम्पन्न कराने की व्यवस्था रहेगी। फलस्वरूप न्याय सुलभता और स्वास्थ्य–संयम समितियों का अंतरसम्बन्ध अपने–अपने विशालता सहित सम्पूर्ण कार्य करने की व्यवस्था रहेगी। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर: 240–242)**

- जितने समय में जो वस्तु जिस तकनीकी मानसिकता पूर्वक हस्तलाघव सहित परिमापित रूप में स्पष्ट हो गई, उसे एक उत्पादन अथवा एक श्रम के रूप में पहचानना सहज है। उसी के समान कार्य (श्रम) के साथ **विनिमय** होना स्वाभाविक है। ऐसी हर वस्तु का मात्रा और गुण के साथ श्रम परिमापन मानव सहज उपलब्धि है और सुगम है। इसके साथ एक परिशीलन वस्तु अवश्य ही मानव के मन में आता है क्या प्रत्येक मानव का हस्तलाघव, निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य एक सा हो पाता है? इसका उत्तर यही मिलता है कि परिवार में जितने भी समझदार व्यक्ति रहते हैं उनसे वह लक्षित कार्य पूरा होता ही रहता है। परिवार में एक दिन एक आदमी उत्पादन में कम पूरक हुआ, दूसरे दिन ज्यादा पूरक हुआ, इसकी नापतौल की आवश्यकता नहीं बन पाती। वस्तु उत्पादन कार्य को सीखने–करने में ज्यादा कम रहता है यही प्रधान मुद्दा है। किसी वस्तु के उत्पादन में अकेले से कुछ होता ही नहीं है। एक से अधिक लोगों के बीच में ही किसी वस्तु का उत्पादन संभव है। मूल्यांकन के लिए एक से अधिक व्यक्तियों का होना ही है। **विनिमय** के लिए और व्यक्ति परिवार की आवश्यकता ही है। व्यक्ति के सीमा में कोई उत्पादन का निर्णय नहीं होता। इस बात को पहले से ही स्पष्ट किया है हर मानव किसी न किसी मानवीयतापूर्ण परिवार में प्रमाणित होगा। हर मानव बहुआयामी अभिव्यक्ति है इसलिए उत्पादन–कार्य एक आयाम है। परिवार में लक्ष्य उत्पाद है न कि श्रम ज्यादा कम। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:249–250)**

- **विनिमय** कार्य विधि की यह सही बेला है। मानव ने पहले भी एक बार **विनिमय** का प्रयास किया। उस प्रयास में उत्पादन कार्य के मूल्यां्कन का आधार श्रम मूल्य नहीं रहा। उसके विपरीत लाभ मानसिकता उस समय में भी व्यापारी में बना रहा। लाभ मानसिकताएँ शोषण मूलक होते ही हैं। इसमें संग्रह–सुविधा का पुट रहता ही है। यह आज भी स्पष्टतया दिखाई पड़ता है। इस आधार पर मानव अपने व्यवस्था का अंगभूत अथवा समग्र व्यवस्था के अंगभूत रूप में अर्थ और आर्थिक गति को पहचानने की स्थिति में यह पता लगता है कि अस्तित्व में सम्पूर्ण विकास सहज सीढ़ियाँ आवर्तनशीलता और पूरकता विधि सम्पन्न है। सह–अस्तित्व में निरंतर पूरकता और विकास ही समाधान के रूप में स्पष्ट है। इसी क्रम में मानव अपने दृष्टा पद प्रतिष्ठा को पहचानने के उपरांत ही स्वयं में व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी होने की आवश्यकता को अनुभव किया और जागृतिमूलक विधि से ही परिवार मूलक स्वराज्य मानव सहज पद होना मानव का अभिलाषित, आकांक्षित और आवश्यकता के रूप में पहचाना गया। सर्वशुभ सर्वसुलभ होने के लिए आवर्तनशील अर्थव्यवस्था की समग्र व्यवस्था के अंगभूत कार्यक्रम होना देखा गया है। इसी विधि से पहला आर्थिक असमानताएँ समाप्त होते हैं और समृद्धि के आधार पर हर समझदार परिवार में प्रमाण सुलभ होना सहज है। दूसरा, प्रतीक मूल्य से छूटकर प्राप्त मूल्यों से तृप्त होने का सूत्र सहज रूप में रहा है उसमें जागृति प्रमाणित होती है। तीसरा, संग्रह का भूत संघर्ष के साथ शोषण के साथ जुड़ा ही रहता है, यह सर्वथा दूर होकर परिवार मानव के रूप में हर व्यक्ति अपने दायित्व, कर्तव्यों का निर्वाह करने का उत्सव सम्पन्न होने का अवसर सर्वदा समीचीन रहता ही है। चौथा, परिवार मानव विधि से ही स्वराज्य व्यवस्था उसके अंगभूत आवर्तनशील अर्थव्यवस्था गतिशील होने के क्रम में ही विश्व परिवार और व्यवस्था के साथ सूत्रित होने का कार्यक्रम मानव जागृति सहज वैभव के रूप में होना समझा गया। और यह इस तथ्य का द्योतक है समुदायों के सीमाओं में स्वीकृत प्रत्येक मानव दिशाविहीनता, लक्ष्यविहीनता फलत: सार्वभौम कर्तव्य विमूढ़ता से ग्रसित हो गया है। इस पीड़ा से छूटने का सर्वसुलभ कार्यक्रम और मार्ग प्रशस्त होना समीचीन है। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:250–251)**
- परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना
    1) स्वराज्य व्यवस्था के लिए पूर्व तत्परता एवं आंकलन
    2) स्वराज्य सभा
    3) शिक्षा–संस्कार व्यवस्था
    4) उत्पादन–कार्य व्यवस्था
    5) स्वायत्त सहकारी **विनिमय–कोष** व्यवस्था
    6) स्वास्थ्य–संयम व्यवस्था
    7) न्याय–सुरक्षा व्यवस्था
    8) मूल्यांकन, प्रोत्साहन नियंत्रण प्रक्रिया **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:253)**

- **विनिमय सम्बन्धी आंकलन** :–

  सभी उत्पादित वस्तुओं की संख्या, तादाद, प्रकार, उपयोगिता व मूल्य। वर्तमान में **विनिमय** व्यवस्था का आंकलन। कितनी दुकानें हैं, कितने व्यक्ति क्रय–विक्रय कार्य में लगे हुए हैं। गोदाम आदि स्टोरेज व्यवस्था का आंकलन।

  स्थानीय रूप से आवश्यक वस्तुएँ जो बाह्य बाजारों से खरीदी और बेची जाती हैं। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:257)**

- न्याय सुरक्षा सम्बन्धी आंकलन :–

  1) ग्राम का प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और पात्रता के अनुसार उत्पादन करता है या उत्पादन में भागीदार है या नहीं ? के रूप में उत्पादन न्याय का आंकलन।
  2) उत्पादित वस्तुओं का शोषण विहीन पद्धति से कहाँ तक **विनिमय**, आदान–प्रदान हो रहा है–के रूप में **विनिमय** न्याय का आंकलन।
  3) स्वधन, स्वपुरूष/स्वनारी, दया पूर्ण कार्यों और तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर, आचरण–न्याय का आंकलन।
  4) सम्बन्धों के साथ विश्वास निर्वाह के रूप में, व्यवहार–न्याय का आंकलन।
  5) वर्तमान में कितने अपराध और अपराधी हैं ? कितने अपराध जमीन जायदाद सम्बन्धी है ? नारी–पुरूष सम्बन्धों से संबंधित अपराध कितने दर्ज हैं ? ऐसे दर्ज अपराधों की संख्या कितनी है जिनका निर्णय होना शेष है ?
  6) वर्तमान न्याय–व्यवस्था के प्रति मानसिकता कैसी है ?
  7) गाँव सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं का आंकलन व वर्तमान में सुरक्षा व्यवस्था कैसी है ? **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:259)**

- **स्वराज्य सभा**

  कार्य शैली :–

  प्रत्येक ग्राम सभा, "ग्राम स्वराज्य व्यवस्था" को स्थापित करने के लिए निम्न ' समितियों का गठन करेगी :–

  1) मानवीय शिक्षा–संस्कार समिति
  2) उत्पादन–कार्य व सलाहकार समिति
  3) लाभ–हानि मुक्त सहकारी **विनिमय**–कोष समिति
  4) स्वास्थ्य–संयम समिति
  5) मानवीय न्याय–सुरक्षा समिति

  उपर्युक्त समितियाँ ग्राम सभा के मार्गदर्शन के आधार पर कार्य करेंगी। उपरोक्त समितियाँ क्रम से ग्राम में शिक्षा–संस्कार व्यवस्था, उत्पादन–कार्य व्यवस्था, **विनिमय**–कोष व्यवस्था, स्वास्थ्य–संयम व्यवस्था व न्याय सुरक्षा

व्यवस्था को स्थापित करेंगी। उपरोक्त समिति के सदस्यों का मनोनयन ग्राम सभा करेगी। प्रत्येक मनोनीत सदस्य इन समितियों का अंशकालिक सदस्य होगा व वह अपनी समिति का कर्तव्य एवं दायित्यों का निर्वाह अपने निजी व्यवसाय के अलावा करेगा। वयोवृद्ध स्त्री व पुरूष, जो जीवन विद्या व वस्तु विद्या में पारंगत है उनको समितियों के अंशकालिक व पूर्णकालिक सदस्य होने का अवसर रहेगा। प्रत्येक समिति का विस्तृत कार्यक्रम अगले खंडों में विस्तार से दिया गया है। ग्राम स्वराज्य व्यवस्था के लक्ष्य निम्न होंगे :–

1. गाँव के प्रत्येक मानव को मानवीय शिक्षा संस्कार से सम्पन्न करना।

2. प्रत्येक व्यक्ति को व्यवसाय में निपुणता–कुशलता को सहज सुलभ करना।

3. प्रत्येक व्यक्ति को व्यवहार में सामाजिक बनाना।

4. प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी उत्पादन कार्य में प्रवृत्त करना।

5. उत्पादित वस्तुओं को **विनिमय कोष** द्वारा, लाभ हानि मुक्त पद्धति से क्रय–विक्रय करने की व्यवस्था प्रदान करना और ग्रामवासियों के लिए आवश्यकीय वस्तुओं को उपलब्ध कराना।

6. प्रत्येक व्यक्ति को न्याय व सुरक्षा सहज सुलभ कराना। साथ ही सुधारवादी प्रक्रिया से, गलती व अपराधों का निराकरण करना।

7. प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति अवधारणा पूर्वक संकल्पबद्ध करना, व्यायाम व खेलों के लिए प्रोत्साहित करना, संक्रामक रोग–विरोधी टीकों की उपयोगिता से अवगत कराना। साथ ही सहज व सस्ती चिकित्सा की व्यवस्था करना।

8. प्रत्येक व्यक्ति में स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, परिवार व्यवस्था के प्रति विश्वास व निष्ठा उत्पन्न करना।

9. प्रत्येक व्यक्ति/परिवार अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादन करे, ऐसा सुनिश्चित उपाय करना।

10. ग्राम के लिए सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करना।

11. व्यक्तित्व व प्रतिभा का संतुलन उदय हो, ऐसा सुनिश्चित उपाय करना।

12. प्रत्येक परिवार में भौतिक समृद्धि व बौद्धिक समाधान साक्षित करना, समस्त ग्रामवासियों की परस्परता में अभयता व सह–अस्तित्व चरितार्थ करना। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:262–264)**

- कर्तव्य व दायित्व :–

  1) ग्राम सभा पूर्ण रूप से ग्रामवासियों के प्रति उत्तरदायी होगी। साथ ही वह "ग्राम समूह सभा" के प्रेरणा व उनके द्वारा दिए गए सुझावों पर निर्णय लेगी।

  2) सर्वेक्षण, आंकलन व अध्ययन के आधार पर प्रत्येक परिवार के लिए समयबद्ध स्वराज्य कार्य योजना बनाएगी व क्रियान्वयन के लिए विभिन्न समितियों को आवश्यक निर्देश देगी।

3) ग्राम की पाँचो समितियों के साथ उनके अपने–अपने लक्ष्य प्राप्त करने में पूर्ण सहयोग देगी व उनके लिए जो भी सुविधायें, तकनीकी ज्ञान आदि की आवश्यकता होगी उसे उपलब्ध करायेगी।

4) "**विनिमय** कोष" व सरकारी बैंक के बीच संयोजन (एजेन्सी) का कार्य करेगी।

5) पाँचों समितियों के कार्यों का समय–समय पर मूल्यांकन करेगी व उन्हें आवश्यक निर्देश देगी।

6) सर्वेक्षण, आंकलन, अध्ययन व प्राथमिकताओं के आधार पर ग्राम में सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करेगी। इस दिशा में यदि किसी समिति व अन्य संस्थाओं के सहयोग की आवश्यकता हुई तो उसे प्राप्त करेगी।

7) निम्न सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था ग्रामसभा द्वारा की जायेगी –

    1) प्रत्येक परिवार के लिए आवास का प्रावधान। इसके लिए स्थानीय व्यक्तियों व वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग किया जावेगा।

    2) शोधन विधि द्वारा शुद्ध व पवित्र पीने के पानी की व्यवस्था।

    3) पेयजल व मल जल की व्यवस्था करना।

    4) कृषि के साथ पशु पालन आवश्यक होने के कारण "गोबर गैस प्लांट" द्वारा, गोबर गैस गाँव में सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से उपलब्ध कराना। प्राकृतिक गैस उपलब्ध होने की स्थिति में, उसका सर्वाधिक उपयोग करने की, प्रणाली को विकसित करना।

    5) गोबर खाद व कम्पोस्ट खाद के लिए व्यापक व्यवस्था करना।

    6) सौर–ऊर्जा का सर्वाधिक प्रयोग करने की प्रणाली विकसित करना ताकि उसका उपयोग, पानी पंप करने, खाना पकाने, वाष्पीकरण, अनाज सुखाने, ठंडा या गर्म करने में किया जा सके, जिससे लकड़ी, कोयला आदि परंपरागत ईंधनों को जलाने से रोका जा सके। इसी संदर्भ में पवन चक्की व जल प्रवाह शक्ति की उपयोगिता की संभावना का पता लगाना व यदि संभव हुआ तो क्रियान्वयन करना।

    7) प्रत्येक घर के साथ शौचालय व सामूहिक शौचालय की व्यवस्था करना।

    8) सड़क मार्ग, रेल, यातायात–व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना व निकट की मंडियों व बाजारों की सड़कों से जोड़ना।

    9) दूरभाष व दूरसंचार सेवा, डाक घर, बैंक आदि की व्यवस्था करना।

    10) ग्राम के लिए पाठशाला, चिकित्सा केन्द्र, **विनिमय**–कोष के लिए भवन, गोदाम, बहुद्देश्यीय भवन की व्यवस्था करना जो न्याय सभा, संबोधन सभा, सांस्कृतिक–सभा, विवाह व मिलन–सभा, प्रार्थना सभा, स्वागत सभा व छाया के अंदर खेलने के लिए उपयोगी रहेगा। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:264–266)**

- 5. व्यवसाय शिक्षा के लिए "शिक्षा–संस्कार समिति" "उत्पादन सलाहकार समिति" व "**विनिमय–कोष समिति**" के साथ मिलकर कार्य करेगी व सम्मिलित रूप से यह तय करेगी कि ग्राम की वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, किस–किस व्यक्ति को, किस–किस व्यवसाय की शिक्षा दी जाए। "**विनिमय**–कोष समिति" ऐसे उपायों की जानकारी देगी, जिनकी गाँव से बाहर अच्छी मांग है। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:270)**
- **(उत्पादन कार्य व्यवस्था)**

  कृषि :–

  वर्तमान स्थिति में ग्राम की कृषि उपज, फसलों की किस्में प्रकार, तादाद, कृषि में व्यस्त धन–बल, कृषि भूमि, पड़ती भूमि, कृषि संभावित भूमि, सिंचाई, उर्वरक, व्यवस्था, पशुपालन व्यवस्था आदि के आधार पर "उत्पादन–कार्य सलाहकार समिति" ग्राम सभा व **विनिमय** समिति के साथ मिलकर, एक ग्रामव्यापी कृषि योजना तैयार करेगी। जिसमें पशुपालन व ग्राम सीमावर्ती वन प्रबंध का समावेश होगा। योजना में पूरे ग्राम की स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर धान, गेहूँ, दलहन, तिलहन, मसाला, सुगन्धित वनस्पतियों, औषधियों, रेशा, कन्द जाति की उपजों, साग सब्जियों, फलों आदि की आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने का कार्यक्रम होगा। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:273–274)**
- वन वनोपज व वनौषधि :–

  गाँव सीमावर्ती वनों (यदि वे हैं तो) का प्रबंध, "उत्पादन–कार्य सलाहकार समिति" द्वारा किया जायेगा। वनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी प्रत्येक गाँव वासी की होगी। वन से वनोपज व वनौषधियों के संग्रह की व्यवस्था उत्पादन सलाहकार समिति करेगी। कुछ ग्राम वासियों की आजीविका का साधन वनोपज व वनौषधियों का संग्रह करना ही होगा। उनके द्वारा संग्रह करने के आधार पर ही **विनिमय** कोष क्रय कर उनका मूल्य देगा।

  गाँव के लिए वनों से लकड़ी की आवश्यकता की पूर्ति सदुपयोगिता अनुसार "उत्पादन–कार्य सलाहकार समिति" तय करेगी ताकि वनों के संरक्षण में कोई कमी न आये। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:276–277)**
- खनिज :–

  स्थानीय विविध उत्पादनों, आवास निर्माण सड़क मार्ग आदि में लगने वाली खनिज वस्तुओं उचित स्थान से उपयोग करने की व्यवस्था "उत्पादन–कार्य सलाहकार समिति" द्वारा होगी। यदि खनिज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, व उसकी गाँव से बाहर भी मांग है, उस स्थिति में कुछ व्यक्ति खनिज–उत्पादन के आधार पर मूल्य "**विनिमय**–कोष" द्वारा दिया जायेगा। उत्पादित खनिजों का **विनिमय**, **विनिमय** कोष द्वारा ही किया जाएगा। उत्पादित खनिजों के स्थल में उनमें व्यवसाय मूल्य को स्थापित करने की व्यवस्था रहेगी। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:277)**

- हस्त शिल्प, हस्त कला संबंधी उत्पादन कार्य :–

  स्थानीय रुप से उपलब्ध, जानकारी व आवश्यकताओं के आधार पर गाँव के कुछ सदस्यों को निम्न कार्यों में लगाया जाएगा। इसके लिए प्रशिक्षण व अन्य सुविधाओं की व्यवस्था "उत्पादन–कार्य सलाह समिति" करेगी। सभी उत्पादित वस्तुओं को **विनिमय**–कोष समिति खरीदेगी व वह उसका उचित मूल्य देगी।

  चित्र–कला, मूर्ति–कला, बुनाई, कढ़ाई, छपाई, सिलाई दस्तकारी, रंगाई, सूत कातना, सूखा पत्ता, कागजों से अलंकारिक स्वरुप देने का कार्य, ग्रिटिंग्स कार्ड बनाने का कार्य, एम्ब्राइडरी, इनग्रेव्हिंग का कार्य, स्थानीय अनुभवों के आधार पर तत्काल क्रियान्वयन करना व उनको और ज्यादा कुशल, उन्नत और प्रोत्साहित करने की व्यवस्था होगी। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:277–278)**

- 5. **स्वायत्त सहकारी विनिमय–कोष व्यवस्था –**

  गाँव में हर तरह का **विनिमय** "सहकारी **विनिमय**–कोष समिति" द्वारा संचालित "स्वायत्त सहकारी **विनिमय**–कोष द्वारा किया जायेगा। स्वायत्त का तात्पर्य समझदारी सहित आवश्यकता से अधिक उत्पादन। **विनिमय** कोष, गाँव की मुख्य संस्था होगी। इसका अपना अलग से संविधान होगा। यह संस्था लाभ–हानि मुक्त व्यवस्था पर कार्य करेगी। इसका मुख्य उद्देश्य गाँव के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उत्पादित वस्तुओं का क्रय करना व उनकी आवश्यकता अनुसार वस्तुओं का विक्रय करना होगा। साथ ही यह कोष "उत्पादन–कार्य **विनिमय** सलाहकार समिति" व "शिक्षा समिति" के साथ मिलकर कार्य करेगी व व्यापारी करण के स्थान पर उत्पादनीकरण पर ध्यान देगी। **विनिमय** कोष की कार्य पद्धति निम्न प्रकार से होगी।

  विनिमय कोष (बैंक) नौकरी की मानसिकता को हटाकर उत्पादन की मानसिकता को लाने के लिए शिक्षा समिति के साथ सहयोग करेगा। यह गाँव में रह रहे सब व्यापारियों को होडिंग (संग्रह) के स्थान पर उत्पादनीकरण का कार्य के लिए प्रेरणा, व प्रशिक्षण भी देगा। इस तरह लाभ–हानि मुक्त उत्पादन व **विनिमय** व्यवस्था जो कि श्रम के आदान प्रदान व आवर्तनशीलता पर आचरित होगी, को स्थापित करने में **विनिमय** कोष कार्य करेगा।

  विनिमय व्यवस्था बैंकिग पद्धति पर आधारित होगी। प्रत्येक व्यक्ति जो स्थानीय सीमावर्ती निवासी है व उत्पादित वस्तुओं का विक्रय करता है और आवश्यकीय वस्तुओं का क्रय करता है, वह इस कोष का खातेदार (सदस्य) होगा। प्रत्येक व्यक्ति का खाता **विनिमय** कोष में होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादित वस्तुओं को **विनिमय** कोष को बेचेगा। वस्तु मूल्य निकटस्थ बाजार भाव के आधार पर तय होगा (निकटस्थ बाजार में जाकर बेचने से, जो दाम मिलेंगे उसमें परिवहन मूल्य घटा दिया जायेगा। विक्रय मूल्य निकटस्थ बाजार भाव के अनुसार तय होगा।

  कोष इसी तरह बाहर (शहर व अन्य बाजारों) से वस्तुओं को थोक भाव खरीदेगा व अपने सदस्यों को उपरोक्त पद्धति से बेचेगा। इसी तरह कोष में गाँव के सदस्यों द्वारा, बेची हुई वस्तुएँ, जो स्थानीय आवश्यकता से बच

जायेगी, उन्हें शहर व अन्य बाजारों में बेचेगा व उनका मूल्य प्राप्त करेगा। इस क्रय विक्रय से जो कुछ भी अनायास लाभ होगा, उसको गाँव की सामान्य सुविधाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए अर्पित किया जावेगा। यह कार्य ग्राम स्वराज्य सभा द्वारा संचालित किया जाएगा। इसी धन को गाँव के विकास पर खर्च किया जावेगा। कोष में प्रत्येक सदस्य की न्यूनतम राशि हमेशा जमा रहेगी ताकि कोष का कार्य सुचारु रुप से चलाया जा सके। जिसकी राशि नहीं होगी उसे कोष, ब्याज रहित ऋण देगा। जिसे वह सदस्य वस्तु का उत्पादन कर, कालान्तर में बैंक को विक्रय कर चुकता कर देगा।

जिन सदस्यों ने न्यूनतम से अधिक राशि, खाते में रखी है उनकी सहमति से, **विनिमय** कार्य के लिए आवश्यकता पड़ने पर, **विनिमय** कोष, उस धन राशि का उपयोग करेगा व अन्य राष्ट्रीय कृत बैंक से जो ब्याज मिलता है वह उनको देगा। यह विधि तब तक रहेगी, जब तक, बैंक व **विनिमय**–प्रणाली अलग–अलग रहेगी। पूरे देश में स्वराज्य व्यवस्था स्थापित होने पर लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** प्रणाली स्थापित हो जाएगी।

गाँव से सभी प्रकार की कर वसूली का दायित्व **विनिमय** कोष का होगा। कर निर्धारण का कार्य ग्राम सभा करेगी।

संक्रमण काल में उपरोक्त बैंक का गारन्टी दार, राष्ट्रीय कृत सहकारी बैंक होगा जो आरंभ से उसे कार्यशील पूंजी व अन्य ऋण देगा। हानि की भर पाई करेगा। **विनिमय**–कोष ही आगे अपने सदस्यों को ऋण देगा व वह ही उनसे वसूली करेगा। प्रत्येक सदस्य जो ऋण लेगा वह उत्पादित वस्तुओं के रुप में **विनिमय** कोष का ऋण लौटा देगा।

विनिमय–कोष शनैः–शनैः सरकारी बैंक से ली गई पूंजी को लौटाता रहेगा। इस तरह सरकारी बैंक के रुपये का ज्यादातर उपयोग होगा।

आरंभ में समाज सेवी (प्रशिक्षण प्राप्त) व्यक्ति **विनिमय** कोष को चलावेंगे। बाद में स्थानीय व्यक्ति जब व्यवहार शिक्षा/व्यवसाय शिक्षा में पारंगत हो जावेंगे तब वह उस बैंक को चलावेंगे।

सौ परिवार समूह के गाँव के लिए औसतन तीन व्यक्ति **विनिमय** कोष को चलावेंगे। इसमें से एक व्यक्ति गाँव में उत्पादित वस्तुओं को, अन्य बाजार में बेचेगा व अन्य बाजारों से सामान क्रय कर, **विनिमय** बैंक में लाएगा। दूसरा व्यक्ति लेखा जोखा व खातों की देख–रेख करेगा। तीसरा व्यक्ति सामान का क्रय–विक्रय करेगा। व उनको भंडार में रखने की व्यवस्था करेगा। आवश्यकता पड़ने पर अन्य व्यक्तियों को भी **विनिमय** कोष में मनोनीत किया जा सकता है।

विनिमय–कोष के काम काज को सुगम बनाने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जायेगा। कालान्तर में **विनिमय**–कोष व्यवस्था, पूरे राज्य व देश में, स्थापित हो जाने पर, ग्राम **विनिमय**–कोष क्रय से, ग्राम समूह क्षेत्र, जिला मंडल, मुख्य राज्य व प्रधान राज्य के **विनिमय** कोष समितियों के साथ आदान–प्रदान से जुड़ा रहेगी। "**विनिमय–कोष**" संविधान के अनुसार, कार्य करता रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी **विनिमय** कोष समिति की होगी। जो समय–समय पर खातेदार सदस्यों की सामान्य बैठक बुलाकर, उनके सामने प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा। सामान्य

बैठक में बहुमत के आधार पर मार्ग–दर्शन प्राप्त कर सकेगा। **विनिमय** कोष समिति के कार्य का मूल्यांकन ग्राम सभा करेगी व समय–समय पर उन्हें मार्ग दर्शन देगी।

कृषि उपज और प्रौद्योगिकी उपज में श्रम मूल्य के आधार पर, मूल्यांकन को स्थापित करने वाली व्यवस्था रहेगी। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:279–283)**

- ...न्याय–सुरक्षा समिति, मानवीय आचार संहिता के अनुसार न्याय प्रदान करेगी। मानवीय आचार संहिता के अनुसार न्याय व्यवस्था के चार प्रधान आयाम है :–
  1) चरित्र में न्याय
  2) व्यवहार में न्याय
  3) उत्पादन में न्याय
  4) **विनिमय** में न्याय। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:285–286)**
- उत्पादन में न्याय
  1) प्रत्येक व्यक्ति द्वारा आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना।
  2) प्रत्येक व्यक्ति में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने योग्य कुशलता व निपुणता को स्थापित करना, जिसका दायित्व शिक्षा–संस्कार समिति को होगा।
  3) उत्पादन के लिए व्यक्ति में निहित क्षमता योग्यता के अनुरूप उसे प्रवृत करना जिसका दायित्व "उत्पादन कार्य सलाहकार समिति" का होगा।
  4) उत्पादन के लिए आवश्यकीय साधनों को सुलभ करना इसका दायित्व " **सहकारी विनिमय कोष समिति"** का होगा।
  5) उत्पादन कार्य सामान्य आकांक्षी (आहार, आवास, अलंकार) महत्वाकांक्षी (दूर दर्शन, दूर गमन, दूर श्रवण) सम्बन्धी वस्तुओं के रुप में प्रमाणित होना।
  6) "उत्पादन कार्य सलाह समिति" व "**विनिमय कोष समिति"** संयुक्त रुप से सम्पूर्ण ग्राम की उत्पादन सम्बन्धी तादात, गुणवत्ता व श्रम मूल्यों का निर्धारण करेगी। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:289–290)**
- **विनिमय में न्याय**
  1) उत्पादित वस्तु के विक्रय के लिए क्रय आदान–प्रदान सुलभ करना।
  2) **विनिमय** प्रक्रिया प्रथम चरण में, श्रम मूल्य को वर्तमान में प्रचलित प्रतीक मुद्रा के आधार पर मूल्यांकित करने की व्यवस्था रहेगी। जैसे स्थानीय उत्पादन को, जहां उसको बेचना है, उस मंडी की दरों पर आधारित उसका क्रय मूल्य निर्धारित होगा। ग्राम की आवश्यकता के लिए अन्य बाजारों से, वस्तुओं का विक्रय मूल्य, उन बाजारों के क्रय मूल्य पर आधारित होगा।

3) द्वितीय चरण के श्रम के आधार पर प्रतीक मुद्रा को मूल्यांकन करने की व्यवस्था होगी व उसी के आधार पर क्रय विक्रय कार्य सम्पन्न होगा।
4) तृतीय चरण में श्रम मूल्य के आधार पर, वस्तु मूल्य का मूल्यांकन होगा जिसका आधार उपयोगिता व कला मूल्य ही रहेगा व इसी के अनुसार लाभ, हानि, संग्रह मुक्त पद्धति से **विनिमय** प्रक्रिया संपन्न होगी। अर्थात् **विनिमय** प्रक्रिया श्रम मूल्य के आदान प्रदान के रूप में सम्पन्न होगी। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:290–291)**

- “न्याय सुरक्षा समिति” सुरक्षा कार्य को ग्राम वासियों के तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर क्रियान्वयन करेगा। जैसे :–

1) ग्राम में सुरक्षा.
2) **उत्पादन एवं विनिमय सुरक्षा**.
3) परिवार सुरक्षा.
4) मानवीय शिक्षा–संस्कार सुरक्षा.
5) स्वास्थ्य संयम सुरक्षा.
6) नैसर्गिक सुरक्षा.
7) संगीत, साहित्य, कला की सुरक्षा.

“न्याय सुरक्षा समिति” ग्राम की सभी प्रकार की सुरक्षाओं के प्रति जागरूक रहेगी। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:291)**

- **विनिमय में सुरक्षा** :–

1) श्रम मूल्यों को पहिचानने की दिशा में “सुरक्षा समिति” निरंतर सजग रहेगी। एक श्रम मूल्य का आकलन जो कुछ भी ग्राम स्वराज्य स्थापना दिवस में प्रमाणित रहेगा, उसकी गति के प्रति सतर्क रहेगा। निपुणता, कुशलता, कार्य गति, समय व साधन के कुल संयोग से श्रम का मूल्यांकन होगा। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में उत्पादन गति में वृद्धि करे, श्रम मूल्य में कमी और **विनिमय** में उसकी समृद्धि के अर्थ को सार्थक बनाने का कार्य समिति करेगी।
2) लाभ–हानि के सम्बन्ध में सतर्क रहना। (अनावश्यक लाभ और असहनीय हानि न होने के लिए सतर्क होना) उसके लिए सभी व्यवस्था प्रदान करना।
3) वस्तु की उत्पादकता के आधार पर मूल्यांकन करने में सतर्क रहना व कार्यरूप देना।
4) सभी **विनिमय** की संभावना को बनाए रखने में सतर्क रहना व प्रोत्साहित करना। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:293–294)**

- **विनिमय–कोष सलाहकार समिति का मूल्यांकन :–**

  “**विनिमय**–कोष सलाहकार समिति” का मूल्यांकन निम्न आधार पर होगा :–

1) विनिमय सहजता व सुलभता का मूल्यांकन।
2) विनिमय में लाभ हानि मुक्त प्रणाली का मूल्यांकन।
3) विनिमय प्रणाली में स्वच्छत्ता का मूल्यांकन।
4) विनिमय क्रियाकलाप में, परिमाण, परिमापन, का मूल्यांकन।
5) विनिमय कोष द्वारा उत्पादन और सहायता का मूल्यांकन।
6) विनिमय श्रम में गुणवत्ता का मूल्यांकन।
7) स्थानीय रूप से खरीदने वाली वस्तुओं क्रय–मूल्य, उसके विक्रय मूल्य के आधार पर और ग्राम वासियों के लिए बाह्य बाजारों से क्रय किया गया वस्तुओं का मूल्यांकन (क्रय मूल्य के आधार पर)
8) साधन प्रबंधो का मूल्यांकन। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:297)**

- “न्याय–सुरक्षा समिति” का मूल्यांकन :–

  “न्याय–सुरक्षा समिति” का मूल्यांकन निम्न आधारों पर होगा :–

1) आचरण में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।
2) व्यवहार में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।
3) उत्पादन में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।
4) **विनिमय में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।**
5) तन, मन, धन, रूपी अर्थ की सुरक्षा का मूल्यांकन।
6) ग्राम व प्राकृतिक वातावरण की सुरक्षा का मूल्यांकन।
7) उत्पादन एवं **विनिमय** सुरक्षा का मूल्यांकन।
8) परिवार सुरक्षा का मूल्यांकन।
9) शिक्षा संस्कार सुरक्षा का मूल्यांकन।
10) स्वास्थ्य संयम सुरक्षा का मूल्यांकन।
11) नैसर्गिक सुरक्षा का मूल्यांकन। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:298–299)**

मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

(**संस्करण**: 2008)

- जीवन सहज रूप में बल और शक्तियां अक्षय हैं, अविभाज्य हैं और शाश्वत हैं। इनमें से बलों का नाम मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा और शक्तियों का नाम आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा और प्रामाणिकता दिया गया है। जीवन सहज बलों में संगीतीकरण ही, मन: स्वस्थता का सम्पूर्ण स्वरूप है। शक्तियों में संगीतीकरण ही व्यवहार में प्रमाणित होने का सूत्र है। मानव परम्परा में परस्परता और व्यवहार, एक सहज कार्यकलाप है। जीवन में अनुभव, मन: स्वस्थता का परम है क्योंकि अनुभव सत्य में, से के लिए होता है, उसका प्रमाण व्यवहार परम्परा में ही सार्थक होना संभव है। ऐसे बलों में संगीतीकरण को देखा (समझा) गया है कि जागृत जीवन सहज क्रिया व आचरण के अनुसार वृत्ति के अनुरूप मन के कार्य करने की स्थिति में सुख मिलता है, जिसका प्रमाण स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन तथा व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बी होने से है। यह तभी संभव होता है जब वृत्ति, चित्त के अनुरूप; चित्त, बुद्धि के अनुरूप; बुद्धि, आत्मा के अनुरूप; आत्मा, अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व के अनुरूप कार्य करने की स्थिति में और गति में प्रमाणित होता है। इसलिए चित्त के अनुरूप वृत्तियां तुलन और विश्लेषण संगीतीकरण विधि से, शांति सहज प्रमाण को देखा गया है। बुद्धि के अनुरूप कार्य करता हुआ चिंतन और चित्रण सत्यबोध सहज कार्यप्रणाली और प्रक्रिया में संगीतीकरण स्वयं संतोष के रूप में प्रमाणित होना पाया गया है। बुद्धि, आत्मानुरुपी विधि से, कार्यकलापों को संपन्न करती है, तब परम संगीत, आनंद के नाम से ख्यात होता है। आत्मा में, अस्तित्व के अनुरुप कार्य होना सहज है। यह सहजता, मानवीयता पूर्ण प्रामाणिकता सम्पन्न परम्परा की महिमा से सर्व सुलभ होता है। दूसरा, अनुसंधान विधि से भी संपन्न होता है। इस प्रकार बलों में संगीतीकरण प्रणाली से मन: स्वस्थता का प्रमाण और शक्तियों में संगीतीकरण प्रणाली से नैसर्गिक संतुलन, अखंड समाज में संतुलन, सार्वभौम व्यवस्था में संतुलन, मानवीय शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम सहित न्याय–सुलभता, उत्पादन सुलभता, **विनियम–सुलभता** सम्पन्न संस्कृति, सभ्यता, विधि व्यवस्था में संतुलन संभव है। इसे प्रमाणित करने के क्रम में ही "मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान" की सहज प्रस्तुति है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर:15–16)**
- समृद्धि :– आवश्यकता से अधिक उत्पादन का अर्थ समृद्धि है।

  लाभ की परिकल्पना भ्रमवश, प्रलोभनवश लाभ प्रवृत्तियां, शोषणपूर्वक संग्रह सुविधा के रूप में होना स्पष्ट हो चुकी है। लाभाकांक्षा भ्रमित मनुष्य को अच्छी लगती है, इसका अच्छा होना, संग्रह सुविधा के आधार पर देखा गया। लाभ के साथ संग्रह की अनिवार्यता, दूसरे क्रम में भोग की पिपासा होना पाया जाता है। इन दोनों विधियों से मानव तो बर्बाद होता ही है। बर्बाद होने का तात्पर्य अतृप्ति की तादात का बढ़ना है, क्योंकि संग्रह का तृप्ति बिंदु नहीं है। इसी के साथ साथ संघर्ष और युद्ध एक अनिवार्य स्थिति बनती है। इसकी गवाहियां पूरी हो चुकी हैं। इसी के साथ

नैसर्गिकता में तमाम प्रदूषण फैलाना भी साक्षित हो चुका है। इस प्रकार नैसर्गिकता की बर्बादी देखने को मिलती है। इस स्थिति में भी, सुखी व समाधानित होने की अपेक्षा बनी ही रहती है।

अभी तक के आर्थिक इतिहास के आधार पर उल्लेखनीय यही रहा है कि संग्रहरत व्यक्ति, परिवार एवं देश को बड़ा या विकसित कहते आ रहे हैं। प्रलोभन का ही प्रभाव शोषण के रूप में होना पाया जाता है। इनके दुष्परिणामों को, सामाजिकता के सार्थक रूप में देखना नहीं बन पाया। यही सम्पूर्ण लाभोन्मादी सम्मोहन का प्रभाव रहा है। यहां उल्लेखनीय तथ्य यही है कि संग्रह के साथ भी, संग्रह करते हुए भी भोग, युद्ध, व्यसन में रत रहते हुए भी समृद्धि की कामना बनी ही रहती है। यही जीवन सहज, नियति सहज प्रवर्तन का साक्ष्य है। समुदाय परंपरावश ही आदमी, जीवन सहज या नियति सहज तथ्यों को पहचानने में असमर्थ रहा है। शुभ निरंतर समीचीन रहा ही है।

उक्त क्रम में समृद्धि के साथ अभय तथा समाधानापेक्षा, प्रत्येक मनुष्य में देखने को मिलती है। प्रत्येक मनुष्य जीवन के रूप में अक्षय बल, अक्षय शक्ति सम्पन्न है। शरीर के रूप में सीमित बल व शक्ति के रूप में है। साथ ही मनुष्य शरीर व जीवन का संयुक्त साकार रूप है। इसी सत्यतावश भौतिक रासायनिक वस्तुएं शरीर की आवश्यकता हैं। उत्पादन क्रम में जीवन शक्तियां शरीर द्वारा नियोजित होती हैं, फलतः शरीर द्वारा आवश्यकता से अधिक उत्पादन होना मानव सहज है। यही उत्पादन सुलभता है। यह विनियम सुलभता व न्याय सुलभता पूर्वक उपयोगिता, सदुपयोगिता व प्रयोजनीयता सहित समृद्धि, समाधान, अभय, सह–अस्तित्व सहज स्वराज्य व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होता है। प्रत्येक व्यक्ति का उत्पादक होना अथवा उत्पादन कार्य में भागीदार होना, मानव सहज आयाम है। निश्चित उत्पादन और लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** प्रणाली ही उसके संतुलन को स्पष्ट करती है।

स्वराज्य व्यवस्था के प्रधान आयाम पांच हैं :–

(1) न्याय सुलभता (2) उत्पादन सुलभता (3) **विनिमय सुलभता**

(4) स्वास्थ्य संयम सुलभता (5) शिक्षा संस्कार सुलभता।

प्रथम तीनों के स्रोत के रूप में मानवीयतापूर्ण शिक्षा संस्कार सुलभता और स्वास्थ्य संयम सुलभताएं, समाविष्ट रहती ही हैं। यही मानव परम्परा की विवेक व विज्ञान पूर्ण गति व संगति है। प्रत्येक मनुष्य व्यवस्था को ही वरता है। व्यवस्था में, से, के लिए समृद्धि सहज है। अस्तु स्वयं व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी के वैभव क्रम में ही उपयोगिता, सदुपयोगिता और प्रयोजनीयता प्रमाणित होती है। साथ ही आवश्यकता से अधिक उत्पादन से, शोषण विहीन विनियम से तथा न्याय सुलभता से वर्तमान में विश्वास होता है। **(अध्याय:5.1, पृष्ठ नंबर:63–65)**

- सार्वभौम व्यवस्था में मानव में न्याय, **विनिमय**, उत्पादन, स्वास्थ्य–संयम और मानवीय शिक्षा–संस्कार सुलभ होता है। तभी सुखद, सुन्दर, समाधान पूर्ण समृद्ध मानव परम्परा वैभवित होगी। अतएव ऐसी सर्व वांछित घटनाओं को साकार एवं सर्वसुलभ करने के लिए प्रामाणिक परम्परा ही एक मात्र शरण है। प्रामाणिकता पूर्वक ही शिक्षा–संस्कार, संविधान व स्वराज्य व्यवस्थाएं सफल हो पाती हैं। इसीलिए प्रामाणिक परम्परा को पाने के लिए आचार्य, शिक्षक, गुरू, व्यवस्थापक, संविधान एवं शिक्षा की वस्तु का प्रामाणिक होना अनिवार्य है। इसे पाने के लिए

अस्तित्व सहज जीवन–विद्या, वस्तु–विद्या का संतुलित अध्ययन, प्रतिभा व व्यक्तित्व के संतुलित उदय का अध्ययन व व्यवहार में सामाजिक तथा व्यवसाय में स्वावलम्बन के संतुलित क्रियान्वयन का अध्ययन, प्रामाणिक परम्परा के लिए आवश्यक है। इस प्रकार गुरू का स्वरूप, प्रामाणिकता का स्वरूप, लोक मानसिकता में स्वीकृत होना पाया जाता है। **(अध्याय:5.1, पृष्ठ नंबर:78)**

- व्यवस्था में न्याय सुरक्षा सुलभता, **विनिमय** कोष सुलभता, उत्पादन कार्य सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता और मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता का संयुक्त रूप है। इसी व्यवस्था में जीने की कला, सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, व्यवस्था में भागीदारी का, संयुक्त रूप में प्रकाशित होना पाया जाता है। यह मानव संस्कृति का मध्य बिंदु है। मानव अपनी संस्कृति को व्यक्त करता है। उस समय आवास, अलंकार, उत्सव, सम्मिलित उत्सव, मानवीयता का प्रकाशन, प्रदर्शन और प्रचार, ये सब प्रधान रूप में रहना स्वाभाविक है। **(अध्याय:5.21, पृष्ठ नंबर:140)**
- मानव, जागृति क्रम में जागृति सहज आवश्यकता संपन्न है। इसका साक्ष्य है कि मानव परम्परा में ही, जानने–मानने, पहचानने–निर्वाह करने का वैभव और आवश्यकता, जागृत संचेतना के रूप में वर्तमान है। अजागृत अर्थात् भ्रमित व्यक्ति में भी जागृति की आवश्यकता बनी ही रहती है। जीवन जागृति परम्परा, अनुभव मूलक प्रणाली है। जागृति परम्परा में ही मानव सर्व शुभकारी को चिराकांक्षित स्वतंत्रता और स्वराज्य सहज सुलभ रूप में प्रमाणित होना पाया जाता है। तभी जागृत मानव में मानवीयता, सहज ही चरितार्थ होती है। मानवीयता, मानव की मौलिकता है। यही मानव का स्वभाव व मानव भाव है। मानवीयतापूर्ण भावों के अनुरूप (मूल्यों) प्रवर्तन (परावर्तन, प्रत्यावर्तन) कार्य, व्यवहार, विचार, उत्पादन, **विनिमय**, उपयोग, अपेक्षा, व्यवस्था, व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है। ऐसी मानसिकता का नाम संवेग है। संवेग पूर्णता व उसकी निरंतरता को प्रतिपादित, प्रकाशित करने वाली, जीवन जागृति सहज क्रिया है। **(अध्याय:5.21, पृष्ठ नंबर:167–168)**
- अध्ययन के लिए, सह–अस्तित्ववादी, विश्व दृष्टिकोण, अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान, समीचीन हुआ है। इसके आधार पर जीवन ज्ञान सम्पन्न होकर, स्वयं के प्रति विश्वास, और श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, प्रतिभा व व्यक्तित्व का संतुलित उदय, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में (उत्पादन में) स्वावलम्बी बनता है। फलस्वरूप अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करने की अर्हता स्थापति हो पाती है और अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, सहज सफल होती है। मानव सहज मौलिक भाव और संवेग पूर्वक इसी क्रम में जीवन अपने सम्पूर्ण वैभव को जानने, मानने के क्रम में भाव और संवेगों को पहचानने के क्रम में यह मनोविज्ञान प्रस्तुत है। इसीलिए मानवत्व रूपी भाव सहित, मानवीय आचरण व्यवहार को और मानवीय शिक्षा संस्कार को पहचानना ही एक मात्र उपाय है। इन सबके मूल में, अस्तित्व में मानव का अध्ययन ही प्रधान बिंदु है। सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व ही सम्पूर्ण भाव है। शिक्षा स्वयं में भाव है, वह सम्पूर्ण वस्तु (वास्तविकता) का स्रोत है। जागृत शिक्षा सहज अध्ययन से सम्पूर्ण भाव विदित होता है, विदित हुआ है। मूल्य स्वयं भाव है, अखंड समाज का यह सूत्र है।

व्यवस्था एक भाव है। न्याय सुलभता, **विनिमय सुलभता**, उत्पादन सुलभता, स्वास्थ–संयम सुलभता और मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभताएं उसके रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, मात्रा, उपयोग, सदुपयोग प्रयोजनशीलता के आधार पर ध्रुवीकृत होता है, परम्परा में सार्थक होता है। हरेक क्रिया के मूल में रूप, गुण, स्वभाव व धर्म अविभाज्य है। रूप और गुण में से गुण ही अर्थात गति ही संवेग है, स्वभाव व धर्म भाव है। **(अध्याय:5.21, पृष्ठ नंबर:169)**

- मानव जब मानवत्व को पहचानता है, स्वीकारता है, निश्चय करता है तभी जागृति के प्रमाण के रूप में स्वंय में व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता है। मानव का स्वत्व मानवत्व है ही, इसलिए मानवजाति का आधार मानवत्व है। स्वतंत्रता व स्वराज्य ही मानवत्व का लक्ष्य है। प्रत्येक मनुष्य मानवीयता पूर्ण आचरण में सहज विधि से मानव है। इसे हर देश काल परिस्थिति में परखा गया है। यह जागृति का वैभव है। इस प्रकार हर एक जागृत मानव का भी "त्व" सहित व्यवस्था के रूप में जागृत मानव परम्परा सहज होना स्पष्ट है। अस्तु, मानवत्व सहज समानता के आधार पर मानव का भी परम्परा के रूप में स्पष्ट होना ही, व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी होने का तात्पर्य है। मानवीयतापूर्ण मानव परम्परा में ही, मानव जाति की अखंडता वर्तमानित होती है। यही अखंड समाज का सूत्र है। जागृत मनुष्य की मौलिकता यही है। यह सम्बंधों को पहचानने व मूल्यों को निर्वाह करने के क्रम में, से, के लिए स्पष्ट है। सम्बंधों को पहचानना, निर्वाह करना तभी संभव हो पाता है जब जीवन ज्ञान अस्तित्वदर्शन, मानवीयता पूर्ण आचरण में पारंगत हो जाये इसी के लिए मानव परम्परा में बहुआयामी प्रयास की आवश्यकता है। अतएव जागृत विधि से व्यवस्था सूत्र अपने–आप निष्पन्न और प्रमाणित होता है। जागृत परिवार मानव ही अखंड समाज में भागीदारी करने में तत्पर होते है। मनुष्य मूलत: परिवार मानव है, क्योंकि परिवार में ही आरंभिक व्यक्तित्व और प्रतिभा के संतुलन की अपेक्षा एवं प्रमाण सहज होना पाया जाता है। परिवार में सम्बन्ध और मूल्यों की पहचान और निर्वाह होने के क्रम में, व्यवस्था सूत्र स्पष्ट होना पाया जाता है। ऐसे परिवार में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय सहज ही प्रमाणित होता है। न्याय का प्रामाणिक होना ही प्रधान रूप है। फलस्वरूप परिवारगत व्यवसाय भागीदारी सहज हो जाता है। व्यवसाय के साथ **विनिमय** की अनिवार्य स्थिति बनती है। विनियम सहजता के लिए विभिन्न वस्तुओं को श्रम मूल्य के आधार पर विनियम कार्य को स्थापति कर लेना मानव सहज कार्य है। इस क्रम में श्रम मूल्य और श्रम को पहचानना, एक अनिवार्यता बन पाती है। श्रम मूल्य का स्रोत, प्रत्येक मनुष्य में स्वस्थ शरीर के द्वारा, स्वस्थ मानस ही है। स्वस्थ मानस का स्वरूप, प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य स्थापित करने, सम्बंधों व मूल्यों को पहचानने व निर्वाह करने, व मूल्यांकन करने के रूप में प्रमाणित होता है। इसी के साथ अस्तित्व, अस्तित्व में सह–अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन–जागृति, रासायनिक–भौतिक रचना–विरचनाओं के प्रति समझदारी, जो जानने–मानने के रूप में प्रमाणित होती है, यही स्वस्थ मानस का स्वरूप है। इसे निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य के नाम से इंगित कराया जाता है। निपुणता = प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता व कला मूल्य को स्थापित कर प्रमाणित करना। कुशलता = प्राकृतिक

ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य स्थापित करना। पांडित्य = ज्ञान विज्ञान विवेक सम्मत सूझ–बूझ तैयार करने तद्नुसार प्रमाणित होने से है। यह प्रत्येक मनुष्य में, से, के लिए संभव है। ऐसी संभावना को सर्वसुलभ बनाए रखना मानव परम्परा है। ऐसी मानव परम्परा के आधार पर ही मानव जाति की एकता, अखंडता व अक्षुण्णता सहज ही होना पाया जाता है। इस प्रकार मानव जाति एक ही है। यह अपने आप स्पष्ट है। परम्परा का वैभव अथवा मानव परम्परा का वैभव, ज्ञानावस्था का मानव, संस्कारानुषंगी अभिव्यक्ति होने के कारण मानवीय शिक्षा, संस्कार, मानवीय संविधान, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था मानवीयतापूर्ण संस्कृति–सभ्यता परम्परा का प्रधान आयाम है। जागृत मानव संस्कृति सभ्यता सहित सार्वभौम व्यवस्था और अखंड समाज में भागीदारी का प्रमाण है। उसकी सार्वभौमता सहज है। **(अध्याय:5.21, पृष्ठ नंबर:171–173)**

- 'स्वराज्य'' का तात्पर्य न्याय सुलभता, **विनिमय सुलभता** व उत्पादन सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता, मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता से है। न्याय सुलभता का स्वरूप, सम्बंधों के अनुरूप अर्थात जिससे जिनका जो सम्बन्ध पहचाना गया है, उनसे उन उन सम्बन्धों के अनुरूप मूल्यों का निर्वाह होने से है। मूल्य जीवन सहज हैं। सम्बन्धों की पहचान परम्परा सहज है। भले ही मानव अभी तक अंतद्र्वन्दों सहित समुदाय चेतना में ग्रसित है फिर भी सम्बन्धों को पहचानने का प्रयास नैसर्गिक रूप में उभरते आया है, इच्छुक है ही। अंतद्र्वन्दों और समुदायों की परस्परता में, घृणा उपेक्षा की ध्वनि व मुद्राएं समावेशित होने के फलस्वरूप सम्बन्धों के प्रति निष्ठा स्थिर नहीं हो पाई। फलतः मूल्यों का आकाल नासमझी के रूप में त्रस्त करते ही आया। इस समीक्षा से यह पता चलता है कि मानव सम्बन्धों में निष्ठान्वित होने के लिए, समाज को ही पहचानना आवश्यक है। इसी विधि से विश्व परिवार सम्बन्ध भी है। एक परिवार को पाँचों आयाम सम्बंधी क्रिया–कलाप में भागीदारी करना अनिवार्य है पांचों आयाम को ऊपर वर्णित कर चुके है तालिका निम्न है। यह कहे गये सभी स्तरीय १० संख्यात्मक परिवार से, विश्व परिवार तक आवश्यकता है ही। यह तथ्य भली प्रकार से समझ में आता है। **(अध्याय:5.21, पृष्ठ नंबर:179–180)**
- जागृत जीवन मानसिकता स्वयं जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्यों को मूल्यांकित करने, व्यवहार और **विनिमय** में प्रमाणित करने में सार्थक होने में पाया जाता है। तभी मानव का अवतरण अर्थात् मानव शरीर परम्परा का आरंभ होना स्वाभाविक है। प्रारंभिक मानव का अवतरण जलवायु, भौगोलिक परिस्थिति सौर व्यूह सहज उष्मा का दबाव के योगफल में किसी जीव शरीर में से मनुष्य शरीर का निष्पत्ति होना स्वाभाविक है क्योंकि प्राणकोशाओं में रचना विधियों का अनुसंधान होना साक्षित है। यह अनेक प्रजाति सहज अन्न वनस्पतियों के रूप में और अनेक प्रजातियों के रूप में जीव जंतु और पक्षी समूह के रूप में द्रष्टव्य है। **(अध्याय:5.21, पृष्ठ नंबर:182)**

- इसी क्रम में प्राण सूत्र सहज प्रकृतिगत विधि से मानव शरीर रचना विधि, प्राण सूत्र में उर्मि सहज प्रक्रिया सम्पन्न होता है। प्राण सूत्र में उर्मि सहज प्रक्रिया का तात्पर्य जिस रचना विधि में प्राण सूत्र सम्पन्न रहता है उसके संयोग में आये रासायनिक उत्सव प्रवृत्ति ब्रह्माण्डीय किरण–विकिरण और उष्मा संयोगवश ही प्राण सूत्र के रचना विधि में परिवर्तन होना स्वभाविक है। इसी क्रम में मानव शरीर का पोषण और विकास आदि मानव से अभी तक संभव हो पाया है। इसका साक्षी यही है जीवन सहज जागृति और समझदारी को जीवन ही अपनी संतुष्टि (सुख–शांति, संतोष, आनंद के अर्थ में) को प्रकाशित संप्रेषित अभिव्यक्त सहज विधि से प्रमाणित करना संभव हो गया है, सहज हो गया है। इसका साक्ष्य हम स्वयं है। हम स्वयं का तात्पर्य समझदार मानव से है। अस्तु अखंड–समाज, सार्वभौम व्यवस्था, आवश्यकता से अधिक उत्पादन, लाभ–हानि मुक्त **विनिमय**, प्रामाणिकता, मूल्य व मूल्यांकन विधि, स्वास्थ्य संयम प्रक्रिया, मानवीय शिक्षा संस्कार प्रणाली, पद्धति, नीति ये सब सहज पहचानने, निर्वाह करने में सुलभ होता है। **(अध्याय:5.21, पृष्ठ नंबर:182–183)**
- स्वयं के प्रति विश्वास : श्रेष्ठता के प्रति सम्मान – यह मानव में, से, के लिए सहज समीचीन है। समझदारी जीवन का स्वत्व है। ईमानदारी, पहचानने व निर्वाह करने के रूप में प्रमाणित होती है। जिम्मेंदारी, व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी सम्बंध होते हैं। यह मानव सहज अध्ययन का आधार है। जागृत जीवन सहज १० क्रियाएं शरीर यात्रा पर्यन्त अक्षुण्ण रूप में वर्तमान रहती ही है। इन १० क्रियाओं में से जब विश्लेषण व तुलन की बात आती है तब तुलन में पहचान में आने वाली प्रिय, हित, लाभ, न्याय, धर्म, सत्य में संयत हो जाती है। जैसे शरीर के साथ न्याय, स्वास्थ्य के साथ संयमरूप में सार्थक होता है। प्रिय रूपी इन्द्रिय सन्निकर्ष क्रियाकलाप व्यवहार न्याय के साथ, लोक न्याय के साथ संयत हो जाते हैं। लाभ प्रवृत्ति उत्पादन और **विनिमय** न्याय के साथ सम्पन्न होते हुए समृद्धि के साथ, संयत होना पाया जाता है। समृद्धि एक मानव लक्ष्य है। उक्त सभी तथ्यों को समझने वाला मानव, समझाने वाला मानव है। समझने समझाने के कार्य प्रणाली में से श्रुति एक समर्थ और न्याय, धर्म का सत्योन्मुखी प्रयोजन पूर्ण होना जागृत मानव पंरपरा में ही प्रमाणित होता। इसके प्रमाण के लिए मनुष्य ही धारक वाहक वस्तु है। मानव सहज अध्ययन के लिए मनुष्य ही वस्तु है। जागृत मानव नियति सहज व्यवस्था है और विकास पूर्वक व्यवस्था है। **(अध्याय:5.31, पृष्ठ नंबर:192–193)**
- व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी के लिए जितनी भी भाषा है, वह सब श्रुति है। मूल्य और मूल्यांकन के लिए जितनी भी भाषा है, वह सब श्रुति है। सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह करने की जितनी भी भाषा है वह सब श्रुति है। तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा के लिए जितनी भी भाषा है, वह सब श्रुति है। परिवारीय आवश्यकता से अधिक उत्पादन तथा लाभ हानि मुक्त **विनिमय** के लिए जो भी भाषा है वह सब श्रुति है। जीवन–जागृति, प्रामाणिकता, सर्वतोमुखी समाधान और स्वानुशासन के लिए जितनी भी भाषा है, वह सब श्रुति है। **(अध्याय:5.31, पृष्ठ नंबर:196–197)**

- तन, मन, धन का सदुपयोग विधि से वस्तु का उपयोग विधि से वस्तु का मूल्यांकन **विनिमय** के लिए सुलभ होते हुए परिवार में उपयोग समाज में सदुपयोग, व्यवस्था में प्रयोजनशील होने की दिशा स्पष्ट हो गयी है। इसका स्पष्टीकरण पहले भी किया जा चुका है।... **(अध्याय:5.31, पृष्ठ नंबर:206–207)**

मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या

(संस्करण:प्रथम, मुद्रण:2007)

- 37. जागृति सहज मानव परंपरा:– समझदारी सहज सर्वतोमुखी समाधान के रूप में प्रमाणित करने का परंपरा। शिक्षा के रूप में प्रमाणित करने का परंपरा। शिक्षा–संस्कार, न्याय सुरक्षा, संयम, उत्पादन–कार्य **विनिमय**–कोष, स्वास्थ्य विधि से प्रमाण।
- 101. संबंध :-

i. शरीर संबंध ii. मानव संबंध iii. शिक्षा संबंध iv. व्यवस्था संबंध	v. उत्पादन संबंध vi. **विनिमय** संबंध vii. नैसर्गिक संबंध

- 111. सार्वभौम व्याख्या:– दस सोपानीय परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था जिसमें बिना धन व्यय के जन प्रतिनिधि सुलभ होना। सभी प्रतिनिधि समझदारी समृद्धि से सम्पन्न होना। समझदारी सम्पन्न समृद्धि सहित परिवार का प्रतिनिधि होना एवं मानवीय शिक्षा संस्कार, न्याय सुरक्षा संस्कार, उत्पादन कार्य संस्कार, **विनिमय** कार्य संस्कार, स्वास्थ्य संयम संस्कार, कार्य में भागीदारी सहज परिवार प्रतिनिधि निर्वाचित परंपरा रूप में वर्तमान होना।

- प्रभुसत्ता
  1. प्रबुद्धतापूर्ण सत्ता।
  2. समझदारी सहित व्यवस्था।
  3. प्रबुद्धतापूर्ण शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, आचरण–व्यवहार, उत्पादन, **विनिमय**, स्वास्थ्य–संयम व्यवस्था रूपी सत्ता (परंपरा)।
  4. प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण विचार, समाधान व न्यायपूर्ण व्यवहार, न्याय व नियम पूर्ण आचरण, नियम व नियंत्रणपूर्ण उत्पादन और उपयोगिता सहित पूरक सिद्धि रूपी **विनिमय** क्रियाओं को करने, कराने और करने के लिए सहमत होने की प्रक्रिया। **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर:13)**
- विधि
  1. मानवीय संस्कृति–सभ्यता सहज नियम सहज आचरण सूत्र व्याख्या
  2. नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन ही मानवीय संस्कृति सहज आचरण–संहिता।

3. मानवीयता पूर्ण व्यवहार, आचरण, उत्पादन, **विनिमय**, मानवीय शिक्षा–संस्कार, तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षात्मक सूत्र और व्याख्या। विकास और जागृति, सतर्कता, सजगता, गुणात्मक विकास सहज प्रमाण में जीवन जागृति व जागृतिपूर्णता ही आचरणपूर्णता सहज सूत्र और व्याख्या है।
4. पूर्णता और उसकी निरंतरता के अर्थ में नियम, न्याय, धर्म और सत्य में अनुभव सहज जागृत मानव परंपरा में ही सूत्र और व्याख्या सम्मत प्रामाणिकता पूर्ण प्रक्रिया का प्रावधान। **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर:14)**

- स्वराज्य

  जागृत मानव परिवार मूलक समाधान–समृद्धि सहज वैभव।

  मानवीय शिक्षा–संस्कार, न्याय सुरक्षा, **विनिमय**–कोष , उत्पादन–कार्य, स्वास्थ्य संयम सुलभता का अविभाज्य वर्तमान और उसकी परम्परा।

  मानव चेतना सम्पन्न मानव परंपरा में मानवीय शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन में दिशा और निपुणता, कुशलता, पांडित्य सहित व उत्पादित वस्तु, **विनिमय** कोष, व्यवस्थाओं का अविभाज्य वर्तमान और उसकी परंपरा वैभव है। **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर:19)**

- राष्ट्र

  राष्ट्र अपनी सम्पूर्णता में चारों अवस्था व पदों में यथा स्थिति उपयोगिता–पूरकता विधि सहज वैभव है।

  तात्विक = अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का संयुक्त स्थिति गति ही राष्ट्र है।

  बौद्धिक = जागृत मानव परम्परा, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान सर्वसुलभ होना, वर्तमान है।

  व्यवहारिक = अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व–वाद–शास्त्र एवं विगत से प्राप्त मानवोपयोगी उत्पादन कार्यों में प्रयुक्त होने का सम्पूर्ण तकनीकी समेत शिक्षा– संस्कार, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य, **विनिमय–कोष** और स्वास्थ्य–संयम सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था रूप में परम्परा का होना।

  (अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:36–37)

- प्रभुसत्ता

  तात्विक = प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता ज्ञान विवेक विज्ञान सहज परम्परा सूत्र व्यख्या।

  बौद्धिक = प्रबुद्धता सहज निरंतर प्रमाण सहज सत्ता में जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने का क्रिया।

  व्यवहारिक = प्रबुद्धता पूर्ण मानव परम्परा ही पीढ़ी से पीढ़ी में शिक्षा–दीक्षा संस्कार रुप में सत्ता= अखण्डता सार्वभौमता रुपी वैभव परंपरा।

  प्रभुसत्ता सहज निरन्तरता ही जागृत मानव चेतना सहज परम्परा है। शिक्षा–संस्कार, उत्पादन–कार्य, न्याय–सुरक्षा, स्वास्थ्य–संयम, **विनिमय –कोष** कार्य ही जागृत मानव परम्परा है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:38)**

- राष्ट्रीय–चरित्र
    - मानवीय शिक्षा–संस्कार सुलभता प्रमाण परम्परा,
    - न्याय–सुरक्षा सुलभता प्रमाण परम्परा,
    - उत्पादन–कार्य सुलभता प्रमाण परम्परा,
    - **विनिमय**–कोष सुलभता प्रमाण परम्परा,
    - स्वास्थ्य संयम सुलभता प्रमाण परम्परा,
    - मानवीयता पूर्व आचरण सुलभता प्रमाण परम्परा,
    - परस्पर निश्चित संबंधों, निश्चित मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन सुलभता प्रमाण परंपरा,
    - परस्पर तृप्ति समाधान–समृद्धि, वर्तमान में विश्वास (अभय), सहअस्तित्व में प्रमाण सहज परम्परा, नैसर्गिक और ऋतु संतुलन सुलभता में भागीदारी परम्परा ही राष्ट्रीय चरित्र है। जागृत मानव परम्परा ही सार्वभौम व्यवस्था सहज विधि से प्राकृतिक संतुलन सहित सूत्र व्याख्या का जिम्मेदार है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर:39)**
- जागृत मानव प्रवृत्तियाँ (स्वभाव)

    जन–बल का सार्थक रूप परिवार दस सोपान में स्पष्ट होता है। हर जागृत मानव सहज पहचान दस सोपानीय परिवारों में होती है यथा समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व अर्थात् चारों अवस्थाओं के साथ जागृत मानव नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज विधि से निर्वाह करता है।

    - परिवार सम्बन्ध मूल्यों के आधार पर
    - उत्पादन–सम्बन्ध उपयोगिता व कला श्रम मूल्यों के आधार पर
    - व्यवस्था–सम्बन्ध समाधान समृद्धि व न्याय के आधार पर
    - शिक्षा–सम्बन्ध सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, ज्ञान–विवेक– विज्ञान सम्पन्नता के आधार पर
    - स्वास्थ्य–सम्बन्ध आहार–विहार, औषधी, संयत व्यवहार के आधार पर
    - प्रकृति–संबंध नियम, नियंत्रण, संतुलन, उपयोगिता, पूरकता के आधार पर
    - समझदारी का सम्बन्ध सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व के आधार पर
    - न्याय, सम्बन्धों एवं मूल्य निर्वाह के आधार पर
    - **विनिमय–सम्बन्ध** उपयोगिता पूरकतावादी दृष्टि व श्रम मूल्य के आधार पर
    - मानव–सम्बन्ध अखण्डता सार्वभौमता के आधार पर
    - मानव लक्ष्य सहज प्रमाण में, से, के लिए सभी संबंध है

- ज्ञान, विवेक एवं विज्ञान सहित मानव लक्ष्य के लिए कार्य व्यवहार सहज निश्चयन शिक्षा–दीक्षा संस्कार में, से, के लिए है। **(अध्याय:5, पृष्ठ नंबर:51–52)**

- शास्त्र

  जागृत मानव परंपरा में हर परिवार समाधान–समृद्धि–अभय पूर्वक वर्तमान में विश्वास, सहअस्तित्व प्रमाण सहज न्याय–समाधान रूप में जीने का अध्ययन सहज प्रमाण।

  सहअस्तित्व सहज सामाजिक अखण्डता सहित सार्वभौम व्यवस्था का अध्ययन व भागीदारी सहज रूप में आचरण।

  जागृत मानव परंपरा में जागृत मानसिकता प्रवृत्ति, अखण्ड सामाजिक सम्बन्ध मूल्य, मूल्यांकन, परस्परता में (उभयता में) तृप्ति, समाधान सहज निरन्तरता का अध्ययन आचरण प्रमाण।

  सार्वभौम व्यवस्था क्रम में तन–मन–धन रूपी अर्थ इनमें अविभाज्यता, वस्तु रूपी धनोपार्जन, **विनिमय**, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन सहज सुनिश्चितता का अध्ययन सहज क्रियान्वयन। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:79)**

- परिवार मूलक स्वराज्य कार्य व्यवस्था स्वरूप

  स्वरूप

  मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता, न्याय सुरक्षा सुलभता, उत्पादन कार्य सुलभता, **विनिमय** कोष सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता, यही सार्वभौम व्यवस्था स्वरूप अखंड समाज के अर्थ में ही सार्थक होता है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:95)**

- 8. मानवीय शिक्षा संस्कार, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य सुलभता, **विनिमय** कोष सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता, यही प्रधानतः कार्य सहज उद्देश्य–दायित्व–कर्तव्य है। इनमें समानाधिकारहै। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:97)**

- परिवार सभा का स्वरूप :–

  दस समझदार मानव जिसमें हर नर–नारी सह–अस्तित्व सहज समझदारी–ईमानदारी–जिम्मेदारी–भागीदारी में समानता, जिसका अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन करने में समान अधिकार सम्पन्न परिवार हैं।

  शिक्षा संस्कार कार्य व्यवस्था, न्याय सुरक्षा कार्य व्यवस्था, परस्परता में उत्पादन कार्य व्यवस्था, आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य व्यवस्था, **विनिमय** कार्य व्यवस्था–श्रममूल्य के आधार पर लेन–देन रूप में **विनिमय** कार्य व्यवस्था, स्वास्थ्य संयम कार्य व्यवस्था सहज समान कर्तव्य दायित्व अधिकार रहेगा।

  अस्तित्व में इकाइयों के होने का प्रमाण सर्वतोमुखी प्रतिबिम्ब है। परस्पर पहचान ही प्रक्रिया प्रमाण है।

  परस्परता में पहचान कार्य–व्यवहार का आधार है एवं प्रेरणा सहित कर्तव्य व दायित्व सूत्र व्याख्या है। पूरकता उपयोगिता सहज प्रमाण है।

नेत्रों में प्रतिबिंबित उद्धृत दृश्य स्थिति गति रूप में समाती है। जबकि बिंब का प्रतिबिंब भी आंखों में समाती है। गुण, स्वभाव, धर्म समझ में आता है। अध्ययन पूर्वक शोध विधि से समझ में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म समाया रहता है यही समझदारी है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:100–101)**

- व्यवस्था के कार्यक्रम (समितियाँ)

  शिक्षा–संस्कार कार्य–व्यवस्था समिति

  सार्वभौम न्याय–सुरक्षा कार्य–व्यवस्था समिति

  उत्पादन–कार्य–व्यवस्था समिति

  विनिमय–कोष कार्य–व्यवस्था समिति

  स्वास्थ्य–संयम कार्य–व्यवस्था समिति **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:101)**

- शिक्षा–संस्कार कार्य व्यवस्था समिति

  शिक्षा में वस्तु स्वरूप :– सहअस्तित्व सहज अर्थ में भौतिक रासायनिक एवं जीवन क्रिया–कलापों का अध्ययन सर्वसुलभ होना है – विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति में ही यथा स्थिति गति सहित परस्परता में उपयोगिता–पूरकता विधि सहित सिद्धांत, अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिन्तन (नजरिया) सहज अध्ययन बोध, अनुभव प्रमाण मूलक अभिव्यक्ति–संप्रेषणा–प्रकाशन परंपरा।

  संस्कार स्वरूप :– जागृति, जागृति सहज प्रमाण, जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह रूप में प्रमाण होना, रहना परंपरा है।

  समझदारी–ईमानदारी–जिम्मेदारी–भागीदारी को अखण्ड समाज सहज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी प्रमाण। प्राकृतिक, बौद्धिक, सामाजिक नियमों का पालन करते हुए मानव लक्ष्य को साकार करने के रूप में प्रमाण।

  उद्देश्य –

  व्यवहारिक उद्देश्य

  मूल उद्देश्य :– सम्पूर्ण मानव मानवत्व सहित व्यवस्था में होना और समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाण परम्परा के रूप में होना। मन: स्वस्थता पूर्वक मनाकार को साकार करना।

  फलस्वरूप :– जीवन मूल्य और मानव लक्ष्य परंपरा प्रमाण के रूप में प्रमाणित होना, साथ ही साथ पर्यावरण संतुलन, पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान अवस्था में सन्तुलन पूरकता–उपयोगिता सिद्धांत परंपरा के रूप में प्रमाणित होना है। यही सर्वकालीन सार्थक उद्देश्य है।

  मूल उद्देश्य को प्रमाणित करने के क्रम में न्याय, **उत्पादन–विनिमय–सुलभता**, सार्वभौम व्यवस्था विधि में समाहित रहता है। साथ में शिक्षा–संस्कार सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता भी समाहित रहेगा ही। इस विधि से जागृत मानव परंपरा की संभावना आवश्यकता सहज रुप में समीचीन है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:101–103)**

- मानवीय शिक्षा (अनुभव प्रणाली) सहज उद्देश्य में निहित है :–
  श्रम से निभ्रमता, जीव चेतना से मानव चेतना, अजागृति से जागृति, समस्या से समाधान, समुदाय से अखण्ड समाज, समुदाय राज्य से सार्वभौम राज्य, असत्य से सत्य, अन्याय से न्याय, अव्यवस्था से व्यवस्था, असंतुलन से संतुलन, आवेशित गति से स्वभाव गति, अभाव से भाव, अज्ञान से ज्ञान–विवेक–विज्ञान, विखण्डता से अखण्डता, विपन्नता से सम्पन्नता, संकीर्णता से विशालता, पराधीनता से स्वतंत्रता, भय से अभय, असत्य से सत्य चेतना में परिवर्तन, भोग मानसिकता से उपयोगी सदुपयोगी प्रयोजनशील मानसिकता, व्यापार लाभोन्मादी मानसिकता से **विनिमय** प्रवृत्ति, मानव चेतना सहज समझदारी में पारंगत प्रमाण परंपरा ही मानव परंपरा है। यही जीव चेतना के स्थान पर मानव चेतना है। प्रलोभन भय के स्थान पर मौलिक, मौलिकता, जागृत मानव में न्याय, धर्म, सत्य सहज पहचान वर्तमान में विश्वास। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 103)**
- परंपरा में श्रम मूल्य के आधार पर **विनिमय** सुलभ होना – न्याय है।
  (अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:117)
- कृषि–पशुपालन कार्यरत हर परिवार अपने से उत्पादित वस्तुओं का श्रम नियोजन व उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन करना व **विनिमय** करना न्याय है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:119)**
- **विनिमय में न्याय**

  तात्विक रूप में परिभाषा **विनिमय** :– नियम–नियंत्रण–संतुलन पूर्वक उत्पादित वस्तुओं का उपयोगिता–पूरकता विधि से आदान–प्रदान समाधान एवं न्याय है।

  बौद्धिक रूप में परिभाषा **विनिमय** :– विकास व जागृति संगत उपयोगिता पूरकता सहज निरन्तरता में–से–के लिए नियम–नियन्त्रण–सन्तुलन विधि से उत्पादित वस्तुओं का श्रम मूल्य के आधार पर आदान–प्रदान समाधान एवं न्याय है।

  व्यवहारिक रूप में परिभाषा **विनिमय** :– श्रम नियोजन, उपयोगिता प्रमाण, मूल्यांकन उपयोगिता के आधार पर श्रम मूल्य का आदान–प्रदान समाधान एवं न्याय है।

  प्रणाली :– दस सोपानीय व्यवस्था में श्रम मूल्य का मूल्यांकन सामान्यीकरण परंपरा समाधान एवं न्याय है।

  पद्धति :– **विनिमय**–कोष परंपरा एवं कोषों के परस्परता में समन्वयता समाधान एवं न्याय है।

  नीति :– दस सोपानीय परिवार–सभा में समन्वय निश्चयन परंपरा समाधान एवं न्याय है।

  प्रयोजन :– लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** और प्रत्येक परिवार में समृद्धि सहज प्रमाण, ज्यादा–कम से मुक्ति समाधान एवं न्याय है। समृद्धि ज्यादा–कम से मुक्ति है।

विनिमय में न्याय

1. हर जागृत मानव–परिवार सहज आवश्यकता की पहचान न्याय है।
2. हर जागृत मानव परिवार में सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना न्याय है।
3. जागृत मानव परिवार में उत्पादित वस्तुओं का मूल्यांकन (श्रम+उपयोगिता = वस्तु मूल्य) करना न्याय है।
4. जागृत मानव–परिवार में उत्पादित वस्तुओं का श्रम, उपयोगिता के आधार पर **विनिमय** करना न्याय है।
5. श्रम–शीलता को निपुणता–कुशलता–पांडित्य के रूप में स्वीकार करना न्याय है।
6. निपुणता–कुशलता पूर्वक श्रम–नियोजन की स्वीकृति पाण्डित्य सहज विधि से मूल्यांकन करना न्याय है।
7. पांडित्य पूर्वक किया गया मूल्यांकन होने की स्वीकृति व प्रक्रिया न्याय है।
8. मूल्यांकन पूर्वक समाधानित रहने का प्रमाण न्याय है।
9. सामान्य आकाँक्षा सम्बन्धी वस्तुओं को पाकर समृद्धि का, महत्वाकाँक्षा सम्बन्धी वस्तुओं को आवश्यकता के अनुरूप पाकर समाज गति में सदुपयोग सहज प्रमाण रूप में सत्यापन करना न्याय है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:123–125)**

- स्वावलंबन आत्मनिर्भरता (समाधान) में न्याय
  1. हर मानव जागृत परंपरा में अनुभव व अनुभव सहज प्रमाण क्रिया के रूप में प्रतिष्ठा है।
  2. अनुभव ही प्रमाण परम है। यही समाधान है।
  3. अनुभव मूलक विधि से ही आत्म–निर्भरता सहज सूत्र व्यवस्था स्पष्ट है।
  4. सहअस्तित्व में अनुभव होना जागृत मानव परंपरा में समाधान वैभव है।
  5. अनुभव पूर्वक ही हर नर–नारी समझदारी–ईमानदारी–जिम्मेदारी–भागीदारी करना प्रमाण है। यही आत्म–निर्भरता है। यही न्याय है।
  6. समझदारी के आधार पर विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेक पूर्वक हर नर–नारी समाधान सम्पन्न होते हैं। तभी उत्पादन से स्वावलम्बन आत्म निर्भरता न्याय है।
  7. समाधान पूर्वक ही हर आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य में सफलता सहित निर्णय लिया जाता है। यह आत्मनिर्भरता न्याय है।
  8. सहअस्तित्व, समृद्धि, अभयता पूर्वक जीने के लिये समाधान पूर्वक निर्णय लिया जाता है। यह आत्म निर्भरता न्याय है।
  9. परिवार–व्यवस्था में जीने के लिए हर नर–नारी समाधान पूर्वक निर्णय लेना सहज है। यह आत्म निर्भरता न्याय है।
  10. हर परिवार अपने सन्तान को आत्मनिर्भर सम्पन्न होने के लिए पोषण–संरक्षण पूर्वक अनुभवगामी प्रेरणा स्रोत है। यह आत्म निर्भरता न्याय है।

11. आत्मनिर्भरता पूर्वक ही हर नर–नारी मानवीयता पूर्ण आचरण करते हैं। यह आत्म निर्भरता समाधान व न्याय है।
12. शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य, **विनिमय–कोष**, स्वास्थ्य– संयम कार्यों को प्रमाणित करना आत्मनिर्भरता न्याय है।
13. अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना आत्म निर्भरता सर्वतोमुखी समाधान न्याय है।

    (अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:125–126)

- परिवार–समूह–सभा में न्याय
    1. दस जागृत मानव परिवार में से निर्वाचित दस सदस्य के परिवार समूह–सभा का गठन न्याय है।
    2. हर परिवार–समूह–सभा कार्य कर्तव्य रत हर सदस्य आत्म निर्भर रहना न्याय है।
    3. दस परिवार सहज संस्कृति–सभ्यता, विधि–व्यवस्था संबंधी पहचान किये रहना न्याय है।
    4. हर सदस्य दस परिवार में सम्बन्धों की सन्तुष्टि, समाधान–समृद्धि सहज प्रमाणों के प्रति जागृत रहना न्याय है।
    5. कोई आगन्तुक व्यक्ति गाँव–मोहल्ले में होने का परिवार–ग्राम–मोहल्ला समितियों को पहचान करने का अधिकार न्याय है।
    6. हर सदस्य दसों परिवार के लोगों का समस्त उत्पादन–**विनिमय**–कार्य में जागरूक–पूरक रहना न्याय है।
    7. हर सदस्य सभी परिवार जन का जागृत रहने में ध्यान देना, आवश्यकता के अनुसार पूरक–उपयोगी होना न्याय है।
    8. हर सदस्य का निपुणता–कुशलता–पाण्डित्य में पारंगत रहना न्याय है।
    9. हर परिवार समूह सभा में से एक–एक सदस्य का निर्वाचन ग्राम–मोहल्ला–परिवार सभा गठन के लिये निश्चित करना न्याय है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:128–129)**
- ग्राम–मोहल्ला परिवार सभा में न्याय
    1. दस परिवार समूह सभा से निर्वाचित दस सदस्यों की सभा गठित होगी जिसका नाम ग्राम–मोहल्ला–परिवार सभा होगा। हर ग्राम–मोहल्ला का नाम रहता ही है। यह समाधान व न्याय है।
    2. ग्राम–मोहल्ला–परिवार सभा के लिये निर्वाचित सभी सदस्य समान स्वत्व, स्वतंत्रता अधिकार सम्पन्न रहेंगे और आत्म निर्भर रहेंगे। यह न्याय है।
    3. आत्म निर्भरता प्रत्येक जन प्रतिनिधि में समाधान–समृद्धि सम्पन्नता सहित स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा व व्यक्तित्व में सन्तुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन रूपी व्यवसाय में स्वावलम्बी परिवार प्रतिनिधि रहेंगे। यह समाधान व न्याय है।

4. गांव मोहल्ले में कोई व्यक्ति पहुँचे तो वे पहले से पहचान अथवा चिन्हित अथवा सूचित रहेंगे। इसके अतिरिक्ति जो अपरिचित होंगे उनका परिचय पाने का अधिकार ग्राम–मोहल्ला–परिवार सभा के सभी सदस्यों को होगा। ऐसे लोगों की पहचान प्रमाण प्राप्त करने का अधिकार रहेगा यह न्याय है।
5. ग्राम सभा अपने स्व विवेक से पाँच समितियों के लिए स्थानीय प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों को मनोनीत करेगी। वे सब आत्म निर्भर परिवार के सदस्य होंगे। ये समितियां शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य , **विनिमय–कोष**, स्वास्थ्य–संयम के कार्य संपादित करेंगे, यह न्याय है।
6. सभायें समितियों की कार्य प्रणालियों व कर्तव्यों का निर्धारण–निर्देशन करेगी। उसे हर समितियाँ स्वीकार पूर्वक कार्य व मूल्यांकन करने तथा निरीक्षण करने के अधिकार से सम्पन्न रहेगी, यह न्याय है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:129–130)**

- (उत्पादन कार्य व्यवस्था)

2. निपुणता–कुशलता–पांडित्य सम्पन्नता सहित श्रम नियोजन के फलन में सामान्य व महत्वाकाँक्षा सम्बन्धी वस्तु व उपकरणों का फलित होना स्पष्ट है। यह मानव की परिभाषा में–से–के लिये मनाकार को साकार करने के सौभाग्य का फलन है, जो सुविधा–संग्रह जैसी प्रवृत्ति रहने के साथ भी सुलभ हुआ है। मनस्वस्थता: सर्वतोमुखी समाधान सर्व सुलभ होने के रूप में मानवीय शिक्षा–संस्कार चेतना विकास मूल्य शिक्षा रूप में सार्वभौम है।

मानवीय शिक्षा का फलन ही मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान–व्यवस्था व आचरण–मूल्यांकन परंपरा ही अखण्ड–समाज सूत्र सहित व्याख्या में पारंगत होना पाण्डित्य है। यही मन:स्वस्थता का प्रमाण है। यही दृष्टा–पद–प्रतिष्ठा का वैभव व जागृति सहज प्रमाण रूप में सौभाग्य है।

उत्पादन के साथ **विनिमय** अनिवार्य है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन **विनिमय** व्यवस्था का आधार है।

हर समझदार मानव अपने द्वारा किये गये व्यवहार, उत्पादन व सेवा का मूल्यांकन करे जिसमें परिवार जनों की सहमति होना आवश्यक है। यह परिवार व्यवस्था जिसमें हर नर–नारी मानवत्व सहित व्यवस्था सहज प्रमाण है।

द्वितीय स्थिति में एक परिवार समूह सभा (दस परिवारों में) अपने में मूल्यांकन करेगा जिसमें दस परिवारों में परस्पर सहमति होना आवश्यक रहता है।

तीसरी स्थिति में सौ परिवार की परस्परता में से किया गया उत्पादन व व्यवहार का मूल्यांकन होना स्वाभाविक रहेगा। इस स्थिति में सौ परिवार की परस्परता में सहमत होना आवश्यक है। हर परिवार के साथ सौ परिवार सहमति परिवार के समान परिवार समूह का, समूह के साथ ग्राम क्रम से विश्व परिवार सभा में से के लिए समायोजन होना स्पष्ट है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:136–137)**

- (उत्पादन कार्य व्यवस्था)

  4. परिवार में – हस्त कला, ग्राम–शिल्प कला

  परिवार समूह में – कुटीर उद्योग

  ग्राम परिवार में – ग्रामोद्योग

  ग्राम समूह परिवार में – लघु उद्योग, विकल्प

  क्षेत्र परिवार में – लघु उद्योग, मध्यम कोटि का उद्योग, विकल्प

  मण्डल परिवार में – मध्यम कोटि का उद्योग व बड़े उद्योग, विकल्प

  मण्डल समूह परिवार में – मध्यम व बड़े उद्योग, विकल्प

  मुख्य राज्य परिवार में – बड़े उद्योग, विकल्प

  प्रधान राज्य परिवार में – वृहत्तर उद्योग, विकल्प

  विश्व राज्य परिवार में – परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि से श्रेष्ठता व उपयोगिता का मूल्यांकन विधि रहेगा। विश्व परिवार सभा न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, **विनिमय सुलभता** में शोधपूर्वक मार्गदर्शन, उत्पादन में गुणवत्ता का शोध, मार्गदर्शन कार्य करेगा। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:138–139)**

- (उत्पादन कार्य व्यवस्था)

  7. शरीर पोषण–संरक्षण के साथ जागृति–क्रम, जागृति ही शिक्षा–संस्कार कार्यक्रम है।

  शिक्षा–संस्कार–प्रक्रिया का आरंभ परिवार में ही होना स्वाभाविक है। जागृत मानव परंपरा का यह साक्ष्य है। जागृत मानव–परंपरा में हर परिवार में प्राप्त सन्तान के लिए जागृति सहज समीचीन रहती है। इसी विधि से जागृत मानव परंपरा प्रमाण वर्तमान होना सहज है।

  जागृत परंपरा में ही उत्पादन–कार्य व्यवस्था सफल होता है। उत्पादन कार्य निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य पूर्वक सर्व देश काल में आकाँक्षा–द्रव्य के अर्थ में सफल होता है।

  व्यवस्था–कार्य मूल्यांकन पूर्वक **विनिमय** संपन्न होता है।

  ज्ञान–विवेक–विज्ञान संपन्न मानसिकता ही मानव लक्ष्य के अर्थ में मूल्यांकन होना स्वाभाविक रहता है। यह दस सोपानीय व्यवस्था विधि से गठित होना ही सामाजिक अखण्डता व्यवस्था सहज सार्वभौमता सहज प्रमाण है। उत्पादन गुणवत्ता की पहचान शरीर पोषण–संरक्षण के अर्थ में व अखण्ड सार्वभौमता सहज समाज–गति के अर्थ में है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:141)**

- **7.3 (4) जागृति–समाधान–उत्पादन–विनिमय समृद्धि**

मानव ने मनाकार को साकार किया है। मन: स्वस्थता को प्रमाणित करना ही मानव चेतना, समझदारी, जागृति है।

हर मानव मनाकार को साकार करने मन: स्वस्थता: को परंपरा में प्रमाणित करने समृद्धि का साक्ष्य व व्यवस्था में प्रवृत्त होना पाया जाता है।

सार्वभौम व्यवस्था में ही मानव अपनी जागृति (सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता) को समाधान–समृद्धि सम्पन्न परिवार सहज व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है।

समाधान ज्ञान–विवेक–विज्ञान सहज गति है। यही जागृत मानव गति है – हर सोच विचार गति, कार्य संवाद गति व फल परिणाम गति, अखण्डता सम्पन्न गति।

मानव–लक्ष्य संपन्नता से जीवन–मूल्य प्रमाणित होना, जीवन–मूल्य सहज प्रमाण रूप में सहज विधि से मानव–लक्ष्य साक्षित फलित होता है।... **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:143)**

- (15) उत्पादित वस्तु की उपयोगिता के आधार पर श्रम मूल्य का **विनिमय** समाधान है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:154)**
- **विनिमय कोष कार्य व्यवस्था**

स्वरूप

गाँव में हर तरह का **विनिमय** ''**विनिमय**–कोष समिति'' द्वारा संचालित ''ग्राम स्वायत्त **विनिमय**–कोष'' द्वारा किया जायेगा। **विनिमय** कोष ग्राम स्वराज्य सभा में से अंगभूत कार्यकलाप होगा। इसका अपना कार्य नीति संविधान सम्मत होगा। यह संस्था लाभ–हानि मुक्त व्यवस्था पर कार्य करेगी। इसका मुख्य उद्देश्य गाँव के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उत्पादित वस्तुओं का **विनिमय** करना व उनकी आवश्यकता अनुसार वस्तुओं का **विनिमय** करना होगा। साथ ही यह कोष ''उत्पादन कार्य सलाह समिति'' व ''शिक्षा–संस्कार समिति'' के साथ मिलकर कार्य करेगी व श्रम मूल्य आधारित नियम के आधार पर **विनिमय** में ध्यान देगी। **विनिमय** कोष की कार्य पद्धति निम्न प्रकार से होगी :–

विनिमय कोष नौकरी की मानसिकता को हटाकर उत्पादन की मानसिकता को लाने के लिए शिक्षा समिति के साथ सहयोग करेगा। वह गाँव में रह रहे सब व्यापारियों को ट्रेडिंग (संग्रह) के स्थान पर उत्पादनीकरण का कार्य के लिए प्रेरणा, ट्रेनिंग देगा। इस तरह लाभ–हानि मुक्त उत्पादन में **विनिमय** व्यवस्था जो कि श्रम के आदान–प्रदान व आवर्तनशीलता पर होगी, को स्थापित संचालित करने में **विनिमय** कोष कार्य करेगा।

कार्य

विनिमय व्यवस्था उत्पादित वस्तु का सुरक्षा पूर्वक **विनिमय** पद्धति पर आधारित होगी। प्रत्येक व्यक्ति जो स्थानीय सीमावर्ती निवासी है व उत्पादित वस्तुओं का **विनिमय** करता है और आवश्यकीय वस्तुओं को प्राप्त करता है, वह इस कोष का खातेदार सदस्य होगा। प्रत्येक परिवार का खाता **विनिमय** कोष में होगा। प्रत्येक परिवार अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादित वस्तुओं को **विनिमय** कोष को **विनिमय** के लिए प्रस्तुत करेगा। वस्तु मूल्य श्रम मूल्य के आधार पर तय होगा (निकटस्थ बाजार में जाकर बेचने से जो दाम मिलेंगे उसमें परिवहन मूल्य घटा कर)। जब तक आस–पास स्वराज्य व्यवस्था स्थापित ना हो तब तक निकटस्थ बाजार भाव अघोषित रूप में रहेगा, इस आय–व्यय स्पष्टता का आलेख **विनिमय** कोष में रहेगा। इस मूल्य को सदस्य के खाते में उसी दिन जमा कर दिया जाएगा। इसी तरह कोष प्रत्येक सदस्य को वस्तुओं का **विनिमय** करेगा व उनके श्रम मूल्यानुसार, उनके खाते में उतना मूल्य घटा–बढ़ा दिया जायेगा।

कोष इसी तरह बाहर (शहर व अन्य बाजारों) से वस्तुओं को थोक भाव में खरीदेगा व अपने सदस्यों को उपरोक्त पद्धति से **विनिमय** करेगा। इसी तरह कोष में गाँव के सदस्यों द्वारा **विनिमय** के लिए प्रस्तुत वस्तुएँ, जो स्थानीय आवश्यकता से बच जायेगी, उन्हें शहर व अन्य बाजारों में बेचेगा व उनका मूल्य प्राप्त करेगा, और उन–उन के खाते में जमा करेगा यह कार्य ग्राम स्वराज्य सभा द्वारा संचालित किया जाएगा। कोष में प्रत्येक सदस्य की न्यूनतम वस्तु हमेशा जमा रहेगी ताकि कोष का कार्य सुचारू रूप से चलाया जा सके। जिसकी राशि नहीं होगी उसे कोष, ब्याज रहित ऋण देगा। जिसे वह सदस्य वस्तु का उत्पादन कर कालान्तर में कोष को लौटा देगा।

दायित्व

जिन सदस्यों ने न्यूनतम से अधिक राशि खाते में रखी है, उनकी सहमति से, **विनिमय** कार्य के लिए आवश्यकता पड़ने पर, **विनिमय** कोष, उस धन राशि का उपयोग करेगा व अन्य राष्ट्रीय कृत बैंक से जो ब्याज मिलता है वह उनको देगा। यह विधि तब तक रहेगी, जब तक बैंक **विनिमय**–प्रणाली अलग–अलग रहेगी।

गाँव से सभी प्रकार की कर वसूली का दायित्व **विनिमय** कोष का होगा। कर निर्धारण का कार्य ग्राम सभा करेगी।

उपरोक्त बैंक का गारन्टीदार राष्ट्रीय कृत सहकारी बैंक होगा जो आरंभ से उसे कार्यशील पूंजी व अन्य ऋण देगा, हानि की भरपाई करेगा। **विनिमय** कोष ही आगे अपने सदस्यों को ऋण देगा वह उत्पादित वस्तुओं के रूप में **विनिमय** बैंक का ऋण लौटा देगा।

विनिमय कोष शनैः–शनैः सरकारी बैंक से ली गई पूंजी को लौटाता रहेगा। इस तरह सरकारी बैंक के रूपये का ज्यादातर उपयोग होगा।

विनिमय कोष कार्य समिति

आरंभ में समाज सेवी (प्रशिक्षण प्राप्त) व्यक्ति **विनिमय** कोष को चलावेंगे। बाद में स्थानीय व्यक्ति जब व्यवहार–शिक्षा व व्यवसाय–शिक्षा में पारंगत हो जावेंगे तब वह उस बैंक को चलावेंगे।

सौ परिवार समूह के गाँव के लिए औसतन तीन व्यक्ति **विनिमय** कोष को चलावेंगे। इसमें से एक व्यक्ति गाँव में उत्पादित वस्तुओं को अन्य बाजार में बेचेगा व अन्य बाजारों से सामान्य क्रय कर **विनिमय** कोष में लाएगा। दूसरा व्यक्ति लेखा–जोखा व खातों की देख–रेख करेगा। तीसरा व्यक्ति सामान का **विनिमय** करेगा व उनको भंडार में रखने की व्यवस्था करेगा। आवश्यकता पड़ने पर अन्य व्यक्तियों को भी **विनिमय** कोष कार्य के लिए नियत करेगा। **विनिमय** कोष के काम–काज को सुगम बनाने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जायेगा। कालान्तर में **विनिमय** कोष व्यवस्था पूरे राज्य व देश में स्थापित हो जाने पर ग्राम **विनिमय** कोष क्रम से ग्राम समूह क्षेत्र , जिला मंडल, मुख्य राज्य व प्रधान राज्य के **विनिमय** कोष समितियों के साथ आदान–प्रदान से जुड़ारहेगा। ''**विनिमय** कोष'' संविधान के अनुसार कार्य करता रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी **विनिमय** कोष समिति की होगी। जो समय–समय पर खातेदार सदस्यों की सामान्य बैठक बुलाकर, उनके सामने प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा। सामान्य बैठक में बहुमत के आधार पर मार्ग–दर्शन प्राप्त करेगा।

मूल्यांकन व्यवस्था

विनिमय कोष समिति के कार्य का मूल्यांकन ग्राम सभा करेगी व समय–समय पर उन्हें मार्ग दर्शन देगी। कृषि उपज और प्रौद्योगिकी उपज में श्रम मूल्य के आधार पर मूल्यांकन को स्थापित करने वाली व्यवस्था रहेगी। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:158–161)**

- **(ग्राम/ मोहल्ला व्यवस्था)**

8.6 कार्यशैली :–

प्रत्येक ग्राम सभा, ''ग्राम स्वराज्य व्यवस्था'' को स्थापित करने के लिए निम्न 5 समितियों का गठन ग्राम सभा से मनोनीत सदस्य करेंगे :–

1. मानवीय शिक्षा संस्कार समिति
2. उत्पादन कार्य व सलाहकार समिति
3. **वस्तु विनिमय कोष समिति**
4. स्वास्थ्य संयम समिति
5. मानवीय न्याय सुरक्षा समिति

उपर्युक्त समितियां ग्राम सभा के मार्ग दर्शन के आधार पर कार्य करेंगी। उपरोक्त समितियां क्रम से ग्राम में शिक्षा संस्कार व्यवस्था, उत्पादन कार्य व्यवस्था, **विनिमय** कोष व्यवस्था, स्वास्थ्य संयम व्यवस्था व न्याय सुरक्षा व्यवस्था को सर्व सुलभ करेंगी। उपरोक्त समिति के सदस्यों का मनोनयन ग्राम सभा करेगी। प्रत्येक मनोनीत सदस्य इन समितियों के लिए अंश–कालिक सदस्य होगा एवं वह अपनी समिति का कर्तव्य एवं दायित्वों का निर्वाह अपने निजी व्यवसाय के अलावा करेगा। वयोवृद्ध स्त्री व पुरुष, जो जीवन–विद्या व वस्तु–विद्या में पारंगत

होंगे, उनको समितियों के अंश कालिक व पूर्ण कालिक सदस्य होने का अवसर रहेगा। प्रत्येक समिति का विस्तृत कार्यक्रम अगले खंडों में विस्तार से दिया गया है। ग्राम स्वराज्य व्यवस्था के लक्ष्य निम्न होंगे :–

1. गाँव के प्रत्येक मानव को मानवीय शिक्षा–संस्कार से संपन्न करना।
2. प्रत्येक व्यक्ति को तकनीकी में निपुणता–कुशलता को सजह सुलभ करना।
3. प्रत्येक व्यक्ति को व्यवहार में सामाजिक होने के लिए ज्ञान–विवेक–विज्ञान सहज शिक्षा संस्कार सर्व सुलभ करना जिससे न्याय सुरक्षा प्रमाणित हो।
4. प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी उत्पादन कार्य में प्रवृत्त प्रोत्साहित करना।
5. उत्पादित वस्तुओं को **विनिमय**–कोष द्वारा लाभ–हानि मुक्त पद्धति से लेन–देन करने की व्यवस्था प्रदान करना और ग्राम वासियों के लिए आवश्यकीय वस्तुओं को उपलब्ध कराना **विनिमय** कोष कर्तव्य रहेगा।
6. प्रत्येक व्यक्ति को न्याय व सुरक्षा सहज सुलभ कराना। साथ ही सुधारवादी–प्रक्रिया से गलती व अपराध प्रवृत्तियों का निराकरण करना।
7. प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति स्वस्थ रहने का अवधारणापूर्वक संकल्प बद्ध करना, व्यायाम व खेलों के लिए प्रोत्साहित करना, संक्रामक रोग–निरोधी उपायों की उपयोगिता से अवगत कराना। साथ ही हर परिवार में सहज व उपकारी चिकित्सा की व्यवस्था करना।
8. प्रत्येक व्यक्ति में स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, ग्राम जीवन, परिवार–व्यवस्था के प्रति विश्वास व निष्ठा उत्पन्न करना। प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन रहने में निष्ठा स्थापित करना।
9. प्रत्येक व्यक्ति / परिवार अपनी आवश्कता से अधिक उत्पादन करे, ऐसा सुनिश्चित उपाय करना।
10. ग्राम के लिए सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करना।
11. व्यक्तित्व व प्रतिभा का संतुलित उदय हो, ऐसा सुनिश्चित उपाय करना। इसके लिए समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक जीने में निष्ठा सम्पन्न करना।
12. प्रत्येक परिवार में भौतिक समृद्धि व बौद्धिक समाधान साक्षित होने का उपाय करना, समस्त ग्राम वासियों की परस्परता में अभयता व सह–अस्तित्व चरितार्थ होने का सभी उपाय करना। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:166–168)**

- **(ग्राम/ मोहल्ला व्यवस्था)**

8.7 ग्राम मोहल्ला परिवार सभा सदस्यों का कर्तव्य व दायित्व

1. समझदारी से समाधान एवं श्रम से समृद्धि सिद्धांत पर ग्राम सभा कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करेगा।
2. ग्राम सभा पूर्ण रूप से ग्रामवासियों के प्रति उत्तरदायी होगी। साथ ही वह ''ग्राम समूह सभा'' के प्रेरणा व उनके द्वारा दिए गए सुझावों पर निर्णय लेगी।

3. सर्वेक्षण, आंकलन व अध्ययन के आधार पर चिन्हित प्रयोजनार्थ प्रत्येक परिवार के लिए समयबद्ध स्वराज्य व्यवस्था सहज कार्य योजना बनाएगी व क्रियान्वयन के लिए विभिन्न समितियों को आवश्यक निर्देश देगी।
4. ग्राम की पाँचों समितियों के साथ उनके अपने–अपने लक्ष्य प्राप्त करने में पूर्ण सहयोग देगी व उनके लिए जो भी सुविधायें, तकनीकी ज्ञान, विज्ञान आदि की आवश्यकता होगी उसे उपलब्ध कराएगी।
5. ''**विनिमय** कोष'' आवश्यकता के आधार पर सरकारी बैंक के बीच संयोजन (एजेंसी) का कार्य करेगी।
6. पाँचों समितियों के कार्यों का समय–समय पर मूल्यांकन करेगी व उन्हें आवश्यक निर्देश देगी।
7. सर्वेक्षण, आंकलन, अध्ययन व प्राथमिकताओं के आधार पर ग्राम में सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करेगी। इस दिशा में यदि किसी समिति व अन्य संस्थाओं के सहयोग की आवश्यकता हुई तो उसे प्राप्त करेगी।
8. निम्न सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था ग्राम सभा द्वारा की जायेगी–
    1. प्रत्येक परिवार के लिए आवास का प्रावधान। इसके लिए स्थानीय व्यक्तियों व वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग किया जावेगा।
    2. सस्ती शोधन विधि द्वारा शुद्ध व पवित्र पीने के पानी की व्यवस्था।
    3. जल–मल निकासी की व्यवस्था करना।
    4. कृषि के साथ पशुपालन आवश्यक होने के कारण ''गोबर–गैस प्लांट'' द्वारा, गोबर–गैस गाँव में सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से उपलब्ध कराना। प्राकृतिक गैस उपलब्ध होने की स्थिति में उसका सर्वाधिक उपयोग करने की प्रणाली को विकसित करना।
    5. गोबर खाद का कंपोस्ट खाद के लिए व्यापक व्यवस्था करना।
    6. सौर–ऊर्जा का सर्वाधिक प्रयोग करने की प्रणाली विकसित करना ताकि उसका उपयोग पानी पंप करने, खाना पकाने, वाष्पीकरण, अनाज सुखाने, ठंडा या गर्म करने में किया जा सके, जिससे लकड़ी, कोयला आदि परंपरागत ईधनों को जलाने से रोका जा सके। इसी संदर्भ में पवन चक्की व जल प्रवाह शक्ति की उपयोगिता की संभावना का पता लगाना व क्रियान्वयन करना।
    7. प्रत्येक घर के साथ शौचालय व सामूहिक शौचालय की व्यवस्था करना। शौचालय से बहते पानी को कृषि उद्यान में उपयोग करना।
    8. सड़क मार्ग, रेल यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना व निकट की मंडियों व बाजारों को सड़कों से जोड़ना।
    9. दूरभाष व दूर संचार सेवा, डाक घर, बैंक, चिकित्सा आदि की व्यवस्था करना।
    10. ग्राम के लिए पाठशाला, चिकित्सा केन्द्र **विनिमय–कोष** के लिए भवन, गोदाम, बहुद्देशीय भवन की व्यवस्था करना जो न्याय सभा, संबोधन सभा, सांस्कृतिक सभा, विवाह व मिलन सभा, प्रार्थना सभा, स्वागत सभा व छाया के अंदर खेलने के लिए उपयोगी रहेगा। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर: 168–170)**

- (ग्राम में शिक्षा संस्कार समिति)

  6. व्यवसाय शिक्षा के लिए ''शिक्षा संस्कार समिति'' "उत्पादन सलाहकार समिति" एवं "वस्तु **विनिमय** कोष समित" के साथ मिलकर कार्य करेगी व सम्मिलित रूप से यह तय करेगी कि ग्राम की वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, किस–किस व्यक्ति को, किस–किस उत्पादन की शिक्षा दी जाए। ''**विनिमय** कोष समिति" ऐसे उपायों की जानकारी देगी, जिनकी गाँव के बाहर अच्छी माँग है व जिसे वह अच्छी कीमत पर **विनिमय** कर सकती है। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर: 173–174)**

- न्याय सुरक्षा समिति

  ग्राम न्याय सुरक्षा समिति :– ग्राम सभा के द्वारा मनोनीत की जायेगी। यह समिति गाँव की सम्पूर्ण व्यवहार कार्य सम्बन्धी विवादों को हल करने के लिए स्वतंत्र होगी व बाह्य हस्तक्षेप से मुक्त रहेगी। न्याय प्रक्रिया का स्वरूप सुधार–प्रणाली पर आधारित रहेगा ताकि ग्राम–न्यायालय में सम्पूर्ण प्रक्रिया मानवीय संचेतनावादी व्यवहार पद्धति पर आधारित होगी। चूंकि प्रत्येक मानव को, मानवीयता पूर्ण पद्धति व प्रणाली व नीति पूर्वक जीने का अधिकार समान है। इसके अनुसार गाँव में मानवीयता पूर्ण आचरण पद्धति, मानवीयता पूर्ण व्यवहार प्रणाली व अर्थ (तन, मन, धन) की सुरक्षात्मक व सदुपयोगात्मक नीति रहेगी। जो भी व्यक्ति इस व्यवस्था की निरंतरता बनाए रखने में असमर्थ रहेगा, वह सुधरने के लिए बाध्य होगा। मानव अज्ञान, अत्याशा और अभाव वश ही गलती, अपराध तथा तन, मन, धन रूपी अर्थ का अपव्यय करता है। यह व्यवहार मानवीयता और सामाजिकता व व्यवस्था सहज गति के लिए सहायक नहीं है। न्याय सुरक्षा समिति, न्याय सुलभता और सुरक्षा कार्य में निष्ठान्वित तथा प्रतिज्ञाबद्ध रहेगी।

  न्याय सुरक्षा समिति मानवीय आचार संहिता के अनुसार न्याय प्रदान करेगी। मानवीय आचार संहिता के अनुसार न्याय व्यवस्था के चार प्रधान आयाम है :– (1) आचरण में न्याय (2) व्यवहार में न्याय (3) उत्पादन में न्याय (4) **विनिमय में न्याय**। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:177–178)**

- उत्पादन में न्याय :–

  1) प्रत्येक व्यक्ति द्वारा आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना।

  2) प्रत्येक व्यक्ति में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने योग्य कुशलता व निपुणता को स्थापित करना, जिसका दायित्व शिक्षा संस्कार समिति को होगा।

  3) उत्पादन के लिए व्यक्ति में निहित क्षमता योग्यता के अनुरूप उसे प्रवृत्त करना जिसका दायित्व ''उत्पादन कार्य सलाह समिति" का होगा।

  4) उत्पादन के लिए आवश्यकीय साधनों को सुलभ करना इसका दायित्व "**विनिमय कोष समिति**" का होगा।

  5) उत्पादन कार्य सामान्य आकाँक्षा (आहार, आवास, अलंकार) महत्वाकाँक्षा (दूर दर्शन, दूर गमन, दूर श्रवण) सम्बन्धी वस्तुओं के रूप में प्रमाणित होना।

6) "उत्पादन कार्य सलाह समिति" व "**विनिमय कोष समिति"** संयुक्त रूप में सम्पूर्ण ग्राम की उत्पादन सम्बन्धी तादाद, गुणवत्ता व श्रम मूल्यों का निर्धारण करेगी। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:181–182)**

- **विनिमय में न्याय :–**

1. उत्पादित वस्तु के **विनिमय** कार्य सुलभ करना।
2. **विनिमय** प्रक्रिया प्रथम चरण में, श्रम मूल्य को वर्तमान में प्रचलित प्रतीक मुद्रा के आधार पर मूल्यांकित करने की व्यवस्था रहेगी। जैसे स्थानीय उत्पादन को, जहाँ उसको बेचना है, उस मंडी की दरों पर आधारित उसका क्रय मूल्य निर्धारित होगा। ग्राम की आवश्यकता के लिए अन्य बाजारों से, वस्तुओं का विक्रय मूल्य, उन बाजारों के क्रय मूल्य पर आधारित होगा।
3. द्वितीय चरण में श्रम के आधार पर प्रतीक मुद्रा को मूल्यांकन करने की व्यवस्था होगी व उसी के आधार पर क्रय विक्रय कार्य सम्पन्न होगा।
4. तृतीय चरण में श्रम मूल्य के आधार पर वस्तु मूल्य का मूल्यांकन होगा जिसका आधार उपयोगिता व कला मूल्य ही रहेगा व इसी के अनुसार लाभ–हानि–संग्रह मुक्त पद्धति से **विनिमय** प्रक्रिया संपन्न होगी। अर्थात् विनिमय प्रक्रिया श्रम मूल्य के आदान प्रदान के रूप में सम्पन्न होगी।

"न्याय सुरक्षा समिति" सुरक्षा कार्य को ग्राम वासियों के तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर क्रियान्वयन करेगा। जैसे :–

1. ग्राम में न्याय सुरक्षा
2. उत्पादन एवं **विनिमय** सुरक्षा
3. परिवार सुरक्षा
4. मानवीय शिक्षा – संस्कार सुरक्षा
5. स्वास्थ्य संयम सुरक्षा
6. नैसर्गिक सुरक्षा
7. संगीत, साहित्य, कला की सुरक्षा

   "न्याय सुरक्षा समिति" ग्राम की सभी प्रकार की सुरक्षाओं के प्रति जागरूक रहेगी। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:182–183)**

- **उत्पादन और विनिमय सुरक्षा** :–

1) उत्पादन सुरक्षा :– गाँव में जितने भी प्रकार के उत्पादन सम्बन्धी मौलिकताएँ प्रमाणित होंगी उन सबके सुरक्षा का दायित्व न्याय सुरक्षा समिति का होगा। जैसे किसी उत्पादन कार्य में विशेष प्रकार की मौलिकता अथवा मौलिक प्रणाली अथवा मौलिक औजार, मौलिक विधि जो परंपरा में नहीं रही है, ऐसी स्थिति में उन सबको सुरक्षित किया

जाएगा। इन सबसे सम्बन्धित मूल वांङ्मय, डिजाइन, चित्रण, नक्शा, प्रक्रिया, प्रणाली और विधियों को लिपि बद्ध, सूत्र बद्ध कर सुरक्षित करेगा। आवश्यकता पड़ने पर लोकव्यापीकरण कराएगा व पुरस्कार की व्यवस्था करेगा।

2) औषधियों का अनुसंधान, वनस्पतियों का पहचान, ज्योतिष सम्बन्धी अनुसंधान, हस्तरेखा व सामुद्रकि शास्त्र सम्बन्धी साहित्य का अनुसंधान जो परंपरा में नहीं रहा है, उसको उपयोगिता के अनुसार उसकी सुरक्षा का दायित्व ''सुरक्षा समिति'' का होगा।

3) साहित्य, कला, संगीत, शिल्प में परंपरा की श्रेष्ठता का अनुसंधान, जो परंपरा में नहीं थी, ऐसी प्रस्तुति होने की स्थिति में उसका यथावत् संरक्षण करेगा।

4) खेलकूद, व्यायाम, अभ्यास में परंपरा से अधिक श्रेष्ठता और अनुसंधानों को संरक्षित करेगा।

उपरोक्त कार्य के लिए ''न्याय सुरक्षा समिति'' क्रम से उत्पादन कार्य सलाह समिति, "स्वास्थ्य संयम समित" "शिक्षा संस्कार समिति'' के सहयोग से मूल्यांकन प्रक्रिया सम्पादित करेगा। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:183–184)**

- **विनिमय में सुरक्षा** :–

1) श्रम मूल्यों को उपयोगिता व कला मूल्य के आधार पर पहचानने की दिशा में ''सुरक्षा समिति'' निरंतर सजग रहेगी। एक श्रम मूल्य का आंकलन जो कुछ भी ग्राम स्वराज्य स्थापना दिवस में प्रमाणित रहेगा, उसकी गति के प्रति सतर्क रहेगा। निपुणता, कुशलता, कार्य गति, समय व साधन के कुल संयोग से श्रम का मूल्यांकन होगा। जैसे किसी एक वस्तु के निर्माण कार्य से, जिसका फलन स्थापना दिवस पर यदि एक रहा और बाद में यदि दो, तीन या चार हो गया, ऐसी अर्हता को ग्राम में सर्व सुलभ कराने का दायित्व ''सुरक्षा समिति'' का होगा। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में उत्पादन गति में वृद्धि करने और **विनिमय** में उसकी समृद्धि के अर्थ को सार्थक बनने का दिशा में कार्य सुरक्षा समिति करेगा।

2) लाभ–हानि के सम्बन्ध में सतर्क रहना। (अनावश्यक लाभ और असहनीय हानि न होने के लिए सतर्क होना) उसके लिए सभी व्यवस्था प्रदान करना।

3) वस्तु की उत्पादन के आधार पर मूल्यांकन करने में सतर्क रहना व कार्य रूप देना।

4) सभी **विनिमय** की संभावना को बनाए रखने में सतर्क रहना व प्रोत्साहित करना। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:184–185)**

- 8.9 (4) **विनिमय कोष समिति**

आरंभ में समाज सेवी (प्रशिक्षण प्राप्त) समझ सहित समाधान समृद्धि सम्पन्न व्यक्ति **विनिमय** कोष कार्य में भागीदारी करेंगे।

सौ परिवार के गांव के लिए अनुमानत: कम से कम तीन व्यक्ति **विनिमय** कोष में भागीदारी करेंगे। इसमें से एक व्यक्ति गाँव में उत्पादित वस्तुओं के अन्य स्थानों में, बाजारों में विक्रय करेगा एवं अन्य स्थान व बाजारों से वस्तुओं

को **विनिमय** पूर्वक अथवा क्रय विधि से **विनिमय** कोष में लायेगा। दूसरा व्यक्ति लेखा जोखा व खातों की देख–रेख करेगा। तीसरा व्यक्ति सामान का लेन–देन करेगा व उनको भंडार में रखने की व्यवस्था करेगा। आवश्यकता पड़ने पर अन्य व्यक्तियों को भी **विनिमय** कोष में भर्ती किया जा सकता है।

विनिमय कोष के काम काज को सुगम बनाने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जायेगा। क्रम से **विनिमय** कोष व्यवस्था, पूरे राज्य व देश में, स्थापित हो जाने पर, ग्राम **विनिमय** कोष क्रम से, ग्राम समूह क्षेत्र , जिला मंडल, मुख्य राज्य व प्रधान राज्य के **विनिमय** कोष समितियों के साथ आदान–प्रदान से जुड़ारहेगा। ''**विनिमय** कोष'' संविधान के अनुसार, कार्य करता रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी **विनिमय** कोष समिति की होगा जो समय–समय पर खातेदार सदस्यों की सामान्य बैठक बुलाकर, उनके सामने प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा। सामान्य बैठक में बहुमत के आधार पर मार्गदर्शन प्राप्त करेगा। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:187–188)**

- **विनिमय कोष सलाहकार समिति का मूल्यांकन**

''**विनिमय कोष सलाह समिति"** का मूल्यांकन निम्न आधार पर होगा :–

1. विनिमय सहजता व सुलभता का मूल्यांकन।
2. विनिमय में लाभ हानि मुक्त प्रणाली का मूल्यांकन।
3. विनिमय प्रणाली में स्व'छता का मूल्यांकन।
4. विनिमय क्रिया कलाप में, गुणवत्ता, परिमाण, परिमापन, का मूल्यांकन।
5. विनिमय कोष द्वारा उत्पादन में प्रोत्साहन और सहायता का मूल्यांकन।
6. विनिमय श्रम में गुणवत्ता का मूल्यांकन।
7. स्थानीय रूप से वस्तुओं का आदान प्रदान सुलभ रहेगा। बाह्य बाजारों से क्रय किया गया वस्तुओं का मूल्यांकन क्रय मूल्य के आधार पर आधारित रहेगा।
8. साधन प्रबंधों का मूल्यांकन। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:190)**

- न्याय सुरक्षा समिति का मूल्यांकन

"न्याय सुरक्षा समिति'' का मूल्यांकन निम्न आधारों पर होगा

1. आचरण में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।
2. व्यवहार में न्याय सुलभता का मूल्यांकन
3. उत्पादन में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।
4. **विनिमय में न्याय सुलभता का मूल्यांकन।**
5. तन,मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा का मूल्यांकन।
6. ग्राम में प्राकृतिक वातावरण सहज सुरक्षा का मूल्यांकन।
7. उत्पादन एवं विनिमय सुरक्षा का मूल्यांकन।

8. परिवार सुरक्षा का मूल्यांकन।
9. शिक्षा संस्कार सुरक्षा का मूल्यांकन।
10. स्वास्थ्य संयम सुरक्षा का मूल्यांकन।
11. नैसर्गिक सुरक्षा का मूल्यांकन। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर:191–192)**

- कार्यक्रम – 5

विनिमय कोष समिति से सत्यापन

1. हर ग्राम सभा से मनोनीत अनुप्राणित विनिमय कोष समितियाँ विनिमय के लिए प्रस्तुत ग्राम के सभी वस्तुओं का भण्डारण व विनिमय, ग्राम में जो वस्तुएँ उत्पादित नहीं हो पाई उसे अन्य ग्राम से विनिमय पूर्वक प्राप्त करना निहित कार्यक्रम है।
2. हर विनिमय–कोष–समिति में भण्डारण प्रबन्धन रहेगा।
3. हर विनिमय कोष समिति सदस्य परिवार और परिवार–समूह सभाओं के द्वारा किये गये वस्तुओं के मूल्यांकन में सहमत और पुनर्मूल्यांकन करने में ग्राम सभा की सहमति प्राप्त करने का अधिकार निहित रहेगा।
4. ग्राम में हर परिवार गत आवश्यकता के आधार पर वस्तु विनिमय विधि से उपलब्ध कराने का दायी (ग्राम सभा की होगी) होगा। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:195)**

- **संबंध उत्सव घोषणा**

प्रत्येक परिवार पूरा ग्राम परिवार के साथ तालमेल बनाये रखने का अधिकार।

हर परिवार उत्सव सम्बन्ध

हर तरह कला संबंध

संस्कृति – संबंध

सभ्यता – संबंध

शिक्षा लोक शिक्षा – संबंध

विनिमय – संबंध

उत्पादन – संबंध

वस्तुओं का उपयोग – संबंध

कला – संबंध

साहित्य – संबंध

मानव सभ्यता – संबंध

स्वास्थ्य – संबंध

अनुभव – संबंध

समाधान – संबंध

न्याय – संबंध

नियम–नियंत्रण–संतुलन–संबंध

इन सभी संबंधों में मानवीयतापूर्ण आचरण को प्रमाणित करना ही व्यवस्था है। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:205–206)**

- **विनिमय उत्सव घोषणा**

  उत्सव

  1. उत्पादन कार्य व सफलता।
  2. विनिमय कोष–कार्य व सफलता का।
  3. स्वास्थ्य–संयम–कार्य व सफलता का मूल्यांकन उन समितियों के सदस्य एक परिवार समूह सभा के सदस्यों का संयुक्त निरीक्षण–परीक्षण, ग्राम–सभा पटल में सूचना।
  4. स्वास्थ्य संयमोत्सव हर वर्ष कम से कम एक बार सम्पन्न होगा। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:209–210)**

- समृद्धि प्रमाण घोषणा

  विनिमय कोष

  1. विनिमय सुलभता परीक्षण–निरीक्षण विनिमय कोष समिति सदस्य व परिवार–समूह सभा सदस्यों का संयुक्त रूप में ग्राम–सभा पटल में सूचना।
  2. विनिमय विधि से सुधार व बदलाव होने की आवश्यकता के अनुसार ग्राम सभा की स्वीकृति और परिवार–समूह–सभा के प्रस्ताव के आधार पर होगा।
  3. विनिमय सुलभता हर परिवार में–से–के लिए सहज होना ही उद्देश्य रहेगा।
  4. विनिमय–कोष उत्सव हर वर्ष एक बार सम्पन्न होता रहेगा। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:210)**

- शोध – नित्य उत्सव – अनुसन्धान

  1. व्यवहार व आचरण सुगमता के अर्थ में
  2. मानवीय शिक्षा–संस्कार सुगम परंपरा के अर्थ में
  3. न्याय–सुरक्षा में सुगमता के अर्थ में
  4. उत्पादन कार्य में सुगमता के अर्थ में
  5. **विनिमय कार्य में सुगमता के अर्थ में**

6. स्वास्थ्य–संयम कार्य में सुगमता के अर्थ में लोक व्यापीकरण पूर्वक प्रयोजन–प्रमाण नित्य उत्सव है। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर:212)**

- अ. स्वराज्य व्यवस्था सहज गति

  "अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या पर आधारित ग्राम मोहल्ला स्वराज्य है"

  ग्राम स्वराज्य की मूलभूत इकाई समझदार परिवार है। परिवार स्वयं मानव चेतना मूल्य शिक्षा सम्पन्न मानवीयता पूर्ण व्यवस्था सहज मौलिक रूप है। मानवीयता स्वयं स्वराज्य एवं स्वतंत्रता का सूत्र स्वरुप है। स्वराज्य का तात्पर्य न्याय–सुलभता, उत्पादन–सुलभता और **विनिमय**–सुलभता है। इसके पूरकता में शिक्षा – संस्कार, स्वास्थ्य आवश्यक है। स्वतंत्रता का तात्पर्य प्रत्येक मानव का स्वानुशासन सहज प्रामाणिकता और समाधान पूर्वक अभिव्यक्त, संप्रेषित व प्रकाशित होने से है, जो सहअस्तित्व रूपी परम सत्य अनुभव पूर्वक विधि से जानने व मानने से है अर्थात् सह–अस्तित्व में परस्पर संबंधों व मूल्यों को पहचानने व निर्वाह करने से है। यही शिक्षा–संस्कार, न्याय –सुरक्षा सुलभता स्त्रोत है। **(अध्याय:10, पृष्ठ नंबर:216)**

- "**विनिमय सुलभता"** का तात्पर्य हर परिवार में से उत्पादित वस्तुओं को श्रम मूल्य के आधार पर दूसरे परिवारों के साथ लाभ–हानि मुक्त आदान–प्रदान से है ताकि हर परिवार को भौतिक समृद्धि का अनुभव हो सके। इस व्यवस्था में सम्पूर्ण **विनिमय**–प्रत्येक परिवार द्वारा किए गए श्रम नियोजन को, अन्य परिवारों में श्रम मूल्य के आधार पर आदान–प्रदान करने से है। इसके अनुसार प्रथम चरण में ग्राम के **विनिमय** कोष द्वारा, प्रत्येक परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन को, बाह्य बाजारों में विक्रय कर, वहाँ से गाँव के लिए आवश्यक वस्तुओं को क्रय कर, ग्राम वासियों को उपलब्ध कराया जाएगा। ऐसी व्यवस्था, क्रम से ग्राम समूह, क्षेत्र मण्डल, मंडल समूह, मुख्य राज्य, प्रधान राज्य और विश्व राज्य तक जुड़ारहेगा। यही विश्व शान्ति सहज सूत्र है। **(अध्याय:10, पृष्ठ नंबर:217–218)**

- **विनिमय सम्बन्धी आकलन** :–

  सभी उत्पादित वस्तुओं की संख्या, तादाद, प्रकार, उपयोगिता, गुणवत्ता, उपयोगिता, उपयोगिता मूल्य। वर्तमान में विनिमय व्यवस्था का आंकलन। कितने दुकानें हैं, कितने व्यक्ति विनिमय कार्य में लगे हुए हैं। गोदाम संरक्षण सहज आंकलन व्यवस्था का आंकलन।

  स्थानीय रूप से आवश्यक वस्तुएँ जो बाह्य बाजारों से खरीदी और गाँव में विनिमय की जाती हैं। **(अध्याय:10, पृष्ठ नंबर:221)**

- न्याय सुरक्षा सम्बन्धी आंकलन :–

  1. ग्राम का प्रत्येक वयस्क व्यक्ति समझदारी सम्पन्न है या नहीं अपनी योग्यता और पात्रता के अनुसार उत्पादन करता है या उत्पादन में भागीदार है या नहीं? के रूप में उत्पादन न्याय का आंकलन।

2. उत्पादित वस्तुओं का शोषण विहीन पद्धति से कहाँ तक **विनिमय**, आदान–प्रदान हो रहा है – के रूप में **विनिमय** न्याय का आंकलन।
3. स्वधन, स्वपुरूष/स्वनारी, दया पूर्ण कार्यों और तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, आचरण–न्याय का आंकलन।
4. सम्बन्धों के साथ विश्वास निर्वाह के रूप में व्यवहार–न्याय का आंकलन।
5. न्याय, समाधान समृद्धि पूर्वक जीने में कठिनाइयों का निराकरण।
6. न्याय व्यवस्था में मूल्यांकन समीक्षा एवं आंकलन।
7. गाँव मोहल्ला सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं का आंकलन व वर्तमान में सुरक्षा व्यवस्था कैसी है ? **(अध्याय:10, पृष्ठ नंबर:222–223)**

- मूल्य
  - * सम्पूर्ण संबंध निश्चित है।
  - * परिवार सभा सम्बन्ध, शिक्षा–संस्कार–सम्बन्ध, न्याय–सुरक्षा सम्बन्ध, उत्पादन कार्य **विनिमय कार्य** सम्बन्ध, स्वास्थ्य संयम सम्बन्ध
  - * संबंधों की पहचान सहित निर्वाह निरन्तरता में स्थापित मूल्य प्रमाणित होता है।

हर सम्बन्धों की पहचान, निर्वाह प्रयोजनों के अर्थ में निरन्तरता है।

प्रयोजन हर नर–नारी की आवश्यकता है। स्वयमेव समग्र व्यवस्था ही प्रयोजन है।

जीवन मूल्य – 4

मानव मूल्य – 6

स्थापित मूल्य – 9

शिष्ट मूल्य – 9

वस्तु मूल्य – 2

प्रमाण ही मानव समाज गति है। **(अध्याय:11, पृष्ठ नंबर:229–230)**

- मानव लक्ष्य मानवत्व के योगफल में ही जागृति मूलक शिक्षा, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य, **विनिमय कार्य**, स्वास्थ्य संयम कार्य है। **(अध्याय:12, पृष्ठ नंबर:241)**

जीवन विद्या – एक परिचय

(संस्करण: 2010: मुद्रण: 2017)

- मानव अभी तक मूल्यों के पास गया ही नहीं। मूल्यों के पास गया होता तो मूल्य अभिव्यक्त होता, मूल्य प्रमाणित होता, मूल्यांकित होता और स्वाभाविक रूप में न्याय होता। न्यायालयों में फैसला होता है न्याय नहीं। इन फैसलों से एक पक्ष भयवश एक पक्ष प्रलोभनवश सहमत होता है। उभयतृप्ति इसमें कभी हुआ नहीं, हो ही नहीं सकता। न्याय को पाने में हम सर्वथा असमर्थ रहे हैं। उसके बावजूद भी विकास का दावा करते हैं। विकास का क्या अर्थ होता है आप ही सोच लीजिए। भय और प्रलोभन से हर मानव छूटना चाहता है ये नियति सहज है। इससे मानव का भी कल्याण है। नैसर्गिकता का भी कल्याण है। इस तरह प्रयोजन के आधार पर संबंध है। प्रयोजन समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व है इसके लिए प्रक्रिया है व्यवस्था में जीना। व्यवस्था में जीने का मतलब है कि पाँचों आयामों में भागीदारी करना। पाँच आयाम है: 1.शिक्षा संस्कार, 2. न्याय– सुरक्षा, 3. स्वास्थ्य– संयम, 4. उत्पादन– कार्य, 5. **विनिमय– कोष**। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 76–77)**
- हर अभिभावक अपने बच्चों को सिखाता ही है उसके बाद शिक्षण संस्थाओं में सिखाते हैं फिर राजगद्दी, धर्म गद्दी अपने ढंग से सिखाते हैं। इस शिक्षा से हम जो भी शिक्षा पाए उससे मानव बने नहीं है। अब विचार इतना ही है, प्रयत्न इतना ही है, प्रमाण इतना ही है कि हम मानव बन सकें। मानव परंपरा बन सकें। इससे फायदा होगा नैसर्गिकता का संतुलन और मानव में न्याय स्थापित हो जाएगा। न्यायपूर्वक व्यवस्था में जीना ही है। यह कौन सा बड़ा दुर्गम कार्य है? किंतु मानव को इसकी आवश्यकता महसूस होने की जरूरत है। अभी तक जो भी किए हैं संवेदना के आधार पर किए हैं। जिससे हमारी जरूरत पूरी होने वाली नहीं इसी से धरती बर्बाद हो गई आदमी तो बर्बाद है ही। इसीलिए आबाद होना है तो मानवीयता को पहचानना ही होगा। मानवीयतापूर्ण व्यवस्था में जीना होगा और उसकी निरंतरता की संभावना है। वर्तमान में मुद्दा है कि नैसर्गिकता के साथ अपराध रुक जाए। व्यवस्था का स्वरूप है:–

  1. शिक्षा संस्कार में भागीदारी 2. न्याय सुरक्षा में भागीदारी 3. उत्पादन कार्य में भागीदारी 4.**विनिमय** कोष में भागीदारी 5. स्वास्थ्य संयम में भागीदारी

  इन पाँचों आयामों में भागीदारी ही व्यवस्था में भागीदारी है। यह जागृति के बाद ऐसी व्यवस्था हर आदमी से उद्गमीत होती है, हर आदमी में प्रमाणित होती है। इस प्रकार सार संक्षेप में व्यवस्था की प्रस्तुति पूरी हुई। हर बुद्धिमान इसे स्वीकार सकता है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर: 100)**

विकल्प एवं अध्ययन बिन्दु

(संस्करण:2011,मुद्रण: 2016)

- (38) व्यवस्था सहज 5 आयामों का स्पष्ट बोध एवं हृदयंगम

  (1) शिक्षा–संस्कार व्यवस्था

  (2)न्याय–सुरक्षा व्यवस्था

  (3)उत्पादन–कार्य व्यवस्था

  (4)**विनिमय**–कोष व्यवस्था

  (5)स्वास्थ्य–संयम व्यवस्था **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:27–28)**
- (39) वर्तमान में उपयोगिता पूरकता सहज अनूकुल परिस्थितियाँ:–

  (1) मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता

  (2)न्याय सुरक्षा सुलभता

  (3)उत्पादन कार्य सुलभता

  (4)**विनिमय कोष सुलभता**

  (5)स्वास्थ्य, संयम सुलभता – सहज ज्ञान विज्ञान **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:28)**
- परिवार सभा, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या अनुसार पंचमुखी कार्यक्रम प्रवृत्ति यथा

  (1) मानवीय शिक्षा–संस्कार कार्य

  (2)मानवीय न्याय–सुरक्षा कार्य

  (3)मानवीय उत्पादन–कार्य

  (4)मानवीय **विनिमय**–कार्य

  (5)मानवीय स्वास्थ्य–संयम कार्य

  प्रवृत्तियों का परीक्षण, निरीक्षण, समृद्धिकरण, आंकलन कर्तव्य संयुक्त सत्यापन। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:29)**
- अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन पूर्वक सहअस्तित्ववादी व्यवस्था विधि से मोहल्ला, ग्राम, परिवार सभा

  दस परिवार समूह सभा में से निर्वाचित प्रतिनिधि

  दस जन प्रतिनिधि परिवार सभा से मनोनीत पाँच समितियाँ, यथा –

  (i) मानवीय शिक्षा–संस्कार समिति

  (ii) मानवीय न्याय–सुरक्षा समिति

  (iii) मानवीय उत्पादन–कार्य समिति

(iv) मानवीय **विनिमय**–कोष समिति

(v) मानवीय स्वास्थ्य–संयम समिति

मोहल्ला, ग्राम परिवार सभा सहज प्रयोजनों के अर्थ में – और दस परिवार समूह सहज आवश्यकता के अनुसार समिति में कार्यरत व्यक्ति का दायित्व निश्चयन रहेगा **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:30–31)**

- 37. जागृति सहज मानव परंपरा :– समझदारी सहज सर्वतोमुखी समाधान के रुप में प्रमाणित करने का परंपरा। शिक्षा – संस्कार, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य, **विनिमय** कोष, स्वास्थ्य संयम विधि से प्रमाण। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:40)**
- 101. संबंध :–

(i) शरीर संबंध	(v) उत्पादन संबंध
(ii) मानव संबंध	(vi) **विनिमय** संबंध
(iii) शिक्षा संबंध	(iv) नैसर्गिक संबंध
(v) व्यवस्था संबंध **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 46)**	

- 113. सार्वभौम व्याख्या :– दस सोपानीय परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था जिसमें बिना धन व्यय के जनप्रतिनिधि सुलभ होना। सभी प्रतिनिधि समझदारी समृद्धि से सम्पन्न होना। समझदारी सम्पन्न समृद्धि सहित परिवार का प्रतिनिधि होना एवं मानवीय शिक्षा संस्कार, न्याय सुरक्षा संस्कार, उत्पादन कार्य संस्कार, **विनिमय** कार्य संस्कार, स्वास्थ्य संयम संस्कार, कार्य में भागीदारी सहज परिवार प्रतिनिधि निर्वाचित परंपरा रुप में वर्तमान होना। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:47)**

मानवीय आचरण सूत्र

(संस्करण: प्रथम, मुद्रण: 2003)

- 1.6 समझदारी पाँच प्रकार अर्थात् मानवीय शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, उत्पादन–कार्य, **विनिमय**–कोष, स्वास्थ्य–संयम कार्य से – पहचान प्रकट रहता है। यह हर नर–नारियों में, से, के लिए मौलिक अधिकार व समाधान है। समझ न होने की स्थिति में भ्रम प्रवृत्तियाँ प्रभावकारी रहती हैं जो हर नर–नारियों में, से, के लिए समस्या, क्लेश, कष्ट के रूप में पाई जाती हैं। **(अध्याय:1, पृष्ठ नंबर:2)**
- 2.12 मानव–लक्ष्य मानवत्व के योगफल में ही जागृति मूलक शिक्षा, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य, **विनिमय** कार्य स्वास्थ्य संयम कार्य है।

संतुलन	नियंत्रण	नियम	(न्याय, धर्म, सत्य)
↓	↓	↓	↓
स्वास्थ्य के रूप में	उत्पादित वस्तुओं के मूल्यांकन के रूप में	उत्पादन कार्य में	शिक्षा संस्कार न्याय, सुरक्षा में

(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर:13)

- 3.21 जागृत परम्परा में ही मानवीय शिक्षा संस्कार, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान मानवीयता पूर्ण परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहित सह–अस्तित्व में अनुभव मूलक व्यवहार व प्रयोग उत्पादन कार्य, **विनिमय** कार्य, स्वास्थ्य संयम कार्य, न्याय सुरक्षा कार्य, मानवीय शिक्षा–संस्कार कार्य सहज प्रमाण सम्पन्नता का बोध सहित स्वयं में विश्वास सम्पन्न होना है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर:18)**
- 6.12 सर्व मानव का सम्पूर्ण कार्य–व्यवहार उत्पादन **विनिमय**, स्वास्थ्य, संयम, न्याय सुरक्षा, शिक्षा संस्कार सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाण प्रस्तुत करना ही जागृत परम्परा है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर:40)**

संवाद भाग १

(संस्करण: प्रथम, मुद्रण: 2011)

- “सार्वभौम व्यवस्था” में मानव के जीने के पाँच आयाम है:

  (1) शिक्षा –संस्कार

  (2)न्याय –सुरक्षा

  (3)स्वास्थ्य–संयम

  (4)उत्पादन –कार्य

  (5)**विनिमय** –कोष

  (अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 247)

- आवर्तनशील अर्थशास्त्र में उत्पादन के लिए नियोजित होने वाले प्राकृतिक ऐश्वर्य के स्त्रोत को बनाए रखते हुए उत्पादन और **विनिमय** व्यवस्था को बताया गया है।

  (अध्याय:, पृष्ठ नंबर: 259)

संवाद भाग २

(संस्करण:2013)

- **परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था**

दस व्यक्तियों के समझदार परिवार में समाधान–समृद्धि का वैभव होता है। ऐसे दस समझदार परिवार एक–एक व्यक्ति को अपने में से निर्वाचित करते हैं, जो परिवार–समूह सभा को गठित करता है। ऐसे दसों व्यक्तियों का अधिकार समान होगा, उसका कोई एक मुखिया होगा ऐसा नहीं है। इन दसों परिवारों के जीने के पाँचों आयामों – शिक्षा–संस्कार कार्य, न्याय–सुरक्षा कार्य, स्वास्थ्य–संयम कार्य, उत्पादन कार्य, **विनिमय–कोष कार्य** – में जब भी कोई काम आया उसको पूरा करना, इनका काम रहेगा। जैसे सभी दस परिवार शिक्षा–संस्कार में पारंगत हैं या नहीं, उसमे जो कमी है उसको पूरा करना। सभी दस परिवार न्याय पूर्वक जी पा रहे हैं, यदि नहीं जी पा रहे हैं तो उसको पूरा करना। सभी दस परिवार उत्पादन कार्य में प्रवीण हैं या नहीं, आवश्यक उत्पादन कर पा रहे हैं या नहीं – इसका परिशीलन करना, और उसकी कमियों को पूरा करना। सभी स्वास्थ्य को लेकर स्वायत्त हैं या नहीं इसका परिशीलन करना और उसकी कमियों को पूरा करना। व्यवस्था के अर्थ में ही कमियों का आंकलन होता है, और उसको पूरा करने के लिए प्रयास होता है।

इस तरह एक परिवार से एक परिवार–समूह तक पहुँचते हैं। ऐसे दस परिवार–समूह मिल कर एक ग्राम परिवार–सभा को तैयार करते हैं। ग्राम–परिवार सभा में भी यही पाँचों आयाम – शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, स्वास्थ्य–संयम, उत्पादन, और **विनिमय** – काम करते हैं। इन सौ परिवारों के बीच ही **विनिमय**–कोष कार्य पूरा होता है, संतुलित होता है।

इसके आगे ग्राम–समूह परिवार–सभा में दस ग्राम परिवार–सभाओं से एक–एक व्यक्ति निर्वाचित हो कर पहुँचते हैं। इस प्रकार उत्पादन के दस गावों तक पहुँचने की व्यवस्था बनती है। इस तरह हज़ार परिवारों के बीच संतुलन की व्यवस्था बनती है।

इसके आगे दस ग्राम–समूह सभाओं से एक–एक व्यक्ति निर्वाचित हो कर मंडल परिवार–सभा तक पहुँचते हैं। इस तरह दस–हज़ार परिवारों के बीच पाँचों आयामों में संतुलन की व्यवस्था बनती है।

इसके आगे दस मंडल–सभाओं से एक–एक व्यक्ति निर्वाचित हो कर मंडल–समूह परिवार–सभा तक पहुँचते हैं। दस मंडल–समूह परिवार सभा से एक–एक व्यक्ति निर्वाचित हो कर मुख्य–राज्य परिवार–सभा बनता है। इसी विधि से आगे प्रधान–राज्य परिवार सभा और विश्व परिवार–सभा के होने का प्रावधान है। इस तरह "दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था" का स्वरूप निकलता है – जिससे विश्व स्तर तक शिक्षा–संस्कार, न्याय–सुरक्षा, स्वास्थ्य–संयम, उत्पादन और **विनिमय–कोष कार्यों** को व्यवस्था के अर्थ में संपादित किया जाता है, उनमे कमियों को पूरा किया जाता है। व्यवस्था का काम यह है, न कि आदमी को फांसी पर लटकाना, बन्दूक दिखा कर बस में रखना। शक्ति केंद्रित शासन मानव को स्वीकार नहीं है। व्यवस्था ही मानव को स्वीकार होती है. सार्वभौम–व्यवस्था के लिए सह–अस्तित्ववादी ज्ञान, विवेक, विज्ञान में पारंगत होने की आवश्यकता बनती है।

पारंगत होने के लिए शिक्षा–विधि ही है। उसके लिए हम छत्तीसगढ़ में कुछ प्रयास कर रहे हैं, आगे चल कर सभी जगह पहुँचेंगे।

– श्री ए नागराज के जीवन–विद्या राष्ट्रीय सम्मलेन २०१० में उदबोधन पर आधारित
http://madhyasth-darshan.blogspot.com/2011/05/blog-post_03.html
(अध्याय:1.2, पृष्ठ नंबर: 37–39)

- **समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि**

IIT में fission-fusion (नाभिकीय भौतिकी) में PhD करने वाले विद्यार्थियों ने मुझसे पूछा – "हम यह सब fission-fusion की पढ़ाई क्यों कर रहे हैं?"
मैंने उनको उत्तर दिया – आराम की रोटी खाने के लिए। जहाँ आपको रोटी मिलने का आश्वासन है, आप वही करते हो। लेकिन मैं आपको इतना बता दूँ – जिस बात की रोटी खाने आप जा रहे हो, उसमें आदमी की हैसियत से आप जी नहीं पाओगे। fission-fusion का क्या प्रयोजन है? क्या अपने घर में atom-bomb डालोगे?
कितना बड़ा धरातल में हाथ डालने वाला बात है यह! थोड़ा सा सोच के तुम बताओ। कितना भारी खतरा हम मोल लिए हैं! इस खतरे का मुझे ज्ञान नहीं है, ऐसा नहीं है। लोगों को मेरा ऐसा कहना कितना प्रिय–अप्रिय लगता है, इसका मुझे ज्ञान है। प्रिय लगना, अप्रिय लगना के आधार पर तुलन करना जीव–जानवरों के लिए है।
उन्होंने फ़िर पूछा – "इससे कैसे छूटें हम?"
इस पूरे विकल्प को पहले अच्छे से समझो – फ़िर समाधान संपन्न होने पर अपने परिवार की आवश्यकताओं से अधिक उत्पादन करने में संलग्न हो जाओ। आपके अभी नौकरी वाले तरीके में "जीना" तो बनेगा नहीं। पैसा जरूर हो सकता है। पैसे से वितृष्णा बढ़ना ही है। जैसे यदि आपके पास २ पैसा हो गया, तो ४ पैसे की प्यास बनता ही है। पैसे से हमको तृप्ति मिलेगी या वस्तु से तृप्ति मिलेगी – इसको तय करो! वस्तु से तृप्ति मिलती है, यह समझ में आता है – तो वस्तु के उत्पादन में लगो!
अभी सबसे बड़ी विपदा यही है – पढने के बाद श्रम नहीं करना है। इस प्रस्ताव को लेकर बुद्धिजीवियों के गले में फांसी यहीं पर लगती है। जितना ज्यादा जो पढ़ा – वह श्रम से उतना ही कट गया। श्रम किए बिना पैसा पैदा करना – वैध है, या अवैध है? आप ही तय करो!
प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम–नियोजन करने से उपयोगिता–मूल्य स्थापित होता है। जैसे – लकड़ी से इस मेज़ को बनाया। इस मेज़ का उपयोगिता–मूल्य इसमें निहित है। इसको बनाने में जो श्रम लगा, उसके आधार पर इसका **विनिमय** किया जा सकता है। इसी तरह हर उत्पादित–वस्तु का **विनिमय** उसके लिए नियोजित श्रम के आधार पर किया जा सकता है। श्रम के आधार पर **विनिमय** करना न्यायिक होगा या पैसे के आधार पर – आप ही तय करो!
मानव की उपयोगिता की वस्तुएं हैं – आहार, आवास, अलंकार, दूर–श्रवण, दूर–दर्शन, और दूर–गमन संबन्धी। इन ६ के अलावा मानव की उपयोगिता की वस्तुएं आप पहचान नहीं पाओगे। इसके अलावा जो वस्तुएं हैं – जैसे युद्ध सामग्री – वे मानव के लिए "उपयोगी" नहीं हैं। अच्छी तरह से देख लेना आप इसको!
व्यापार और नौकरी में "जीने" का कोई स्थान ही नहीं है। व्यापार में आदमी के साथ कम देना, ज्यादा लेना का तौर–तरीका है। इसमें "जीना" कहाँ हुआ? नौकरी में भी वैसा ही है। जीने के बारे में सोचा जाए, या जीने के

नकली–साधन (पैसा) के बारे में सोचा जाए? यह सोचने का एक मुद्दा है। जीने में तृप्ति है। जीने के लिए नकली साधन (पैसा) को लेकर सारा समय लगा देना – कहाँ तक न्याय है? भौतिक वस्तुएं जीने के लिए असली साधन हैं। भौतिक–वस्तुएं प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम–नियोजन द्वारा मानव उत्पादित करता है। अभी विश्व के १२% से कम जनसँख्या उत्पादन–कार्य में लगे हैं। यदि हर व्यक्ति अपने श्रम को उत्पादन करने के लिए नियोजित करने का मन बना ले तो वस्तु कितना होगा – आप सोच लो! समाधान–सम्पन्नता पूर्वक बनी आर्थिक–व्यवस्था में वस्तु से समृद्ध होंगे, न कि पैसे से।

समाधान–सम्पन्नता पूर्वक ही परिवार में समृद्धि के साथ जीने का तौर–तरीका आता है। समाधान–सम्पन्नता से पहले आदमी की तरह जीना तो बनेगा नहीं। मध्यस्थ–दर्शन का प्रस्ताव समाधान–संपन्न होने के लिए है।

सुविधा–संग्रह के चक्कर से मुक्त हुआ जाए और अच्छे से जिया जाए। इसके लिए पुनर्विचार ज़रूरी है।

–श्रद्धेय श्री नागराज शर्मा के साथ संवाद पर आधारित (अप्रैल २००८, अमरकंटक)

http://madhyasth-darshan.blogspot.com/2009/03/

(अध्याय:1.2, पृष्ठ नंबर: 55–57)

- **उत्पादन और विनिमय**

मानव–चेतना से संपन्न होने पर व्यवस्था का जो स्वरूप निकलता है उसे "मानवीय व्यवस्था" कहा।

मानवीय व्यवस्था में:

(1) हर परिवार समाधान–समृद्धि को प्रमाणित करने के क्रम में एक उत्पादक–इकाई है।

(2) उत्पादक अपनी "आवश्यकता" के अनुसार उत्पादन करता है – चाहे खेत में, चाहे कर्म–शाला में। मानवीयता संपन्न होने पर आवश्यकताएं निश्चित हो जाती हैं। मानवीयता संपन्न परिवार की निश्चित आवश्यकताएं होती हैं – शरीर पोषण, संरक्षण, और समाज–गति में भागीदारी करने के लिए।

(3) उत्पादक अपनी उत्पादित वस्तु का मूल्यांकन स्वयं करता है।

अभी की भ्रमित स्थिति में: –

(1) उत्पादक व्यापारिक संस्थानों में एक कर्मचारी के रूप में रहता है।

(2) बाज़ार आवश्यकता (कितना उत्पादन करना है) का निर्धारण करता है। इससे उत्पादक की उत्पादन करने की स्वतंत्रता नहीं है।

(3) उत्पादक अपनी उत्पादित वस्तु का मूल्यांकन कर ही नहीं पाता। परिस्थिति के अनुसार व्यापारी या बाज़ार उत्पादित वस्तु की कीमत तय कर देता है। इससे होने वाली असंतुष्टियाँ कभी–कभी घातक भी सिद्ध हो जाती हैं।

अमानवीय स्थिति में इस तरह उत्पादक उत्पादन करने और मूल्यांकन करने दोनों में परतंत्र है।

अमानवीय स्थिति में पैसे लगाने वाला अलग व्यक्ति होता है, कार्य करने वाला दूसरा व्यक्ति रहता है। कार्य करने में – मैनेजमेंट वाला अलग, और उत्पादन कार्य करने वाला कर्म–चारी के रूप में अलग। मैनेजमेंट के भी कई स्तर बना दिए। उत्पादित वस्तु की गुणवत्ता का निर्धारण भी स्वयं–स्फूर्त नहीं है। बाज़ार ही उत्पादों की गुणवत्ता को तय करता है – पैसे के आधार पर। मार्केट–शेयर को पैसे के आधार पर तोला जाता है। मार्केट–शेयर के आधार पर व्यापारी की अर्हता को पहचाना जाता है। ग्राहकों से जिन उत्पादों की मांग रहती है – वे भी सारे रूचि मूलक ही होते हैं। "ठीक लगने" के आधार पर खरीद होती है।

मानवीय व्यवस्था में:

(1) मूल्यांकन और **विनिमय** सामान्याकान्क्षा और महत्त्वाकांक्षा संबन्धी वस्तुओं का होता है।

(2) श्रम मूल्य के आधार पर वस्तु–मूल्य का निर्धारण होता है। वस्तु में उपयोगिता और कला मूल्य के आधार पर उसके श्रम–मूल्य का निर्धारण होता है।

(3) श्रम मूल्य के आधार पर दो उत्पादक परिवारों में वस्तुओं का लाभ–हानि मुक्त **विनिमय** होता है।

बिना प्रतीक मुद्रा के वस्तुओं के सीधे **विनिमय** की बात पहले रही थी लेकिन उसमें श्रम–मूल्य के आधार पर वस्तु–मूल्य को पहचानने की बात नहीं थी। इसलिए वह वस्तु–**विनिमय** भी व्यापारिक सिद्ध हो गया। लाभ विधि से यह असफल हो गया।

श्रम मूल्य विधि से मूल्यांकन मानव–चेतना पूर्वक ही होगा। जीव–चेतना विधि से नहीं।

जीव–चेतना में उत्पादन और **विनिमय** के नाम पर केवल शोषण के contracts होते हैं।

अनुभव मूलक विधि से ही मानवीय व्यवस्था स्पष्ट होती है। शरीर मूलक विधि से लाभ मूलक व्यापार ही होता है।

लाभ–मूलक व्यापार में जो ज्यादा चतुर हैं, वे ज्यादा व्यापार कर पाते हैं। जो कम चतुर हैं, वे कम व्यापार कर पाते हैं।

सूत्र रूप में – परिवार की आवश्यकता के अनुसार उत्पादन, श्रम–मूल्य के आधार पर **विनिमय**। इस सूत्र की व्याख्या परिवार–समूह के बीच में, फ़िर ग्राम के स्तर पर, फ़िर मंडल के स्तर पर, फ़िर राज्य के स्तर पर, और अंततोगत्वा विश्व–स्तर पर।

– श्रद्धेय श्री नागराज शर्मा के साथ संवाद पर आधारित (अगस्त २००६, अमरकंटक)

(अध्याय:2.3, पृष्ठ नंबर: 206–208)

- "भौतिक वस्तुओं का आबंटन किया जा सकता है। उनका भाग–विभाग किया जा सकता है। उनका **विनिमय** किया जा सकता है। लेकिन ज्ञान का आवंटन नहीं किया जा सकता। ज्ञान का भाग विभाग नहीं होता। कितने भी व्यक्ति ज्ञान का बोध करें, ज्ञान में अनुभव करें, ज्ञान को प्रमाणित करें। ज्ञान न कम होता है ना ज्यादा होता है। इसलिए ज्ञान का व्यापार नहीं होता। ज्ञान का दूसरे को बोध ही कराया जा सकता है। किसी व्यक्ति से यदि हम को बोध हुआ तो उसके प्रति हमारा कृतज्ञ रहना ही बनता है। हमारी कृतज्ञता ही उसका प्रतिफल है। उससे ज्यादा हम कुछ दे भी नहीं सकते।" **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 247)**

10 सोपानीय व्यवस्था के अंतर्गत विनिमय व्यवस्था

व्यवहारात्मक जनवाद (संस्करण: 2009, मुद्रण: 2017)

- **(तीसरा सोपान)** इस शोध के आधार पर मानवीय शिक्षा– संस्कार में पारंगत जैसे एक गॉव में प्राथमिक शिक्षा का आवश्यकता तो रहता ही है उसमें पारंगत रहेंगे। न्याय–सुरक्षा कार्य में पारंगत रहेंगे। उत्पादन–कार्य में पारंगत रहेंगे। **विनिमय** कार्य में पारंगत रहेंगे। स्वास्थ्य संयम कार्य में भी पारंगत रहेंगे। प्राथमिक स्वास्थ्य विधा में सभी पारंगत रहेंगे। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 113)**

  व्यवस्था की चौथी कड़ी हर परिवार में उत्पादन का एक कोष रहेगा। परिवार के उपयोग से अधिक जितने भी उत्पादन रहेंगे उनका **विनिमय** अड़ोंस–पड़ोंस में अर्थात ग्राम–समूह और ग्रामो में कर लेगी। इससे सामाग्री लाने और ले जाने की प्रक्रिया में काफी बचत हो जायेगी। जिससे ईंधन से लेकर श्रम तक, श्रम से लेकर यंत्रो तक बचत का प्रावधान है। इसे अच्छी तरह से समझदार परिवार का हर सदस्य समझ सकता है। परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन जितना भी रहेगा, वे सभी उत्पादनो को एक सम्मिलित कोष में एकत्रित किया जायेगा। यह कोष मूलतः वस्तुओं का ही कोष है। इसके साथ श्रम मूल्य का मूल्याँकन रहेगा। उसी के बराबर में हर गांव में कोषालयो के खाते में श्रम मूल्य के साथ प्रतीक मुद्रा का संख्या भी लिखकर रखी जायेगी। उसी के साथ हर परिवार को उसी ग्राम कोष से क्या–क्या वस्तुएँ समीचीन दिनो के लिए आवश्यक है वह सूची रहेगी। उसी कोष से अपेक्षित वस्तुओ को प्राप्त किया जायेगा। ग्राम **विनिमय** कोष से वस्तुएँ किसी दूसरे ग्राम कोष में जायेगी और दूसरी वाँछित वस्तुओं को लायेगी। तभी तक समीपस्थ बाजार में विक्रय कर आवश्यक वस्तुओ को क्रमवार लाने की व्यवस्था रहेगी। लाभ हानि मुक्त विधि से वस्तुओ को ग्राम के सभी व्यक्तियों को उपलब्ध कराने की व्यवस्था रहेगी। इसी **विनिमय** कोष के कार्यक्रम में सभी प्रकार की आहार संबंधी वस्तुएँ यथा सब्जी, दूध, अनाज वगैरह तो रहेगी ही; कलात्मक जितनी भी उपज है, कृषि औजार, भारवाहन का औजार, गृहनिर्माण में उपयोगी वस्तुएँ, अलंकार संबंधी सभी उपज को कोषालय में एकत्रित किया जायेगा। कोषालय से बाजार में दूसरा स्वराज्य कोषालय में ले जाने की, ले आने की व्यवस्था ग्राम स्वराज्य सभा में रहेगी। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 116)**

- **(चौथा सोपान)** तीसरी कड़ी में उत्पादन कार्य एक महत्वपूर्ण भूमिका है ही। परिवार समूह सभा में प्रौद्योगिकी के पक्ष में जितनी भी जानकारी चाहिये उन सब में पारंगत रहना आवश्यक है। ये दसों सदस्य ग्रामोद्योग, लघु उद्योग विधा में पारंगत रहेंगे। जैसे वन खनिज की संतुलित व्यवस्था है। वैसे ग्राम उद्योग विधा में उद्योगों को स्थापित करेगें। जैसे प$ढाई की सामग्री, अलंकार सम्बंधी सामग्री, गृह निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री, दूरगमन दूर दर्शन, दूरश्रवण सम्बंधी उपकरणों को निर्मित करने की व्यवस्था बनी रहेगी। ऐसा उत्पादन उन दस गाँव की आवश्यकता के अर्थ में रहेगा। इस उत्पादन कार्य में श्रम निवेश परस्पर दस गाँव के बीच ही बना रहेगा। इसका आदान प्रदान के लिए **विनिमय** कोष बनाना स्वाभाविक है। इस **विनिमय** कोष के साथ आदान–प्रदान का सम्बंध

बनाए रखेगी। स्वास्थ्य संयम पाँचवी कड़ी है इस कड़ी में ग्राम सभा में जिसका स्वास्थ सुधार नहीं हो सका ऐसे लोगो के साथ लिए स्वास्थ्य–संयम केन्द्र रहेगा। प्राद्योगिकी कार्य से जितनी भी समाज गति के लिए साधन उपलब्ध हुए रहते है इसे हम समृद्ध कर रहे है ऐसे समृद्ध कोष से स्वास्थ्य केन्द्र को सम्पन्न बनाए रखने का केन्द्र कार्य करेगा। इस प्रकार स्वास्थ्य केन्द्र के लिए साधन भरपूर रहेगा। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:118–119)**

- **(पाँचवा सोपान)** बुनियादी तौर पर हर परिवार समझदार होने के आधार पर ही क्षेत्र परिवार सभा का वैभव भी प्रमाणित होने की संभावना बनी रहती है। हर मानव का उद्देश्य साम्य होने के आधार पर व्यवस्था सूत्र व्याख्या अपने आप स्पष्ट होती है। इसकी भी प्रथम कड़ी शिक्षा–संस्कार कार्यक्रम है। इन शिक्षा संस्कार कार्यो में यथावत एक विद्यालय रहेगा। इसके पहले की सीढ़ी में जो प्रौद्योगिकी बनी रहती है उसके योगदान पर उत्तर माध्यमिक शालाएँ और स्नातक शालाएँ क्रम विधि से कार्य करेगी। क्रम विधि का तात्पर्य हर इन्सान चाहे नारी हो, नर हो समझदार होने के लिए कार्य करेगा। समझदारी का किसी उँचाई इस क्षेत्र परिवार सभा के अन्तर्गत प्रमाणित होना स्वाभाविक है। ऐसे प्रमाण के लिए तमाम व्यक्ति प्रशिक्षित रहेंगे। इसी कारणवश स्नातक पूर्व और स्नातक विद्यालय किसी क्षेत्र सभा के अन्तर्गत संचालित रहेंगे। जिसमें मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद की रोशनी में ज्ञान, विज्ञान, विवेक सम्पन्न विधि से हर विद्यार्थी की मानसिकता में स्थापित करने का कार्य होगा। इसी क्रम में हर सभा के अधिकार में कुछ मझोले, बड़े प्रौद्योगिकी समायी रहेगी। इसके लिए बुनियादी रूप में आवश्यकीय सभी साधन क्षेत्र सभाओं के प्रौद्योगिकी सम्पदा से निर्मित किये रहेंगे। इस विधि से हर क्षेत्र परिवार सभा में मझोले और छोटे उद्योगो का उत्पादन प्रचुर होने की व्यवस्था रहेगी। प्रधानतः ये उद्योग आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन सम्बंधी यंत्रो को बनाने के कार्य में प्रवृत्त होगा। **इसी सोपान में एक विनिमय कोष रहेगा जिसका सम्बंध इसके पहले के चारो सोपानों के विनिमय कोष से रहेगा।** **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:119–120)**
- **(छठवाँ सोपान)** चौथी कड़ी में **विनिमय** कोष कार्य सम्पादित होगा। मंडल परिवार सभा कोष से ग्राम परिवार सभा कोष तक का सम्बंध यथावत बना रहेगा। इसी प्रकार दूर संचार विधि से सभी कड़ियो का सम्बंध एक दूसरे से जुड़ा रहेगा। इसलिए सभी सोपान का अनुभव सुलभ रहता है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 121)**
- **(सातवाँ सोपान)** चौथी कड़ी **विनिमय** कार्य के बाबत है। जो उत्पादन हुआ रहता है उसे **विनिमय** कोष में संग्रह किये रहेंगे। इसके बावजूद ग्राम परिवार सभा से सभी सोपानों में संचालित **विनिमय** कोष अनुबंधित रहेंगे। यह अनुबंधन अपने आप में सदा–सदा के लिए अर्थात पीढ़ी से पीढ़ी के लिए प्रशस्त और अनुकूल होने के रूप में उत्पादन कार्य को साज सजावट गुणवत्ता से परिपूर्ण विपुल मात्रा में उपलब्ध कराने की व्यवस्था किये रहेंगे। सभी सोपानों के श्रम मूल्य के आधार पर, उपयोगिता के आधार पर वस्तु मूल्य, वस्तु मूल्य के आधार पर श्रम मूल्य का निर्धारण, मूल्यांकन, पहचान होता ही रहेगा इस विधि से श्रम मूल्य के आधार पर आदान प्रदान सुगम होना पाया जाता है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:123)**

- **आठवीं सोपान** में मुख्य राज्य सभा होगी। जिसके लिए मंडल समूह सभा से एक एक निर्वाचित सदस्य रहेंगे। जिनके आधार पर समूचे कार्यकलाप सम्पन्न होगे। जिसमें पहली कड़ी शिक्षा–संस्कार कार्य की गतिविधियों में सर्वोत्कृष्ट समाज गति, सर्वोत्कृष्ट उत्पादन कार्य, सर्वोत्कृष्ट न्याय–सुरक्षा कार्य, सर्वोत्कृष्ट उत्पादन कार्य, सर्वोत्कृष्ट **विनिमय कार्य गति** और सर्वोत्कृष्ट स्वास्थ्य–संयम का शोध संयुक्त रूप में होता रहेगा। ये सभी सोपानीय परिवार सभाओं के लिए पे्ररणा के रूप में प्रस्तुत होती रहेगी। इस विधि से अपनी गरिमा सम्पन्न शिक्षण कार्य, कर्माभ्यास पूर्ण कार्यक्रम को सम्पन्न करता रहेगा। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 123–124)**

  चौथी कड़ी **विनिमय** कोष होगी इसका आदान–प्रदान **विनिमय** कार्य को मुख्य राज्य परिवार सभा सम्पन्न करेगी। इसमें सभी आदान–प्रदान व्यवस्था **विनिमय** प्रक्रिया में ही समाहित रहेगी। इसमें सन्तुष्टि बिन्दु यही है कि सर्वाधिक उत्पादन हो जो आवश्यकता से अधिक हो, आवश्यकता का आंकलन सभी सोपानीय व्यवस्था में संबंध अनुबंध से पहचानने की व्यवस्था रहेगी। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 124)**
- **(नौवाँ सोपान)** इस समिति की चौथी कड़ी **विनिमय** कोष रहेगी। **विनिमय** कोष के अधिकार सम्पूर्ण यंत्र उपकरणों का संग्रह उनका विधिवत **विनिमय** करने का अधिकार रहेगा। इसी कोष के चलते और प्रगतिशीलता को पहचानने की अनुसंधान, शोध अवश्य सम्पादित होती रहेगी। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 125)**
- **(दसवीं सोपान)** चौथी कड़ी **विनिमय** कोष है विश्व राज्य परिवार सभा में **विनिमय** के लिए कोई खास वस्तुएँ नहीं रह जाते है। आवश्यकता महसूस होने की स्थिति में विश्व मानव के लिए उपयोगी वस्तु को प्रस्तुत करेगा। इसकी सम्भावना दूरगमन, दूरदर्शन, दूरश्रवण सम्बन्धी वस्तुओ में परिष्कृति और गति हो सकती है। विश्व मानव परिवार सभा की गरिमा के अनुसार ज्यादा से ज्यादा ऊर्जा संतुलन सम्बन्धी औजारो के ऊपर ध्यान देने की आवश्यकता है। विद्युत ऊर्जा, विकरणीय ऊर्जा यह दो प्रकार की ऊर्जाएँ अति महत्वपूर्ण है इनमें से विकरणीय ऊर्जा पर संतुलन का नजरिया विश्व मानव परिवार सभा में सुस्पष्ट रहने की आवश्यकता है। इसको कारगर बनाए रखना अर्थात सर्वसुलभ करने योग्य ज्ञान विवेक विज्ञान कर्माभ्यास सम्पन्नता को बनाए रखना है किसी भी सोपानीय आवश्यकता पड़ने पर शिक्षा शिक्षण की कर्माभ्यास की व्यवस्था को बनाए रखेंगे। यही **विनिमय** का प्रधान स्वरूप रहेगा। यह विश्व मानव परिवार सभा का महिमा मंडित स्थितियो के लिए अनुकूल है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 128)**